विद्या भारती प्रदीपिका

आश्विन से मार्गशीर्ष, विक्रमी संवत् 2082, युगाब्द 5127

अक्टूबर से दिसम्बर 2025 वर्ष 46 अंक 1 मूल्य : ₹50/-

मंगलमय एवं कल्याणकारी कार्य, मैं वन्देमातरम् हूँ, ईशावास्योपनिषद्, नित्यानंद प्रभु,
राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ : सौ वर्षों की सेवायात्रा, भारत की समुद्री सीमा

Joyful Learning : Panchapadi Classroom Process, A Fake Gajanavi Story in History,
Impact of Digital Payement : Small Businesses in the Indian Market, Rescue the rescuer's

विद्या भारती कार्यकारिणी समिति की बैठक, आबूपर्वत, राजस्थान : उद्घाटन सत्र में मा. डॉ. कृष्णगोपाल जी द्वारा उद्बोधन

विद्या भारती अखिल भारतीय शिक्षा संस्थान की अखिल भारतीय कार्यकारिणी बैठक, आबू पर्वत में मा. गोविन्द चन्द्र महंत जी का मार्गदर्शन

विद्या भारती अ. भा. शिक्षा संस्थान की अखिल भारतीय विज्ञान मेला २०२५, मेरठ में विद्या भारती उत्तर क्षेत्र, सर्वश्रेष्ठ क्षेत्र से पुरस्कृत

विद्या भारती प्रदीपिका

(विद्या भारती अखिल भारतीय शिक्षा संस्थान की त्रैमासिक पत्रिका)

अक्टूबर से दिसम्बर 2025 | आश्विन से मार्गशीर्ष, विक्रमी संवत् 2082 | मूल्य - रुपये 50/-

मार्गदर्शक
डॉ. गोविन्द प्रसाद शर्मा
श्री डी. रामकृष्ण राव
श्री दिलीप बेतकेकर
डॉ. रमा मिश्रा
डॉ. रवीन्द्र कान्हेरे

सम्पादक
डॉ. ललित बिहारी गोस्वामी

सम्पादक मण्डल
श्री राजेन्द्र सिंह बघेल
डॉ. अरुण मिश्र
श्री वासुदेव प्रजापति
डॉ. पवन शर्मा

संपादन सहायक
कौशलेश कुमार उपाध्याय

आवरण सज्जा
मारिय्याप्पा मार्टिन

प्रकाशन कार्यालय
प्रज्ञा सदन, गो. ला. त्रे. सरस्वती बाल मंदिर परिसर, महात्मा गांधी मार्ग, नेहरू नगर, नई दिल्ली -110065

फोन नं. 011-29840126,29840013
ईमेल-vbpradeepika@gmail.com

सदस्यता शुल्क
वार्षिक शुल्क- 200/-रु.
दस वर्षीय शुल्क- 1500/-रु. शुल्क राशि 'विद्या भारती अखिल भारतीय शिक्षा संस्थान' के बचत खाता क्र. 1130307980 सेन्ट्रल बैंक ऑफ इण्डिया, IFSC-CBIN0283940 ब्रांच नेहरू नगर, नई दिल्ली में जमा कर, पत्र द्वारा कार्यालय को सूचित करें।

मुद्रण- जेनिसिस प्रिंटर, सी 74, ओखला इण्डस्ट्रीयल एरिया, फेस-1, नई दिल्ली-110020

अनुक्रमणिका

सम्पादकीय	डॉ० ललित बिहारी गोस्वामी	4
मंगलमय एवं कल्याणकारी कार्य	माननीय डॉ० मोहनराव भागवत जी	7
मैं वन्देमातरम् हूँ	श्रद्धेय रंगाहरि जी	10
भारतीय ज्ञान का स्रोत-ईशावास्योपनिषद्	श्री विजय शर्मा	12
अहम् पितरं सुवे, अहं सुवे पितरम्	डॉ० मधुसूदन उपाध्याय	17
नित्यानन्द प्रभु	डॉ० अर्चना शर्मा	19
राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ : सौ वर्षों की सेवायात्रा	प्रो० चन्द्रचारु त्रिपाठी	23
भारत की समुद्री सीमा	डॉ० रवीन्द्र कान्हेरे	27
शिक्षा और राष्ट्रीय सुरक्षा	श्री जितेन्द्र कुमार पाठक	29
बच्चों के मानसिक उत्पीड़न : समस्या एवं निराकरण	डॉ० सुयश शेण्डेय	32
सिंधु जल समझौते की तथ्यात्मक जानकारी	श्री चमन शर्मा (वरिष्ठ अधिवक्ता)	35
शेषाद्रि जी की सादगी और महानता	श्री आलोक गोस्वामी (वरिष्ठ पत्रकार)	38
Vidya Bharathi Progress Report : During 5th Year OF Nep 2020	Shri Dusi Ramakrishna Rao	41
Joyful Learning Through Panchapadi at Classroom Process	Shri A. Laxaman Rao	43
A Face Gajanavi Story in History	Shri Subhash Chand Vats	46
Impact of Digital Payments : Small Businesses in Indian Market	Prof. Parmendra Kumar Dasora	49
Rescue the Rescuers	Dr. Bhuvanchand Pandey	53
Human Generation	Dr. Rajendra Kumar Avasthi	58
गतिविधियाँ		60

मुखपृष्ठ - छठपूजा चित्र : श्रीमती पूजा झा, मधुबनी शैली

प्रदीपिका में प्रकाशित विचार रचनाकारों के हैं, पत्रिका की सहमति आवश्यक नहीं है।

सम्पादकीय

सेवा परमो धर्मः

'सेवा परमो धर्मः' सेवा परम धर्म है जैसे उद्गार जिस सांस्कृतिक अधिष्ठान के आदर्श वाक्य हों, उसका मानवता के प्रति निश्छल और निश्चल समर्पण, मानवीय भाव और समस्त जड़-चेतन जगत् के प्रति कोमल और रागात्मक भावनाओं की ऊँचाई और गहनता भी निश्चय ही अप्रतिम होगी। यह साधना सापेक्ष है और कोई विरला ही इस पथ पर पाँव रखने का साहस कर सकता है। स्वयं अत्यन्त कष्ट सहकर भी जो दूसरों के लिए जी सके, वही सेवामार्ग पर चल सकता है। सेवाधर्म का आग्रही वही हो सकता है जो अपने को, अपने अहं को, ममत्व को सर्वथा निःशेष कर, अपने स्वार्थों का प्रसन्नतापूर्वक परित्याग कर, मन को हर तरह से संयमित करते हुए उस पर विजय प्राप्त कर जीवन को आगे ले जा सकता हो। 'क्रोधः सुदुर्जयः शत्रुः' उस सुदुर्जय क्रोध को जीत 'सोकधाम तजि काम' शोक के उस काम को तजकर मद, मोह, मात्सर्य आदि से मुक्तहृदय हो निर्मल चेतना वाला व्यक्ति ही इस सेवा-सरणि पर जा सकता है। राम-वन-गमन प्रसंग में जब श्री लक्ष्मण जी माता सुमित्रा से श्रीराम एवं सीता जी के साथ वन जाने की आज्ञा माँगते हैं तब माता सुमित्रा जी यही तो कहती हैं -

'रागु रोष इरिषा मद मोहू। जनि सपनेहूँ इनके बस होहू।।

सकल प्रकार बिकार बिहाई। मन क्रम बचन करहु सेवकाई ।। (मानस, अयोध्याकांड ७४/३)

सेवा के लिए विधि, निषेध का आख्यान अत्यंत संक्षेप में माँ सुमित्रा पुत्र लक्ष्मण के लिए कर देती है। इनका पालन करने वाला ही सेवापथ का पथिक हो सकता है। सेवा सकाम हो तो भी उक्त गुणों को धारण तो करना ही पड़ेगा। कविकुल गुरु कालिदास के सुप्रसिद्ध रघुवंश महाकाव्य का प्रसंग है, पत्नी सुदक्षिणा सहित अयोध्या के राजा महाराज दिलीप संतानेच्छा से गुरु वशिष्ठ के आश्रम में जाते हैं। राजदम्पती द्वारा कामधेनु की पुत्री नंदिनी गौ की सेवा-साधना का अत्यन्त मनोहारी वर्णन महाकवि ने किया है। कामधेनु के शाप के कारण संततिविहीन महारानी सुदक्षिणा एवं महाराज दिलीप को गुरु वशिष्ठ उनके मनोरथ की पूर्ति हेतु कामधेनु की प्रतिनिधि रूप कामधेनु की पुत्री "पुण्यदर्शना" नंदिनी गौ की सेवा की आज्ञा देते हैं -

'आराधय सपत्नीकः प्रीता कामदुघा हि सा' (रघुवंश प्रथम सर्ग श्लोक ८१)

और रानी सुदक्षिणा प्रातःकाल नंदिनी एवं महाराज दिलीप को वन जाने के लिए सादर विदा और सायंकाल उसके आदरार्थ स्वागत के लिए उत्सुक खड़ी रहती हैं। मार्ग में सुदक्षिणा और दिलीप के मध्य चलती नंदिनी की शोभा अद्वितीय है। वे दिन और रात्रि के मध्य संध्याकाल की तरह सुशोभित होते हैं- 'दिनक्षपामध्यगतेव सन्ध्या' प्रसंगवश यह लिखने में रत्तीभर भी संकोच नहीं कि महाकवि कालिदास 'उपमा' के तो राजा हैं। वन में कंद-मूल आदि का सेवन करते हुए नंदिनी को प्रसन्न करने के लिए सेवा कैसे करनी है, इसका भी आदेश गुरु वशिष्ठ ने दिया -

'प्रस्थितायां प्रतिष्ठेथाः स्थितायां स्थितिमाचरेः। निषण्णायां निषीदास्यां पीताम्भसि पिबेरपः।।' (वही, प्रथमसर्ग, श्लोक ८९)

हे राजन् ! नन्दिनी के चलने पर तुम इसके पीछे-पीछे चलो, ठहरने पर ठहरो, बैठने पर बैठो और उसके पानी पीने पर पानी पीयो। साधक दिलीप गुर्वाज्ञा का शब्दशः पालन भी करते हैं -

स्थितः स्थितामुच्चलितः प्रयातां निषेदुषीमासनबन्धधीरः।
जलाभिलाषी जलमाददानां छायेव तां भूपतिरन्वगच्छत्।। (वही द्वितीय सर्ग श्लोक ६)

राजा दिलीप नन्दिनी के ठहरने पर ठहरते थे, चलने पर चलते थे, बैठने पर बैठते थे, जल पीने पर जल पीते थे। इस प्रकार उन्होंने छाया की भाँति नन्दिनी गौ का अनुसरण किया। यही नहीं जब नन्दिनी ने 'माया सिंह' को उत्पन्न कर दिलीप की परीक्षा ली तो उसमें भी वे सफल हुए - 'माया मयोद्भाव्य परीक्षितोऽसि' (वही द्वितीय सर्ग श्लोक ६२) उन्होंने 'माया सिंह' के द्वारा अनेक प्रकार से समझाए जाने के बाद भी नन्दिनी गौ को छोड़ देने के लिए स्वयं को सिंह के सम्मुख प्रस्तुत कर दिया था

'स त्वं मदीयेन शरीरवृत्तिं देहेन निर्वर्तयितुं प्रसीद।
दिनावसानोत्सुक बालवत्सा विसृज्यतां धेनुरियं महर्षेः।। (वही द्वितीय सर्ग श्लोक ४५)

नंदिनी ने भी राजा दिलीप को संतति होने का वरदान दिया। "संतानकामाय तथेति कामं राज्ञे"..। (रघुवंश सर्ग २ श्लोक ६५)

ध्यातव्य है कि सेवा सकाम होने पर भी सत्यनिष्ठा और सतत साधना की अपेक्षा करती है और तभी फलीभूत भी होती है। सेवा रघुवंश की कुल-परम्परा में अत्यन्त विशिष्ट स्थान प्राप्त करती है। रघुकुलमणि श्रीराम और उनका पूरा परिवार ही इस दृष्टि से अप्रतिम उदाहरण है। वनवास के लिए जाते समय राघव श्री सीता जी से कहते हैं,

'आयसु मोर सास सेवकाई। सब विधि भामिनी भवन भलाई।।' (मानस अयोध्या ६०/३)

लेकिन सती शिरोमणि श्रीसीता जी श्रीराम के साथ वन जाने के लिए तत्पर हो अत्यन्त भावाकुल हो कहती हैं -

सबहिं भाँति पिय सेवा करिहौं। मारग जनित सकल श्रम हरिहौं।।

इसी प्रकार श्रीराम जी श्रीलक्ष्मण जी से कहते हैं 'अस जिय जानि सुनहु सिख भाई। करहु मातु पितु पद सेवकाई।।' (वही ३०/१) तब श्री लक्ष्मण जी भी श्रीराम जी का ही अनुगमन करना चाहते हैं। माता सुमित्रा भी लक्ष्मण जी को "मन क्रम बचन करहु सेवकाई" का आदेश देती है। मैत्री होने पर सुग्रीव भी श्रीराम को भरोसा देते हैं-

'सुख संपति परिवार बड़ाई। सब परिहरि करिहउँ सेवकाई।।' (किष्किन्धा ६/६)

अपने सुख, सम्पत्ति, परिवार, यश आदि की कामना सेवा में बाधक है। इन्हें छोड़कर ही सेवा के शुचिव्रत का पालन हो सकता है। इसीलिए संभवतः सेवक के धर्म को अत्यन्त कठोर कहा गया है। श्री भरत जी श्रीराम जी से मिलने के लिए जब चित्रकूट की ओर प्रयाण करते हैं तो सभी सुखों को त्याग कर पैदल ही मार्ग तय करते हैं। श्रीराम, सीता, लक्ष्मण भी पैदल ही चलकर गए थे तो उनका सेवक भी वैसे ही कष्ट सहन करेगा। वे कहते हैं-'सबतें सेवक धरम कठोरा' (वही अयोध्याकाण्ड २०२/७)

'आगम निगम प्रसिद्ध पुराना। सेवा धरमु कठिन जगु जाना।।' (वही २६२/७)

और श्रीराम भी कठोर धर्म का निर्वाह करने वाले पर रीझ उठते हैं-'समदरसी मोहि सब कह कोऊ। सेवक प्रिय अनन्य गति सोऊ।।' (किष्किंधा २/८) श्री कागभुशुण्डि जी भी गरुड़ जी को उपदेश देते हुए दोहराते हैं-'सेवक पर ममता अति भूरी' (उत्तरकाण्ड ७३/७) 'नारद प्रसंग' में श्री नारद जी भी श्रीराम जी की प्रशंसा करते हुए कहते हैं-

'कहहु कवन प्रभु कै अस रीती। सेवक पर ममता अरु प्रीती।' (अरण्य ४४/२)

अपने अनन्य सेवक, सेवाधर्म के अन्यतम उदाहरण, सेवाधर्म के आचार्य श्री हनुमान् जी पर तो श्रीराम का अप्रतिम प्रेम है। श्री राघवेन्द्र जी उन्हें लक्ष्मण से दुगना छोह करते हैं, तो भाई भरत के समान उन्हें बताते हैं। लंका से लौटने पर वे हनुमान् जी को हृदय से लगाते हैं, हाथ पकड़ अत्यन्त प्रीतिवश अपने निकट बैठा लेते हैं -

"सुनु कपि तोहि समान उपकारी । नहिं कोउ सुर नर मुनि तनुधारी।।
प्रति उपकार करौं का तोरा। सनमुख होई न सकत मन मोरा।।
सुनु सुत तोहि उरिन मैं नाही। देखऊँ करि बिचार मन माहीं।।

इतना ही नहीं प्रभु श्रीराम अपने अनन्य सेवक की कथा सुनते हैं। क्रम उलट जाता है ऐसे भावुक क्षणों में। प्रभु की कथा सेवक सुनता है, यहाँ सेवक की कथा प्रभु सुन रहे हैं। वक्ता हैं श्री जाम्बवान् जी -

नाथ पवन सुत कीन्हि जो करनी। सहसहुँ मुख न जाई सो बरनी।।
पवन तनय के चरित सुहाए । जामवंत रघुपतिहि सुनाए।

सुनत कृपानिधि मन अति भाए । पुनि हनुमान हरषि हियँ लाए।। (सुन्दरकाण्ड)

ऐसे श्रीराम ऋषियों के सेवक भी हैं। महर्षि अत्रि से वे प्रार्थना करते हैं-

'संतत मो पर कृपा करेहू। सेवक जानि तजहु नहिं नेहू।। (अरण्य २/३)

तुलसी का भक्तिसिद्धान्त, भक्तिपद्धति का आदर्श, मर्म ही सेवक-सेव्य भाव है -

सेवक सेव्य भाव बिनु, भव न तरिअ उरगारि। सेवहु रामपद पंकज, अस सिद्धान्त बिचारि।। (उत्तर ११९ क)

युधिष्ठिर के राजसूर्य यज्ञ में अग्रपूजा के अधिकारी श्रीकृष्ण अपने लिए स्वयं जूठी पत्तल उठाने की सेवा लेते हैं। सच तो यह है कि यह विनम्र भाव भारतीय भाव-परम्परा में रचा बसा है। सूर्य के उदय होने पर अंधकार जैसे विलीन हो जाता है, वैसे ही राग, मद, मोह अहंकार आदि को सेवा भाव विनष्ट कर देता है। सूर्योदय होने पर जैसे चहुँ ओर प्रकाश विस्तारित होता है वैसे ही सेवा भाव से व्यक्ति के गुणों का विकास होता है। व्यक्ति अपने अतिरिक्त दूसरे के महत्त्व को समझता है। सबके प्रति निष्कपट स्नेह, प्रीति से उसका हृदय भर उठता है, उसकी आँखों में वह सात्त्विक प्रेम झलकता है, आँखों से वह छलकता है। उसमें सभी सद्गुण प्रफुल्लित हो उठते हैं। तब उसका प्रीति पात्र, ईश्वर होता है, उसे कण-कण में व्याप्त जानकर सम्पूर्ण जगत् उसका अपना होता है। 'तत्सुख'-उसका, प्रिय पात्र का सुख, उसका अपना सुख हो जाता है। तब वह दीनबंधु होता है। श्री वल्लभभाई पटेल के शब्दों में 'गरीबों की सेवा ही ईश्वर की सेवा है में उसका विश्वास दृढ़ हो उठता है। गौतम बुद्ध का यह कथन "जिसे मेरी सेवा करनी हो वह पीड़ितों की सेवा करे" उसका जीवन-व्यवहार बन जाता है। प्रेमचन्द सेवा को मनुष्य का सहज स्वभाव मानते हैं-"सेवा मनुष्य की स्वाभाविक वृत्ति है।" तो स्वामी विवेकानन्द स्पष्ट घोषणा करते हैं "त्याग और सेवा ही भारत का जातीय आदर्श है। इसी भाव को पुनः जगाना चाहिए। बाकी आप ही ठीक हो जाएगा।" यही कारण है कि करोना काल में जब अमेरिका एवं पश्चिमी देश अपने नागरिकों के लिए तीसरे और चौथे चक्र के लिए 'वैक्सीन' जमा कर रख रहे थे तब भारत अनेक जरूरतमंद देशों को 'वैक्सीन' और अन्न आदि सेवार्थ दे रहा था।

यहाँ अपने अनुभवों का उल्लेख करना असंगत न होगा। थोड़ी पुरानी बात है, तब मैं अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद् का कार्यकर्ता था। राजस्थान बैठक से लौटते हुए 'ट्रेन' रिवाड़ी स्टेशन पर रुकी, भयंकर गर्मी, लगभग ११ बजे का समय, सूर्य का असह्य ताप। तब भी भीषण गर्मी की परवाह न करते हुए अनेक नवयुवक खिड़कियाँ खुलवाकर ठंडा जल यात्रियों को पिला रहे थे, उनकी पानी की बोतलें भर-भरकर दे रहे थे। दूसरी घटना भी सेवा का अप्रतिम उदाहरण है। ऊना, हिमाचल में एक संगोष्ठी में सम्मिलित होकर रात्रि 'ट्रेन' से दिल्ली लौट रहा था। आर.ए.सी. का टिकट था, भयंकर सर्दी के दिन। एकाएक मन में आया, आज तो मेरा जन्मदिन है लेकिन आज भगवान् का प्रसाद तो मिला ही नहीं। कुछ ही क्षणों बाद 'ट्रेन' आनन्दपुर साहिब स्टेशन पर पहुँची। रात्रि के लगभग ११ बजे थे, तभी ट्रेन में एक बाल सरदार जी चढ़े। उन्होंने सबको एक-एक गिलास दिया। उनके पीछे एक बुजुर्ग सरदार जी सबको चाय देते जा रहे थे। पूछने पर पता चला गुरुद्वारे का प्रसाद है। आँखों में आँसू आ गए। मेरे 'वाहेगुरु' ने मन की बात जानकर चाय के रूप में प्रसाद भेजा। लेकिन बाल सरदार जी एवं बुजुर्ग सरदार जी अत्यधिक सर्दी में भी नंगे पाँव ट्रेन में सबको चाय प्रसाद का वितरण कर विशुद्ध रूप से सेवा ही तो कर रहे थे। मेरी दृष्टि एक बार खिड़की के पार कोहरे के कारण बिजली के मद्धिम प्रकाश में एकान्त में साधनारत योगी के समान 'आनन्दपुर साहिब गुरुद्वारे' का दर्शन कर रही थी तो दूसरी नजर सेवा के लिए प्रसाद वितरण करने वाले उन बंधुओं का। भीषण गर्मी के सुबह के ११ बजे हों या भयंकर सर्दी के रात के ११ बजे, सेवा करने में भारतपुत्रों को कोई बाधा नहीं होती।

विद्या भारती गत लगभग ७५ वर्षों से त्याग और सेवा को अपना आदर्श, अपना लक्ष्य बनाकर कार्य कर रही है। हमारा मूल मंत्र ही है - "शिक्षार्थ आइए, सेवार्थ जाइए।" राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ और समविचारी संगठनों यथा सेवा भारती, वनवासी कल्याण आश्रम ने समाज सेवा, हर कठिन परिस्थिति में बिना किसी भेदभाव के समाज, राष्ट्र, भारत माता की सेवा के लिए सन्नद्ध, तत्पर रहने के दृश्य सर्वत्र दृष्टिगोचर होते हैं। इससे भी आगे बढ़कर सेवाधर्म को हम 'सेवा अस्माकं परमो धर्मः' के रूप में जानते, मानते हैं।

- डॉ. ललित बिहारी गोस्वामी

मंगलमय एवं कल्याणकारी कार्य

दिशाबोध

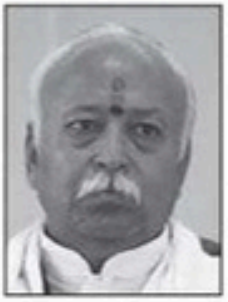

माननीय डॉ० मोहनराव भागवत
परमपूज्य सरसंघचालक,
राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ

शुभ कार्य के लिए आशीर्वाद तो रहता ही है। किसी व्यक्ति को आकर आशीर्वाद नहीं देना पड़ता है। मन में भावना अच्छी है और लोक कल्याण के लिए कार्य चलता है तो कोई वहाँ उस समय उपस्थित होकर आशीर्वाद दे, न दे, आशीर्वाद हमेशा रहता ही है। कुछ आशीर्वाद की भागी विद्या भारती हमेशा रही है क्योंकि विद्या भारती ने बड़ा ही कल्याणकारी मंगलकार्य हाथ में लिया है। विद्यालयों के द्वारा वह ऐसी एक युवा पीढ़ी तैयार करना चाहती है जो हिन्दुत्वनिष्ठ, राष्ट्रनिष्ठा से ओतप्रोत हो, अपनी वर्तमान कालीन समस्याओं का सामना करने में सफल होने के लिए सक्षम हो और अपने देश के अभावग्रस्त व साधनहीन लोग उनको शोषण व अन्याय से मुक्ति दिला कर उनका जीवन और अच्छा करने में सेवारत हों।

अभी तक मंगल संकल्प को धारण करके विद्या भारती के विद्यालय चलते हैं तो आशीर्वाद हमेशा बना रहता है। आशीर्वाद बना रहता है, इसका अर्थ यह नहीं कि कोई कठिनाई आती ही नहीं। आशीर्वाद देने वाला परीक्षा भी लेता है, आशीर्वाद के बदले में वह और कुछ नहीं माँगता। काम करने के लिए काम करने वाले की बुद्धि सतत ठीक रहे, जाग्रत रहे इसलिए अनेक परिस्थितियों में से उसको निकलना है। विद्या भारती के कार्यकर्ताओं को इन सब प्रक्रियाओं का परिचय है। विद्यालय पुराना था, भवन अब तक नहीं बना था तो जितनी भी सुविधाएँ उपलब्ध हैं उतने में ही अपना यह सेवा का व्रत निरन्तर जारी रखने का काम कार्यकर्ताओं ने किया। उसके आशीर्वाद स्वरूप एक मंगल प्रसंग है जिसे हम सब अनुभव कर रहे हैं कि विद्यालय के नए भवन निर्माण का शिलान्यास हो गया। सबको हर्ष है, उसमें सब सहभागी हैं, सबके मन में इस विद्यालय की प्रगति की सफलता का कामना है, मैं भी मंगलकामना करता हूँ।

ध्यान में रखने की बात है कि जैसा मैंने कहा कि कार्य निरन्तर चलता है, उसको परिस्थिति में से जाना पड़ता है। परिस्थिति कभी एक-सी नहीं रहती। फिर भी उसको दृढ़तापूर्वक निश्चित दिशा में सतत चलना पड़ता है। केवल विद्या भारती का विचार किया जाए तो आप लोग कहेंगे कि विद्या भारती चलेगी, इसका हमको भरोसा है। ऐसे ही अब तक चलाते आए हैं। लेकिन यह जो कहते हैं तब हमारे मन में आता है विद्या भारती नामक कोई अलग संस्थान है। मैं एक दर्शक हूँ, जैसे अभी मंच पर कार्यक्रमों की प्रस्तुति हुई। उसका आनन्द हमने लिया, सामने बैठकर, देख कर लिया, तालियाँ बजाईं, अच्छा लगा। आपको कुछ बातें बताईं, अच्छा लगा, लेकिन उस कार्य के लिए परिश्रम करने का काम जो कार्यक्रम की प्रस्तुति करने वाले थे, वे ही कर रहे थे। हमें उसके के लिए कोई परिश्रम नहीं करना पड़ा। परन्तु अभी निवेदक ने विद्या भारती का परिचय देते हुए जो कहा, उसका विचार हम सब लोगों को करना चाहिए। अभिभावक, आचार्य और भैया-बहन व पूर्व छात्र-छात्रा, इन सबके परिवार का नाम विद्या भारती है।

विद्या भारती का काम एक अलग संगठन के नाते छात्रों को पढ़ाना और अभिभावकों के लिए उपक्रम चलाना केवल ऐसा नहीं है। यह सारा जो काम है इनसे मिलकर हो रहा है, इनका इसमें योगदान होता है। इनका योगदान होना इसलिए भी

चाहिए कि यह काम अधूरा न रह जाए। इसलिए यह अपना कार्य है यह सबको सोचना चाहिए। हमारे भैया-बहन पढ़ते हैं। कोई बालक विद्यालय में जाने लगता है, ये सोच कर थोड़े ही आता है कि आगे चलकर मैं ऐसा बनूँगा, मैं वैसा बनूँगा। देश का ऐसे भला करूँगा, वैसे भला करूँगा। ये बातें तो उसको उस विद्यालय में मिलती है।

शिक्षा की बात मनुष्य जीवन में क्यों आई ? केवल पेट भरने की विद्या नहीं, पेट भरने की शिक्षा नहीं, शिक्षा की कुछ अपेक्षाएँ हैं। वह अपेक्षाएँ व्यक्ति पूरी नहीं करता तो उसके शिक्षित होने का भी कोई लाभ नहीं।

"पोथी पढ़ि-पढ़ि जग मुआ, पंडित भया न कोय।
ढाई आखर प्रेम का पढ़े सो पंडित होय।"

कबीर वाणी में ऐसा यहाँ पर बताया गया है। पढ़-लिख कर ऊँचे होने पर इतना ऊँचा नहीं होना। अटल जी की कविता है "हे प्रभु मुझे इतनी ऊँचाई मत देना कि कोई गौरैया मेरे शिखर पर घोंसला बनाने का साहस न करे।" जिस समाज से हम आए, जिससे हमने बहुत कुछ लिया है, उसको क्या देने वाले हैं? उसको हम कितना दे पाएँगे ? जो जितना अधिक देता है और जितना अधिक समाज की सेवा में उपयोग में आता है, उसको हमारे यहाँ महापुरुष मानते हैं। हमारा देश ऐसा है जहाँ धनपतियों की महिमा नहीं है, शेष दुनिया में महिमा है। अरबपति, खरबपति नाम के होते हैं, उनके चरित्र लिखे जाते हैं। वहाँ के बालक भी यह तय करते हैं कि मुझे ऐसा बनना है, सफल होना है। हमारे यहाँ कहानियाँ धनपतियों की नहीं चलतीं। कुछ धनपतियों की कहानी चलती है, जिसने अपने जीवन की गाढ़ी कमाई स्वतंत्रता की लड़ाई लड़ने के लिए राणाप्रताप को दे दी।

कितना कमाते हैं, उसका महत्त्व नहीं है। कितना देते हैं उसका महत्त्व है। दान की बड़ी महिमा है। जो जितना अधिक देगा वह उतना ही बड़ा हो जाता है। सब कुछ देकर लोगों की सेवा के लिए अपना पूरा जीवन देश को देने वाला व्यक्ति, उसके पास कुछ नहीं रहता तो वह लंगोट पहन कर घूमता है। लेकिन हमारे यहाँ के बड़े-बड़े लोग उनकी चरण वंदना करते हैं। बड़े होने की कामना करनी चाहिए। सफल होना चाहिए लेकिन सफल होने के साथ सार्थक भी होना चाहिए। यशस्वी होना चाहिए। इस हेतु पढ़ाई ग्रहण करना छात्रों का काम है और ऐसी पढ़ाई देना आचार्यों का काम है।

एक विशेष लक्ष्य के नाते हमारे देश की नई पीढ़ी को हमें ऐसे तैयार करना है, इस हेतु विद्यार्थी को ज्यादा देने के लिए वह अनेक प्रकार का प्रशिक्षण लेते हैं। किसी विद्यालय के शिक्षक के लिए यह आवश्यक नहीं है कि विद्यालय समय अवधि के बाद कुछ कार्य करे। जितनी कक्षाएँ उसको लेनी है उसने ले लीं तो उसका काम पूरा हो गया परन्तु विद्या भारती के आचार्य अभिभावकों से सम्पर्क रखते हैं, समय देते हैं। अच्छा सिखाना है तो सिखाने में अपनी उत्कृष्टता बढ़ाते हैं क्योंकि शिक्षा प्रदान करना केवल आजीविका का साधन नहीं है बल्कि यह 'व्रत' है। उससे आजीविका का भी न्यूनतम निर्वहन तो होता ही है, यह एक अलग बात है, लेकिन शिक्षा देने के लिए शिक्षक क्यों बनना? यानी ज्ञान-दान के लिए बनना। लोगों को मुक्त करने वाली, स्वतंत्र करने वाली, प्रत्येक व्यक्ति को सच्ची स्वतंत्रता प्राप्त करा देने वाली विद्या देने के लिए बनना। उसी व्रत का निर्वाह करते हुए आचार्य अपने व्रत पालन ठीक से करते हैं तो विद्या भारती का जो ध्येय है, वह अधिक सफल हो सकता है।

सबसे महत्त्वपूर्ण बात अभिभावकों की है। 'उपनिषद् गंगा' नामक एक धारावाहिक है। आप सब ने देखा होगा। यदि नहीं देखा है तो इसे जरूर देखिए। उसके प्रारम्भ का प्रसंग ऐसा है कि काशी में संस्कृत का अध्ययन कराने वाले आचार्य हैं। वह ऐसा स्थल है जहाँ कुछ नहीं मिलता, फिर भी कर रहे हैं। पूर्वजों की जो थाती हमको सौंपी गई है वह आगे की पीढ़ी को दे रहे हैं। उनके के पास विदेश से भी एक व्यक्ति उपनिषद् सीखने आता है। आचार्य उसको बताते हैं कि उपनिषद् सीखना है तो क्या आपने इसके बारे में कुछ पढ़ा है। विदेशी व्यक्ति बोले थोड़ा बहुत पढ़ा है। फिर आचार्य कहते हैं कि गंगा किनारे एक घर बना कर मैं यहाँ हूँ। इसी घर में मेरे साथ तुम्हें रहना होगा। क्या तुम्हारी तैयारी है? वह विदेशी व्यक्ति है, वह सुविधाओं में रहने का व्यसनी है। वह कहता है कि मैं तैयार हूँ। फिर आचार्य कहते है कि यह उपनिषद् पढ़ने के बाद कोई प्रमाणपत्र नहीं मिलेगा, कोई नौकरी नहीं मिलेगी, फिर भी उसे पढ़ना और सीखना है क्या? विदेशी व्यक्ति कहता है कि मुझे सीखना है। यह विद्या है, यह पैसे देकर भी नहीं मिलती। परन्तु यह विद्या मनुष्य को, मनुष्य बनायेगी। आचार्य मनुष्य को मनुष्य बनाने के लिए विद्या दान के व्रत का पालन कर रहा है। छात्रों को इस विद्या से भौतिक लाभ नहीं होगा। अभी यह विद्या मुझे मनुष्य बनायेगी, उसे ग्रहण करने के लिए क्या हमारे-भैया बहनों के अभिभावक तैयार हैं?

पढ़-लिख कर क्या बनना ? पढ़ लिख कर नौकरी करना, बहुत अच्छे पैसा कमाने वाले लोग भी हैं लेकिन पढ़े-लिखे लोग केवल उच्च पदों को प्राप्त करने वाले व्यक्ति ही बनें, ऐसा संभव नहीं है। पढ़े-लिखे लोग विवेकानन्द भी, भगत सिंह भी बने। जो पढ़-लिख कर उच्चपदस्थ भी, तो भी उनको कोई याद नहीं रखता। लेकिन यदि कोई पढ़ा लिखा विवेकानन्द बना तो आगे की दस पीढ़ियाँ उसको ध्यान में रखती है। विवेकानन्द के बारे हम सबको पता है, क्यों पता है ? वे हमारे रिश्तेदार तो नहीं हैं। वे यहाँ पर आ चुके होंगे, पर तब हम नहीं थे। उन्होंने मेरे अपने जीवन के लिए प्रत्यक्ष कुछ नहीं किया। रिश्ते-नाते मेरी आठवीं पीढ़ी का जो पूर्वज हो उसका नाम मैं नहीं बता सकता। वह मेरा अपना रिश्तेदार है, वह था इसलिए मैं हूँ लेकिन मुझे वह ध्यान में नहीं है परन्तु उस विवेकानन्द को मैं क्यों ध्यान में रखता हूँ? अपने बालक-बालिका को उनकी कहानी को बताते हैं तो इन्हीं लोगों की कहानी बताते हैं।

हम सोचते ऐसा हैं कि पढ़-लिख कर बहुत काम आएगा, बड़ा घर बनाएगा, हमको सुखी करेगा। लेकिन जिन्होंने अपने माता-पिता को सुख में रखा व कुछ कमाया फिर भी हम उनकी कहानियाँ तो बताते नहीं। कहानियाँ तो सिर्फ विवेकानन्द और भगत सिंह की ही बताते हैं। क्योंकि हमको यह लगता है कि मेरे सुख के लिए इसका बड़ा होकर कमाना आवश्यक है तो भी अच्छे मनुष्य के नाते प्रेरणा देने वाला कौन है? तो विवेकानन्द जी और भगत सिंह जी।

हमारे बालक के मन में स्वदेशाभिमान उत्पन्न हो, अपनी मातृभाषा का जानकार बनकर वह दुनिया की अनेक भाषाएँ सीखे। अपने जीवन में सामान्य सुस्थिति रखते हुए समाज को ज्यादा दे, ऐसा सोचकर वह पढ़ रहा है। उसको ध्यान में रखकर आचार्य परिश्रम कर रहे हैं? परन्तु क्या हम अपने घर में भी यही वातावरण रखते हैं, जिससे मनुष्य को मनुष्य बनाने वाली, प्रत्येक मनुष्य को वास्तविक स्वतंत्रता का अनुभव देने वाली विद्या ग्रहण करने की उसकी बुद्धि बनी रहे। यहाँ पर इस प्रकार का सारा बताने के बाद जब बालक घर में आता है, अपने माता-पिता का बोल सुनता है तथा घर का वातावरण देखता है तो वह अपना सारा धरा का धरा रह जाता है, अब ऐसी ही स्थिति है।

विद्या केवल विद्यालयों में ही नहीं सीखते। हम लोग परतन्त्र बने रहे इसलिए कि इस पाश्चात्य शिक्षा प्रणाली का सृजन मैकाले के नेतृत्व में इस देश में ही हुआ। अभी भी उसके अवशेष यहाँ चल रहे हैं। परन्तु हम ध्यान दें तो उसी प्रणाली से हमें तिलक, गांधी जी, रवीन्द्रनाथ टैगोर, विवेकानन्द मिले क्योंकि उन्होंने महाविद्यालयों की शिक्षा ग्रहण की। जितनी आवश्यकता थी उतनी ही इन लोगों ने ग्रहण किया। समाज का वातावरण और परिवारों का वातावरण उनको दूसरी ओर सही शिक्षा पाने के मार्ग पर ले गया।

विद्या भारती के विद्यालयों में बच्चे को डालना, इससे अभिभावकों की भी जिम्मेदारी बढ़ जाती है। उनको भी इस शिक्षा में हाथ लगाना पड़ता है। विद्या भारती के विद्यालयों में सिखाना, आचार्य की जिम्मेदारी बढ़ जाती है। बाहर के विद्यालयों में आचार्य जैसा करते हैं वैसा यहाँ के आचार्य नहीं कर सकते। आचार्य को सजग रह कर कार्य करना पड़ता है और विद्या भारती के विद्यालय में अगर पढ़ना है तो छात्रों की भी जिम्मेदारी बढ़ जाती है। बाकी के विद्यालयों में जो छात्र पढ़ते हैं उनसे कुछ ज्यादा ही इनको पढ़ना पड़ता है। ऐसी शिक्षा की आवश्यकता तो है, यह सब अनुभव करते हैं। भारत की शिक्षा कैसी हो इसका विचार जिन लोगों ने किया है, आज भी कर रहे हैं। उनसे पूछेंगे तो अलग-अलग शब्दावलियों में यही बात वे बताते हैं। स्वप्न देने वाली, आत्मविश्वास बढ़ाने वाली, क्षमता वृद्धि करने वाली, मनुष्यता देने वाली शिक्षा यही सबके कहने का सारांश है। यही विद्या भारती के विद्यालयों में विद्यार्थियों को दी जाती है। इसलिए विद्या भारती के विद्यालयों का विकास, भवनों का निर्माण यह सब आवश्यक बातें हैं। समाज के साधन-सम्पन्न लोगों को उस आवश्यकता को पूर्ण करने में हाथ लगाना चाहिए। लेकिन प्रत्यक्ष में विद्यादान से जिसका सम्बन्ध है यानि भैया-बहिन, आचार्य व अभिभावक तीनों के ही कुछ कर्तव्य भी हैं। वह चलता रहा तो यह जो भौतिक विकास है वह अपने आप ही पीछे चला जाएगा। इसको स्मरण रख कर ही हम आगे बढ़ें। यह बहुत अच्छी बात है कि विद्यालय का विकास होगा तो इस प्रकार की शिक्षा और अधिक व्यापक प्रमाण में सबको मिलेगी व उसमें सारे विश्व का कल्याण है। एक अच्छा कार्य हो रहा है। इसे करने वालों को अभिनन्दन और शुभकामनाएँ। परन्तु उत्तरोत्तर उत्तम कार्य की साधना है तो कुछ कर्तव्य भी अपने हो जाते हैं। कार्य के बढ़ते आकार के साथ जिम्मेदारी का आकार भी बढ़ता है। उसको भी हम सब लोग ध्यान में रखें।

(विद्या भारती दिल्ली के भलस्वा में विद्यालय के पुनः निर्माण हेतु शिलान्यास सन् २०१७ के अवसर पर दिए उद्‌बोधन का अंश)

मैं वन्देमातरम् हूँ

प्रज्ञाप्रवाह

श्रद्धेय रंगाहरि जी
पूर्व अखिल भारतीय बौद्धिक प्रमुख
राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ, भारतीय
संस्कृति के अप्रतिम अध्येता,
अनेक ग्रंथों के रचयिता,
राष्ट्रीय विचारक,
अनेक भाषाओं के जानकर

मैं वन्देमातरम् हूँ। मुझ में मनुष्य का आकार नहीं, मैं एक शिल्प हूँ। एक संगीत शिल्प। मेरा अपना विशेष रूप है। मेरी अपनी भाषा है, भाव है, राग है, ताल और तान है। मेरी अपना लय है, जीवन है, स्पन्दन है। परमेश्वर ने मारकण्डेय को सदा सोलह वर्ष दिया है। मुझे भी यही वरदान प्राप्त हुआ है। जीवन की सफलता के लिए कन्याकुमारी में माता के चरणों पर व्रतशुद्धि के साथ प्रतीक्षा करने वाली कन्या जैसी हूँ मैं। मैंने बताया कि पिताजी ने 'आनन्दमठ' में मेरी भर्ती की है। जानबूझकर ही मैंने ऐसा कहा है। कुछ लोगों की धारणा है कि मेरा जन्म 'आनन्दमठ' में हुआ है। लेकिन ऐसा नहीं है। आनन्दमठ प्रत्यक्ष होने से कई वर्ष पहले मेरा उदय हुआ है। मानव मंगल के लिए महाराज मनु ने जब सविता को अर्घ्य देने के लिए अंजलि में जल ले लिया तब एक मछली प्रत्यक्ष हो गई। वैसे ही मेरा भी उदय हुआ।

अपनी धरती में सोना उगाने के लिए राजा जनक ने जब हल चलाया तब धरती से सीता बाहर निकली। लोगों ने उसे जनक की पुत्री पुकारा। मेरा जन्म भी प्रायः इसी तरह से हुआ। संतक्रान्ति (संन्यासी आन्दोलन) में क्रान्तिकारी संतों के मुँह से मेरा जन्म हुआ था। यही था, एक ही शब्द "वन्देमातरम्" उसके बाद कुछ समय तक वायुमण्डल में अरूपी होकर मैंने घूम लिया। फिर मातृगर्भ में शरण ले ली। कई वर्ष बीत गए, बीज का नाश नहीं हुआ। जैसे राजा जनक ने हल चलाया वैसे ही बंकिम ने जन्मभूमि की मुक्ति के लिए अपनी प्रतिभा में हल चलाया। उस समय माता सीता की भाँति मेरा भी उदय हुआ। मातृभूमि के चैतन्य से मुझे पूर्ण रूप प्राप्त हुआ। बीज रूप से मैं आज के स्वरूप में परिणत हो गई। लोगों ने बंकिमबाबू को 'वन्देमातरम्' का जनक कहा। सही है मेरे जनक बंकिम बाबू ही है। मेरी जननी यह धरती है। सोने जैसी इस वसुधा को छोड़कर मुझे कहाँ जाना है ? इसको छोड़कर मेरी क्या जिंदगी है ?

जिन्दगी में विपत्तियाँ पड़ने पर या कठिन परिस्थितियों से गुजरने पर एक अपार नियामक शक्ति पर विश्वास करना मनुष्य की आदत है। इस विश्वास से ही राजपूत वीरों ने 'भगवान् एकलिंग की जय' कहकर देश तथा इसकी मान की रक्षा हेतु शस्त्र धारण किया। स्वदेश और अपने धर्म की रक्षा हेतु महाराष्ट्र के लोग 'हर हर महादेव' कह कर आगे बढ़े। बंगाल की देवता दुर्गा हैं, अम्मा भगवती हैं। इसलिए संतक्रान्ति की सन्तानें 'वन्देमातरम्' कहकर धर्म संरक्षणार्थ आगे बढ़ीं।

पिताजी के लिए यह जन्मभूमि सिर्फ पत्थर और मिट्टी की नहीं थी। उनके लिए मातृभूमि चैतन्यमयी दिव्य जननी थी। अनुग्रह और निग्रह की क्षमता से सम्पन्न, शक्ति स्वरूपिणी थी। कालान्तर में यह पवित्र जननी राहुग्रसित हो गई। उसकी दुर्दशा देखकर पिताजी का मन विह्वल हो गया। फिर भी उन्होंने आशा नहीं छोड़ी। उनका दृढ़ विश्वास था कि जन्मभूमि का भविष्य उज्ज्वल है।

पिताजी का अपना आत्मदर्शन है "मैंने देखा काल प्रवाह ने अचानक दिशाओं को घेर लिया, मैं अपनी छोटी सी नाव में बहने लगी। मैंने देखा अपार सागर के क्रुद्ध होने से लहरों के हिलोरें मारते समय सितारे ऊपर उठते और डूबते हैं। चारों ओर एक छोटा प्राणी भी नहीं। केवल मैं, केवल मैं। मैं

डर गयी। माँ-माँ कहकर अनाथ होकर मैंने चिल्लाया। इस काल समुद्र में मैं माँ को ढूँढ़ता रहता था। माँ कहाँ है ? मेरी प्रिय माँ कहाँ है ? सुन्दर मेरी भारतमाता कहाँ है ? कमल के जैसे सुन्दर कमलासना माँ कहाँ है ? इस करात काल-समुद्र में माँ तू कहाँ है? अचानक वायुमंडल में एक स्वर्गराग सुनाई पड़ा। क्षितिज में केसरी रंग की शोभा फैल गयी। मन को शीतल करने वाली हवा बहने लगी। दूर लहरों के पार मुस्कुराती हुई चमकने वाली मूर्ति मैंने देखा। हाँ मैने पहचान लिया। मेरी माँ ! मेरी जननी...., मेरी मातृभूमि...., मेरी जन्मभूमि .. धरती का रूप धारण किया मेरी माँ ! काल के अगाध गर्त में गिर पड़ी कोटिरत्न विभामिनी। मैं याद करता हूँ तेरा रूप, मणिमंडित दशहस्त दश दिशाओं की ओर रखे हैं। हर हाथ में विशेष हथियार ! चरण कमलों में पराजित होकर गिर पड़ा शत्रु। चरण कमलों के पास उन पराजित शत्रुओं की छाती फाड़ते हुए केसरी। वह रूप अब मैं नहीं देखूँगा। कल परसों भी नहीं देखूँगा। परन्तु एक दिन अवश्य देखूँगा, दशप्रहर धारिणी, शत्रु विदारणी और वीर सिंहवाहिनी के रूप में दायें ओर श्रीदेवी और बायें ओर श्रीकला आगे-पीछे शक्तिधर कार्तिकेय और विघ्नहर गणेश के साथ विराजमान माँ के रूप का दर्शन मैं करूँगा। उस काल प्रवाह में मैंने भारतमाता की स्वर्णिम मूर्ति का दर्शन किया है।

एक ही आध्यात्मिक राग के आलापन करने वालों के हृदय के ऐक्य से भारत एक राष्ट्र बन जाता है। स्वामी विवेकानन्द ने कहा था "बिखरी हुई आध्यात्मिक शक्तियों का मिलन ही भारत की राष्ट्रीय एकता का आधार है? क्या यह मेरे पिताजी के शब्दों की प्रतिध्वनि नहीं है? स्वामी जी की प्रिय शिष्या निवेदिता ने इसको और स्पष्ट करते हुए कहा था - देश, जन, धर्म इन तीनों से मिलकर राष्ट्र बनता है। यहाँ उल्लेखनीय यह है कि धर्म का मतलब मजहब नहीं है। पहले से पिताजी का विचार इन महान् व्यक्तियों के विचारों के अनुरूप था। पिताजी का यह दृढ़ विश्वास था कि "अंग्रेजों के आने के पहले से भारत एक राष्ट्र है। अंग्रेजों ने सिर्फ शासन किया है।" राजनारायण बसु तथा नवगोपाल मित्र जैसे लोगों का भी यही विचार था। पिताजी का यह विचार मुझ पर पड़ गया। मेरा प्रथम चरण देश है, द्वितीय चरण जन है तथा तृतीय चरण धर्म है। राष्ट्र का शरीर मेरा देश है। यह सुजल, सुफल, मलयज और शीतल है। प्रफुल्ल है, वृक्षलतादिकों से प्रशोभित है। पिताजी ने माँ को सुन्दरवदना तथा सुभाषिणी कहा है। फिर आगे बढ़कर यहाँ की जनता के बारे में कहा है। माँ सात करोड़ लोगों की ओर से बोलने वाली है। उसने दोनों हाथों में तलवार धारण किया हुआ है। क्या वह अबला है? वह बाहुबल धारिणी है, तारिणी है। देश की जनता के बारे में बताने के बाद धर्म के बारे में कहा है। राष्ट्र की अस्मिता और राष्ट्र-सत्ता के बारे में विस्तृत वर्णन किया है। वाणीदेवी का अनुग्रह इस वर्णन में उनको मिला है। अन्त में उस राष्ट्र ऋषि ने राष्ट्र को पूर्ण रूप से मुझ पर प्रतिष्ठित किया है। कितनी धन्य हूँ मैं ! त्रिकाल धन्य !

माँ आदि से अन्त तक एक है, पूर्ण है, अभिन्न है। कारण जो भी हो, मुझे कुछ 'पंक्तियों में' सीमित करना मेरे प्रति घोर अन्याय है। मेरे सत्त्व के प्रति अन्याय है। देश-जनता और धर्म मिलकर बनने वाले राष्ट्र को इसमें किसी एक के रूप में सीमित करना, संकुचित करना क्या सही बात है ? इसी जमाने में स्वामी विवेकानन्द की दिग्विजय हुई। इसका सबसे अधिक प्रभाव मद्रास और कलकत्ता में हुआ। बंगाल की सन्तानें होने पर हम स्वामी जी पर अधिक गर्व करते थे। उनके प्रभाव से लोगों में आत्मगौरव की भावना जाग उठी और अधर्म की भावना चली गई। स्वामी ने अलेक्जेण्डर डफ के देश में जाकर मार्गरेट नोबिल को अपनी शिष्या बनाकर निवेदिता के रूप में भारत माता के चरणों में सौंप दिया। लोगों में अपने देश और धर्म के प्रति अभिमान पैदा करने में सहायक सिद्ध हुआ। विश्वविजयी होकर इस वीर पुत्र की वापसी ने खासकर बंगाल के युवा पीढ़ी में जोश पैदा किया। स्वामी जी को ऐसे युवा लोगों ने चाहा था जिनमें सागर पार करने की ताकत है तथा उनके शरीर और नसें लोहे से बनी हुई हों और हृदय अत्यन्त मजबूत हो। जीवन में वे अस्पर्शित तथा अनाघ्र कुसुमों जैसे होना चाहिए। उनकी एकमात्र प्रिय देवता भारतमाता हों, ऐसा होने से चारों ओर फैला हुआ घना अंधकार मिट जाएगा और फिर एक बार जगद्धात्री के रूप में प्रशोभित होगी। यही उस ऋषिवर्य का दीर्घगामी दर्शन था।

यह स्पष्ट करता हूँ कि मैंने कार्तिक शुक्ल नवमी में जन्म लिया है। बंगाल में अक्षयनवमी के नाम से यह तिथि प्रसिद्ध है। जगद्धात्री पूजा का पुण्य दिवस है। ७ नवम्बर सन् १८७५ का दिन था। इसी दिन जन्म होने के कारण ही मेरा सम्पूर्ण जीवन जगद्धात्री की पूजा में लग गया। आनन्दमठ सन् १८७२ में बाहर आ गया। मुझे इसमें शामिल करने से पिताजी के मित्रगण अत्यन्त खुश हो गए। एक दोस्त ने कहा था - 'अपने पास पहले से मौजूद हीरा को लगाकर बंकिम बाबू ने हीरे की अंगूठी बनाई है'।

(वन्देमातरम् की १५० वीं जयन्ती पर 'वन्देमातरम् की आत्मकथा' से साभार)

सनातन ज्ञानपरम्परा का स्रोत–ईशावास्योपनिषद्

तत्त्वचिंतन

श्री विजय शर्मा
एम०ए०, एम०फिल (अर्थशास्त्र)
अभिलेखीकरण एवं शोध सलाहकार,
आर्ष साहित्य के अध्येता,
मंत्री, भारतीय शिक्षा शोध संस्थान,
लखनऊ

संपर्क
मो. 7080788963

सनातन ज्ञान का आधार वेद हैं और वेदों का सार उपनिषद् में निहित है। हमारे ऋषियों ने यह ज्ञान ध्यान और तपस्या के माध्यम से प्रत्यक्ष अनुभव कर प्राप्त किया और फिर उसे पीढ़ी दर पीढ़ी परम्परा के आधार पर आगे बढ़ाया। वह ज्ञान जो आत्मा के रूप में हमारे अन्दर विद्यमान है, जैसे ही इस वास्तविकता का हमें अहसास होता है हम स्वयं का सम्मान करने लग जाते हैं। जैसे ही हमको इस बात का प्रत्यक्ष अनुभव होता है कि हमारा यह शरीर आत्मा नहीं है, हमारा मन आत्मा नही हैं और न ही हमारी बुद्धि आत्मा है, हम अपने आत्मस्वरूप में आ जाते हैं और हम जान जाते हैं कि हमारी आत्मा ही सारे जगत् की आत्मा है। ईशावास्योपनिषद् हमारे अन्दर आत्मा का बोध कराता है और हमारी वास्तविक सत्ता को ज्यों का त्यों दिखा देता है। इसके अध्ययन से हमारे जीवन का शोक, मोह, दुःख-सुख, विजय-पराजय, भूख-प्यास, लाभ-हानि, राग-द्वेष, भविष्य की चिन्ता सब समाप्त हो जाता है। यजुर्वेद के प्रसिद्ध शान्ति मंत्र -

ॐ पूर्णमदः पूर्णमिदं पूर्णात् पूर्णमुदच्यते।
पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णमेवावशिष्यते।।
ॐ शान्तिः ! शान्तिः !! शान्तिः !!!

से प्रारम्भ होने वाला यह उपनिषद् हमें बताता है कि आत्मा ही ब्रह्म है। आत्मा शुद्ध, निष्पाप, सर्वव्यापक और अविनाशी है। आत्मा और ब्रह्म में कोई भेद नहीं है। शरीर, मन, बुद्धि नश्वर हैं और आत्मा इन सबसे परे है। ईशावास्योपनिषद् शुक्ल यजुर्वेद का छोटा सा उपनिषद् है जिसका बहुत गम्भीर अर्थ है। व्यासजी ने जब वेद को चार वेदों में विभाजित किया तब उन्होंने अपने चार शिष्यों को दायित्व दिया और उनसे कहा कि आप लोग इन्हें अपने शिष्यों, प्रति शिष्यों के माध्यम से सँभाल कर रखना। वैशंपायन ऋषि को उन्होंने यजुर्वेद दिया। वैशंपायन के प्रसिद्ध शिष्य याज्ञवल्क्य, जो मिथिला के थे, से एक बार कुछ झगड़ा हो गया। वैशंपायन ने अपने शिष्य याज्ञवल्क्य से सारी शिक्षा वापस ले ली। यानि जो शिक्षा उन्होंने वैशंपायन ऋषि से ली है उसे वे काम में नहीं लगायेंगे। याज्ञवल्क्य वहाँ से चले गये और फिर उन्हें यजुर्वेद का ज्ञान मिला और वहीं से यजुर्वेद की दो परम्परायें प्रारम्भ हो गयीं। याज्ञवल्क्य के शिष्यों ने इसे शुक्ल यजुर्वेद नाम दिया। ईशावास्योपनिषद् शुक्ल यजुर्वेद का ही उपनिषद् है। दूसरे यजुर्वेद को कृष्ण यजुर्वेद कहते हैं। शुक्ल यजुर्वेद का बहुत सम्मान है लेकिन कृष्ण यजुर्वेद जो मूल है उसमें भी बहुत अच्छे उपनिषद् आते हैं। शुक्ल यजुर्वेद में ४० अध्याय हैं। इसका ४०वाँ अध्याय ईशावास्योपनिषद् है। ४०वें अध्याय का अन्य ३९ अध्यायों की भाँति किसी यज्ञ में प्रयोग नहीं किया जाता है। इस अध्याय का यज्ञ में क्यों प्रयोग नहीं किया जाता? यह बात शंकराचार्य जी इसी अध्याय की व्याख्या करके समझाते हैं।

ईशावास्योपनिषद् में १८ मंत्र हैं। इन मंत्रों में पूरा हिन्दू दर्शन एवं अध्यात्म दर्शन का वर्णन है। इन मंत्रों का किसी भी कर्म में विनियोग नहीं है। वेद की जितनी भी ऋचायें (मंत्र) हैं उनके मंत्रों का कर्म में किसी न किसी तरह उपयोग होता है। ऐसा कहा जाता है जिस मंत्र का किसी कर्म में प्रयोग नहीं होता है वह मंत्र स्तुति मात्र है या कहें कि वह मंत्र प्रशंसा मात्र है। यजुर्वेद के प्रथम ३९ अध्याय कर्म का प्रतिपादन करते हैं लेकिन इसका अन्तिम अध्याय ज्ञानकाण्ड का है जिसमें ब्रह्मविद्या का प्रसंग आता है।

ईशावास्योपनिषद्-स्वप्न में हम लोग सोचते हैं कि हम ये हैं, हम वो हैं। उसी प्रकार इस संसार में हमने इन चीजों से अपने आप को जोड़ लिया है और जब हम सोचते हैं कि इनसे कैसे निकला जाये तब वह शक्ति हमें दो पथ (प्रवृत्ति मार्ग व निवृत्ति मार्ग) प्रदर्शित करती है। हिन्दू धर्म में साधना दो प्रकार से की जाती है। एक जिसमें त्याग हो और दूसरा जिसमें कर्म हो। कर्मवाले मार्ग को प्रवृत्ति लक्षण धर्म कहा जाता है और त्यागवाले मार्ग को निवृत्ति लक्षण धर्म कहा जाता है। यह दो पथ ईशावास्योपनिषद् के प्रथम दो मंत्रों के माध्यम से व्यक्त किये गये हैं। इन दोनों मंत्रों की एक बहुत बड़ी विशेषता यह है कि हिन्दु धर्म की साधना इन दो ही मंत्रों में समाहित है। यही नहीं, विश्व में जितने भी धर्म हैं उनकी साधना इन दोनों मंत्रों में समाहित है। प्रथम मंत्र में कहा गया है कि यह समस्त जगत् ईश्वर से आवृत है।

ॐ ईशावास्यमिदं सर्वंयत्किंच जगत्यां जगत्।
तेन त्यक्तेन भुंजीथा मा गृधः कस्यस्विद्धनम् ॥ १॥

ईशावास्योपनिषद् का प्रथम मंत्र कहता है कि इस जगत की प्रत्येक वस्तु और प्रत्येक जीव ईश्वर (आत्मा) की अभिव्यक्ति है। आत्मा शुद्ध, निष्पाप, अद्वैत और नित्य है, जिसे किसी कर्म की आवश्यकता नहीं है। परंतु परम्परागत पुरोहित कर्मकांडों को अनिवार्य मानते हैं, जबकि आदि शंकराचार्य और स्वामी विवेकानन्द जैसे संतों ने स्पष्ट किया कि आत्मा स्वयं ही पूर्ण है और ज्ञान ही मुक्ति का साधन है। यहाँ शंकराचार्य जी बताते हैं कि शुक्ल यजुर्वेद का ४० वाँ अध्याय, जिसे ईशावास्योपनिषद् कहते हैं, इसके मंत्रों का प्रयोग यज्ञ में नहीं किया जाता है, बल्कि ये मंत्र आत्मज्ञान के लिए हैं। अतः इस उपनिषद् का उद्देश्य लोगों के भीतर व्याप्त अज्ञान को काटकर आत्मज्ञान की ओर ले जाना है। यहाँ एक महत्त्वपूर्ण सिद्धांत क्रम-समुच्चय का है। कर्म और उपासना एक साथ हो सकते हैं, कर्म और भक्ति एक साथ हो सकते हैं लेकिन कर्म और ज्ञान एक साथ नहीं चल सकते क्योंकि दोनों में प्रबल विरोध है। पहले कर्म और उपासना के माध्यम से अंतःकरण की शुद्धि होती है, फिर ज्ञान के द्वारा मुक्ति प्राप्त होती है। इस प्रकार जो साधक अभी ज्ञानमार्ग पर अग्रसर नहीं हो सकता, उसके लिए कर्म मार्ग अनिवार्य है, जिसे दूसरे मंत्र में स्पष्ट किया गया है-

कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीविषेच्छतं समाः।
एवं त्वयि नान्यथेतोस्ति न कर्म लिप्यते नरे॥ २॥

उपनिषद् बताता है कि मनुष्य को सौ वर्ष तक कर्म करते हुए जीने की इच्छा करनी चाहिए। इन्द्रियों और मन को शास्त्रानुसार कर्म में लगाकर यदि हम जीवन बिताएँ तो अंतःकरण शुद्ध होता है और पापकर्म हमें नहीं घेरते। यही शुद्धि आगे ज्ञानमार्ग की ओर ले जाती है। यदि कर्म शास्त्र सम्मत न हों तो जीव को चौरासी लाख योनियों में भटकना पड़ता है। अतः जिनका शरीर और संसार से गहरा जुड़ाव है, उनके लिए कर्मकांड आवश्यक है। अग्निहोत्र आदि वैदिक कर्म अशुभ से रक्षा करते हैं। जो साधक ज्ञान के योग्य हैं, वे तीनों तृष्णाओं का त्याग करके ज्ञानमार्ग अपनाते हैं। इसीलिए पहला मंत्र संन्यासी/ज्ञानी के लिए है, जबकि दूसरा मंत्र कर्मनिष्ठ गृहस्थ के लिए है। ज्ञान और कर्म दोनों के फल भिन्न हैं, परंतु दोनों मार्ग प्राचीन काल से चले आ रहे हैं। यदि कोई साधक कर्म करते-करते अंतःकरण शुद्ध कर ले, किंतु जीवन काल में आत्मज्ञान न प्राप्त हो, तो अगले जन्म में वह सहज ही ज्ञानमार्ग पर अग्रसर हो जाता है और पुनः कर्म मार्ग की आवश्यकता नहीं रहती। इसी क्रम में तृतीय मंत्र अज्ञानियों की निंदा करता है। यह बताता है कि कर्म शुद्धि का साधन है और ज्ञान मुक्तिका -

असुर्या नाम ते लोका अन्धेन तमसावृताः।
तांस्ते प्रेत्याभिगच्छन्ति ये के चात्महनो जनाः॥ ३॥

इस मंत्र के अन्त में आया है "ये के चात्महनो जनाः" अर्थात् ये जो व्यक्ति आत्मा की हत्या करते हैं वे शरीर छोड़ेंगे तो वह वहाँ जायेंगे जहाँ नारकीय प्राणी हों, असुरतुल्य प्राणी हों अर्थात् केवल दुःख वाले लोक में जायेंगे जहाँ कोई भी ज्ञान की चर्चा नहीं होती है। यह एक ऐसा लोक है जहाँ लोग हैं लेकिन सभी अज्ञानी हैं। जहाँ अज्ञान रूपी ज्ञान से सबके सब सम्मोहित हैं। उस लोक में केवल असुर हैं जो आत्मा को समझते ही नहीं है। उनका जीवन अपने ही प्राणों में रचा बसा होता है। जब तक हमें परमात्म दृष्टि प्राप्त नहीं होती, अद्वैत की दृष्टि प्राप्त नहीं होती, तब तक हम असुर की श्रेणी में रहते हैं। हम आत्मा हैं, हमारी आत्मा सर्वव्यापक है यही दृष्टि सर्वोत्तम है। हम कमायेंगे, खायेंगे, पीयेंगे यदि इसी दृष्टि के साथ हम जी रहे हैं तब हम देवता भी क्यों न हों हम असुर की श्रेणी में आयेंगे।

इस प्रकार तृतीय मंत्र में अज्ञानी से तात्पर्य उस व्यक्ति से है जो जानता नहीं है लेकिन जानने की इच्छा है। इस व्यक्ति को हम जिज्ञासु या साधक कहेंगे। यहाँ निन्दा का उद्देश्य एक उपदेश देकर व्यक्ति को श्रेष्ठता की ओर ले जाना है। यहाँ निन्दा करके तत्त्वज्ञान की प्रशंसा करना है। यह मंत्र उस व्यक्ति के लिए है जो आत्मा के बारे में सुनना भी नहीं चाहता और जानना भी

नहीं चाहता। ऐसे लोग आत्मघाती कहलायेंगे। चौथी, पाँचवीं, छठी ऋचाओं (मंत्र) के माध्यम से इन बातों का विस्तार करते हुए समझाया गया है कि वह आत्मा कैसा है? उस आत्मा का स्वरूप कैसा है? उसे जानने का फल क्या होगा ?

अनेजदेकं मनसो जवीयो नैनन्देवा आप्नुवन् पूर्वमर्षत्।
तद्धावतोन्यानत्येति तिष्ठित्तस्मिन्नपो मातरिश्वा दधाति।। ४।।

जिसमें कुछ भी हिलना-डुलना नहीं है, जो मन से भी तेज गति वाला है। देवता लोग जब आत्मा को जानने के लिए दौड़ते हैं तब वे जहाँ जाते हैं आत्मा वहाँ पहले पहुँच जाता है। यही आत्मा हिरण्यगर्भ को शक्ति देता है। इसी आत्मा के भीतर यह प्राणवायु के रूप में रहकर सबके कर्म फलों को प्रदान कराता है। अविवेकी लोग जिन्होंने शास्त्र का चिन्तन कभी नहीं किया है, कहते हैं कि सबकी आत्मा अलग-अलग हैं। जबकि उस मन को शक्ति देने वाला चेतन सबमें एक है। श्रुति भगवती बिना आलस्य के एक ही बात को बार-बार दोहराती है कि हम आत्मा हैं, हम भगवान् कृष्णस्वरूप हैं, हम ब्रह्म हैं। जैसे माँ अपने बच्चों को बड़े धैर्य से पढ़ाती है वैसे ही इन मंत्रों के माध्यम से श्रुति भगवती अपने बच्चों को आत्मा के बारे में बहुत धैर्य से समझाती हैं। पूर्व के मंत्रों में जो कहा गया है उसे दोहराते हुए पाँचवे मंत्र में यह आता है -

तदेजति तन्नैजति तद् दूरे तद्वन्तिके।
तदन्तरस्य सर्वस्य तदु सर्वस्यास्य बाह्यतः।। ५।।

वह आत्मा चलता है और चलता भी नहीं है। सोपाधिक दृष्टि से चलता है और निरुपाधिक दृष्टि से नहीं भी चलता है। वह दूर है और समीप भी है अर्थात् सबके भीतर है। सबका अन्तर्रात्मा वही है और वह सबके बाहर भी है। इसके बाद छटा व सातवाँ मंत्र फलश्रुति है जिनमें बताया गया है कि आत्मा के जानने का फल क्या होता है। ये मंत्र आगे ज्ञान का फल बताते हैं -

यस्तु सर्वाणि भूतान्यात्मन्येवानुपश्यति।
सर्वभूतेषु चात्मनं ततो न विजुगुप्सते।। ६।।

जो साधक सभी १४ लोकों के प्राणियों को आत्मामय देखता है, सार्वात्म्यदर्शन के कारण ही किसी से घृणा नहीं करता है।

यस्मिन्सर्वाणि भूतान्यात्मैवाभूद्विजानतः।
तत्र को मोहः कः शोक एकत्वमनुपश्यतः।। ७।।

जब ज्ञानी को सब कुछ आत्मामय दिखने लगता है, तब उसके लिए संसार केवल आत्मा ही रह जाता है। वह निर्मोही, निःशोक और आत्ममग्न हो जाता है। ईशावास्योपनिषद् का प्रथम मंत्र ही सिखाता है कि जगत् में जो कुछ भी है, वह आत्मा (ईश्वर) की ही अभिव्यक्ति है। रूप और नाम मात्र भ्रम हैं, वस्तुतः सब आत्मस्वरूप ही है। ईश्वर के नाम पर भजन-कीर्तन करना सरल है, पर उसका वास्तविक ज्ञान कठिन है, क्योंकि यह विषय अत्यंत सूक्ष्म है। इसी को स्पष्ट करने के लिए इन्द्र और विलोचन की कथा दी जाती है। दोनों ब्रह्मा से आत्मा का रहस्य जानने गए। विलोचन ने शरीर को ही आत्मा मान लिया और भोगवाद को जीवन का लक्ष्य बताया, जो आज भी आसुरी प्रवृत्ति के रूप में विद्यमान है। इन्द्र ने प्रारम्भ में यही सोचा, पर संदेह होने पर पुनः ब्रह्मा के पास गए और दीर्घ तपस्या के बाद समझे कि आत्मा शरीर नहीं, बल्कि शुद्ध, नित्य, अद्वैत सत्ता है।

शास्त्रों के अध्ययन और साधना से जैसे-जैसे बुद्धि शुद्ध होती है, वैसे-वैसे आत्मा का वास्तविक स्वरूप प्रकट होता है। इस सत्य का सर्वोत्तम वर्णन ईशावास्योपनिषद् के आठवें मंत्र में मिलता है -

स पर्यगाच्छुक्रमकायमव्रणमस्नाविरं शुद्धमपापविद्धम्। कविर्मनीषी परिभूः स्वयम्भूर्याथातथ्यतोर्थान् व्यदधाच्छाश्वतीभ्यः समाभ्यः।। ८।।

आत्मा सर्वव्यापी है, ऐसा कोई स्थान नहीं जहाँ वह न हो। वह सदा शुद्ध है और जीवित शरीर में प्रकाश की भाँति केंद्रित दिखाई देता है, जबकि जड़ पदार्थ या मृत शरीर में धुंधला सा प्रतीति होता है। आत्मा निराकार है, चींटी से लेकर हाथी, वृक्षों और मनुष्यों तक सबमें विद्यमान है। उसे कोई हानि नहीं पहुँच सकता। वही मन और शरीर को संचालित करता है; उसके बिना देह निष्क्रिय हो जाता है। आत्मा त्रिकालज्ञ, सर्वज्ञ और जगत् के सभी मनों का नियामक है। न वह जन्म लेता है और न ही नष्ट होता है। सृष्टि के आरंभ से ही आत्मा को सब ज्ञात है कि किसे कौन-सा कार्य और स्थिति प्राप्त होनी है। संसार में धन, पद और प्रतिष्ठा उसी को मिलती हैं जिसने अपनी क्षमता विकसित की हो। यदि जीवन में अभाव है तो उसका कारण स्वयं हम हैं। आध्यात्मिक उन्नति के लिए पूजा और शास्त्र-अध्ययन दोनों का संतुलन आवश्यक है। केवल शास्त्रज्ञान अधूरा है और केवल कर्मकांड हमें पुरोहितवाद तक सीमित कर देता है। जब दोनों का समन्वय होता है, तभी श्रेष्ठ आध्यात्मिक परिणाम मिलते हैं। यही संदेश उपनिषद् के ९ से १४ मंत्रों में दिया गया है। आत्मा सर्वव्यापी, शाश्वत और नियामक सत्ता है; उसकी अनुभूति के लिए पूजा और शास्त्र-अध्ययन का संतुलित साधन आवश्यक है।

अन्धंतमः प्रविशन्ति येविद्यामुपासते।
ततो भूय इव ते तमो य उ विद्यायां रताः।। ९।।
अन्यदेवाहुर्विद्ययान्यदाहुरविद्यया।
इति शुश्रुम धीराणां ये नस्तद्विचचक्षिरे।। १०।।
विद्यां चाविद्यां च यस्तद्वेदोभयं सह।
अविद्यया मृत्यं तीर्त्वा विद्ययामृतमश्नुते।। ११।।

उपर्युक्त तीनों मंत्रों के माध्यम से समझाया गया है कि केवल पूजा या केवल शास्त्र अध्ययन पर्याप्त नहीं है। बल्कि इन दोनों का समन्वय आवश्यक है। यहाँ उपनिषद् कहता है कि मात्र आत्म ज्ञान या आध्यात्मिक ज्ञान से मुक्ति नहीं मिलती और न ही मात्र सांसारिक कर्म और भौतिक ज्ञान से। इसलिए हमें विद्या और अविद्या दोनों का समन्वय करना चाहिए। विद्या अर्थात् सांसारिक कर्म और भौतिक ज्ञान के द्वारा संसार का निर्वाह होता है और अविद्या अर्थात् आध्यात्मिक ज्ञान के द्वारा आत्मज्ञान प्राप्त होता है। जो साधक आचरण, भक्ति और ज्ञान इनमें संतुलन स्थापित कर चलता है वह अविद्या से मृत्यु को पार कर के विद्या से अमरत्व प्राप्त कर लेता है। आगे तीन मंत्र हमें सावधान करते हैं। मंत्र संख्या १२ में कहा है कि जिसकी उपासना करेंगे वैसे ही बनेंगे -

अन्धं तमः प्रविशन्ति येऽसम्भूतिमुपासते।
ततो भूय इव ते तमो य उ सम्भूत्यां रताः। १२।।

सम्भूति का अर्थ है जो बना है अर्थात् हिरण्यगर्भ (कार्य ब्रह्म) और असम्भूति का अर्थ है जो बना नहीं है अर्थात् प्रकृति (कारण ब्रह्म)। कुछ लोग इस मंत्र का गलत अर्थ निकाल कर कहते हैं कि हिन्दू धर्म में मूर्ति पूजा का निषेध है, जबकि यह तर्क निराधार है।

प्रकृति की उपासना करने से साधक उसी में बँधा रहता है, और हिरण्यगर्भ की उपासना करने पर योग शक्ति तो मिलती है, लेकिन जन्म-मरण का चक्र समाप्त नहीं होता। आत्मिक दृष्टि से हम उसी के समान हो जाते हैं जिसकी उपासना करते हैं। जैसे पैतृक सम्पत्ति पर अधिकार केवल वारिस का होता है, वैसे ही साधना द्वारा उपास्य का ऐश्वर्य साधक को मिलता है। इसलिए यदि केवल हिरण्यगर्भ या केवल प्रकृति की उपासना की जाए तो मुक्ति नहीं मिलती। मंत्र १३ कहता है कि दोनों की उपासना का समन्वय करने से साधक को अपेक्षाकृत श्रेष्ठ फल प्राप्त होता है, यद्यपि अंतिम लक्ष्य ब्रह्मलोक ही है।

अन्यदेवाहुः सम्भवादन्यदाहुरसम्भवात् ।
इति शुश्रुम धीराणां ये नस्तद्विचचक्षिरे।। १३।।

यहाँ गुरु अपने शिष्य से कह रहे हैं कि 'उपनिषद्' परम्परा विद्या है। यह विद्या ईश्वर से आरम्भ होती है। प्रकृति की उपासना करेंगे प्रकृतिमय होंगे। हिरण्यगर्भ की उपासना करेंगे तो योग शक्ति मिलेगी लेकिन संसार में फँसे रहेंगे। भोग के प्रति ये दोनों उपासनायें-हिरण्यगर्भ और प्रकृति एक ही प्रकार के पुरुषार्थ हैं। इसलिए कहा गया कि इनका समुच्चय करें। केवल सांसारिक जीवन (धर्म, अर्थ और काम) में न फँसे रहें बल्कि आध्यात्मिक साधना (मोक्ष) को साथ लेकर चलना ही आदर्श है। इस लोक की ही सुख कामना के साथ परलोक भी अच्छा मिले उसका प्रयास होना चाहिए। केवल परलोक के बारे में ही न सोचें बल्कि इस लोक पर भी ध्यान रखें। केवल इस लोक के बारे में सोचेंगे तो परलोक बिगड़ जायेगा और परलोक के बारे में सोचेंगे तो यह लोक बिगड़ जायेगा। इसलिए समुच्चय करें। दोनों को ठीक करें-

सम्भूतिं च विनाशं च यस्तद्वेदोभयं सह।
विनाशेन मृत्युं तीर्त्वा सम्भूत्यामृतमश्नुते।। १४।।

उपनिषद् कहता है कि जो साधक सृष्टिकर्ता (हिरण्यगर्भ/कार्य ब्रह्म) और संहारक (प्रकृति/कारण ब्रह्म) दोनों को जानता है, वह हिरण्यगर्भ की उपासना से मृत्यु को पार कर लेता है और प्रकृति की उपासना से अमरत्व प्राप्त करता है। यही विद्या और अविद्या का समन्वय है। उपनिषद् सिखाता है कि सांसारिक प्रयत्न और आध्यात्मिक साधना दोनों आवश्यक हैं। जब हम कर्म (अविद्या) से जीवन को सँभालते है और ज्ञान (विद्या) से आत्मा की ओर बढ़ते हैं, तब जीवन सफल होता है। मंत्र ९ से १४ तक यही बताते हैं कि पूजा, उपासना और शास्त्र-अध्ययन का संतुलन एक आदर्श गृहस्थ जीवन का निर्माण करता है। सच्चे साधक मृत्यु से भयभीत नहीं होते; वे अंत समय में ईश्वर का स्मरण करते हुए शांत मन से विदा लेते हैं। इस प्रकार विद्या और अविद्या का समन्वय मनुष्य को मृत्यु पर विजय और आत्मा की अमरता का अनुभव कराता है -

हिरण्मयेन पात्रेण सत्यस्यापिहितं मुखम् ।
तत्त्वं पूषन्नपावृणु सत्यधर्माय दृष्टये।। १५।।

ईशावास्योपनिषद् का यह मंत्र सूर्यदेव से प्रार्थना है। हे प्रभो! आपका कल्याणमय मुख सुनहरी आभा से ढका हुआ है,कृपा करके उसे हटाएँ ताकि साधक आपके दिव्य स्वरूप का दर्शन कर सके। यह याचना नहीं, बल्कि साधक का अधिकार है, क्योंकि उसने जीवन में धर्म और साधना का पालन किया है। वेदान्ताचार्यों का मत है कि उपनिषद् के अंतिम चार मंत्र अत्यंत महत्त्वपूर्ण हैं। इन्हें कंठस्थ करके मरणासन्न व्यक्ति के सम्मुख अवश्य पढ़ना चाहिए। यहाँ सूर्य के बाह्य भौतिक स्वरूप से आगे बढ़कर उसके पीछे की परम दिव्य सत्ता के दर्शन की आकांक्षा की गई है। मृत्यु के निकट

पहुँचा साधक चाहता है कि जीवन के अंतिम क्षणों में उसे परम पुरुष का प्रत्यक्ष अनुभव हो। यह मंत्र सूर्य के भौतिक रूप से परे स्थित परमात्मा के साक्षात्कार और मृत्यु के समय उनकी कृपा प्राप्त करने की साधक की प्रार्थना है-

पूषन्नेकर्षे यम सूर्य प्राजापत्य व्यूह रश्मीन् समूह। तेजो यत्ते रूपं कल्याणतमं तत्ते पश्यामि योऽसावसौ पुरुषः सोऽहमस्मि।। १६।।

इस मंत्र में साधक सूर्यदेव से प्रार्थना करता है कि उसके भौतिक स्वरूप के पीछे स्थित परमात्मा का दर्शन मिल सके। जैसे शरीर नश्वर है और उसके पीछे जीवात्मा विद्यमान रहती है, वैसे ही सूर्य के पीछे भी परम दिव्य सत्ता स्थित है। एक साधक जिसने जीवन भर धर्म, साधना, वेद पाठ और यज्ञादि कर्म किए हैं, वह मृत्यु के समय यह अधिकार पूर्वक कहता है कि हे प्रभु! मैं आपसे अभिन्न हूँ, कृपाकर मुझे अपने साक्षात्कार का अवसर दें। मृत्यु के समय यदि साधक को यह अनुभव न मिले तो उसे श्रेष्ठ लोकों की प्राप्ति नहीं हो पाती।

मरणासन्न अवस्था में जब दृष्टि लुप्त हो जाती है, तब भी श्रवण शक्ति बनी रहती है। इसलिए परंपरा है कि ऐसे समय हरिनाम व भजन गाकर उस साधक को परमात्मा का स्मरण कराया जाए। उपनिषद् का यह १७ वाँ मंत्र स्मरण कराता है कि अंतिम क्षणों में अपने शुभ कर्मों को याद करो, ताकि जीवन के पाप कर्म उभर न सकें और आत्मा परम धाम की ओर अग्रसर हो सके। यह मंत्र मृत्यु के क्षण में परमात्मा के दर्शन की प्रार्थना और शुभ कर्मों के स्मरण का महत्व प्रतिपादित करता है -

वायुरनिलममृतमथेदं भस्मान्तं शरीरम्।
ॐ क्रतो स्मर कृतं स्मर क्रतो स्मर कृतं स्मर।। १७।।

हमने जीवन भर जो कर्म किये हैं उनका मूल रूप मन रखता है और मन का जो मूलभाव है उसके अनुरूप वह नई सृष्टि तैयार कर देता है। मरने के समय वही होता है। बुरे कर्मों को साधक ने तीर्थयात्रा करके, भजन-पूजा, दान आदि करके शान्त किया होता है। फिर भी वह अपने मन को शान्त करने के लिए मन को बार-बार कह रहा है कि अब तू अपने शुभ कर्मों को स्मरण कर। अन्तिम समय पर हमारे जो भाव रहेंगे उसी के अनुसार हमारी यात्रा आगे रहेगी। उत्तम योनि में यदि जनम लेना हो तो अपने किये हुए अच्छे कर्मों का स्मरण करें, अब साधक की जब सभी इन्द्रियाँ शिथिल हो गई हैं और हिलने डुलने की उसमें क्षमता नहीं बची है और अपनी शय्या पर है तब वह मन ही मन निम्न मंत्र के माध्यम से अन्तिम प्रार्थना अग्नि देवता से करता है-

अग्ने नय सुपथा राये अस्मान् विश्वानि देव वयुनानि विद्वान्।
युयोध्यस्मज्जुहुराणमेनो भूयिष्टां ते नमउक्तिं विधेम्।। १८।।

इस मंत्र में साधक अपनी अंतिम प्रार्थना अग्निदेव से करता है। वह कहता है हे अग्निदेव! जीवन भर मैंने आपकी उपासना और आहुतियाँ दीं, पर अब अंग निश्चेष्ट हो चुके हैं, प्राण विलीन हो रहे हैं। मैं विधिवत् पूजा नहीं कर पा रहा, केवल मन ही मन आपको प्रणाम करता हूँ। कृपाकर मुझे परलोक की ओर ले चलें। यह उपनिषद् यहाँ जीवन की दो धारायें स्पष्ट करता है। एक सभी में ईश्वर का रूप देखें दूसरा पूजा के रूप में कर्म करें। यह दोनों यदि हम नहीं करते हैं तो हम बार-बार जन्मेंगे और मरेंगे। जो आत्मज्ञान के पथिक हैं और जो कर्म मार्ग से परिश्रम और शुभ कर्म करके जीवन जीते हैं उनके बारे में बताया गया कि जीवन कैसा होना चाहिए। आत्मज्ञानी के मरने के बाद उनका कहीं आना जाना नहीं होता है क्योंकि वे सर्वत्र व्याप्त हो जाते हैं। लेकिन जो कर्ममार्ग पर चलते हैं उनके अन्तिम छणों का यहाँ वर्णन किया गया है और दिखाया गया है कि जीवन कैसे धन्य बनता है। यहाँ जो वर्णन किया गया है वह साधारण लोगों का जीवन नहीं है। बल्कि उच्च कोटि के साधक का अन्तिम क्षण, उसकी अन्तिम प्रार्थना कैसी होती है और इहलीला समाप्त होने के बाद उसकी कहानी कैसे चलती है, उसका अतिसुन्दर वर्णन यहाँ आया है।

मनुष्यों के प्रति वेद भगवान् का पवित्र आदेश है कि अखिल विश्व ब्रह्माण्ड में जो कुछ भी यह चराचर जगत् तुम्हारे देखने-सुनने में आ रहा है, सब का सर्वाधार, सर्वनियंता, सर्वाधिपति, सर्वशक्तिमान् सर्वज्ञ, सर्वकल्याण गुण स्वरूप परमेश्वर से ही व्याप्त है। सदा सर्वत्र उन्हीं से परिपूर्ण है। (गीता ६/४) इसका कोई भी अंश उनसे रहित नहीं है। (गीता१०/३६-४२) यों समझकर उन ईश्वर को निरन्तर अपने साथ रखते हुए सदा सर्वदा उनका स्मरण करते हुए ही तुम इस जगत् में ममता और आसक्ति का त्याग एवं केवल कर्तव्यपालन के लिए ही विषयों का यथाविधि उपभोग करो। अर्थात् विश्वरूप ईश्वर की पूजा के लिए ही कर्मों का आचरण करो। विषयों में मन को मत फँसने दो, इसी में ही तुम्हारा कल्याण है। (गीता २/६४, ३/६, १८/४६) वस्तुतः ये भोग्य पदार्थ किसी के भी नहीं है। ये सब परमेश्वर के हैं और उन्हीं की प्रसन्नता के लिए इनका उपयोग करना चाहिए। मनुष्य प्रमाद में भूल से ही इनमें ममता और आसक्ति कर बैठता है।

अहम् पितरं सुवे, अहं सुवे पितरम्

परम्परा

डॉ० मधुसूदन उपाध्याय
वैज्ञानिक अधिकारी
राष्ट्रीय सामरिक संसाधन सुरक्षा परिषद् लखनऊ

संपर्क
मो. 91701 96999

ऋग्वेद के दशम मंडल 'देवी सूक्त में स्वयं देवी का वचन है-पितृ तत्त्व नित्य है। यह कोई अनुपस्थित की क्षणिक उपस्थिति नहीं है। यह अस्तित्व के बाद का काव्यात्मक या भावात्मक नैरन्तर्य नहीं बल्कि यह नित्य उपास्य प्राण का ही स्वरूप है। भारतीय जीवन उत्सवजीविता, उत्सवधर्मिता से परिपूर्ण है। इसमें जरा डूब कर देखें तो पितृ पक्ष हो या सर्वपितृ अमावस्या यह कोई शोक का विषय नहीं है। यह भी एक त्योहार है। पितर हों या कुल देवता यह वही नाद-बिन्दु-रक्त-डीएनए की एक दृश्य-अदृश्य डोर (कड़ी) है जो कभी टूटती नहीं, एक अजस्र धारा है।

हमारे पिता बड़े डील-डौल के स्वामी थे, हमारी तुलना में। मैं बैठा होता हूँ लोगों को संदेह हो ही जाता है कि पिता बैठे हैं। हमारे पितामह बड़े प्रशासनिक अधिकारी रहे, बोलना उनका काम नहीं था। मुझे अपने काम में बोलना पड़ता है, जिन लोगों ने बाबा को सुना है, वह कहते हैं कि वही तो बोलते हैं, आपके मुख से। यह निरन्तरता ही है पितृ तत्त्व।

एक बार दक्खिन के 'कैताहा' खेतों में मजदूर पानी से सिंचाई कर रहे थे। हमारे यहाँ खेतों के भी नाम हैं कैताहा, कुरना, इटहवा, बड़की बारी, घुग्घा, कालीस्थान, पनपियहवा और तेतरी आदि। यह भूमि से नाभिनाल बद्ध होने का तरीका भी, प्रमाण भी। कैताहा में ट्यूबेल और इंजन दोनों चल रहे थे। कुछ मशीन की समस्या थी। मैं और मेरा छोटा भाई डीजल और कुछ रिंच, स्क्रू ड्राइवर वैगेरह लेकर खेतों की तरफ पैदल ही जा रहे थे। हमारे खेतों से ठीक पहले कुछ शूद्र महिलाएँ मरणा अशौच स्नान कर ही थीं। पम्पिंग सेट चल रहा था, बलुई मिट्टी में जलधारा गड्ढे बना देती है, 'चौना' कहते हैं उसे पूर्वांचल में। दो-चार केला गाछ बिना लगाए ही अपने आप उग आए शीशम के वृक्षों के बीच का 'चौना' ही महिलाओं के स्नान के लिए जगह थी। वहीं पर महिलाएँ शुद्धि हेतु स्नान करने के लिए एकत्रित हुई थी। नजदीकी रक्त सम्बन्धी स्त्रियाँ कुल कुटुम्ब में मृत्यु के बाद गाँव के बाहर जाती हैं स्नान के लिए। यह अनुशासन गाँवों में सभी वर्णों पर लागू होता है ।

एक युवा स्त्री बुदबुदाई कि अरे बैठ जाओ, इधर ही दो लड़के आ रहे हैं। एक वृद्ध स्त्री का स्वर गूँजा "हरिहर बाबा के नाती लोग हवें, मर जइहें लेकिन इधर ना तकिहें।" यह है आदित्य रुद्र वसु तत्त्व। यह है पितरों पूर्वजों की कमाई। यह विश्वास यह समझ हमारे इस देह की कमाई है क्या? यह क्या एक जन्म में हासिल किया है क्या ? यहाँ से समझ आती है पितृ तत्त्व नित्यता। यहाँ से आता है-रक्त में साहस, साधन धैर्य। यहाँ से खड़ी होतीं है रोमावलियाँ।

देह अनित्य है पर स्मृति नित्य है, जल का स्वरूप ही तो बदल सकता है, अधिक से अधिक भाप बन कर उड़ेगा। फिर संघनित होकर बरस जाएगा। मरण तो है ही नहीं। गुरुदेव बारम्बार कहते हैं कि दुनिया कहती है कि मृत्यु अन्तिम सत्य है, पर मैं कहता हूँ कि वह सबसे विश्वसनीय झूठ है। अभी सर्वपितृ अमावस्या आई और चली गई है। एक बार जरा इन पर्वों के क्रम पर ध्यान से देखें तो इनमें एक अनुपम रहस्य का सूत्र दिखाई पड़ता है। हम नवरात्रि में शक्ति के संचय और आद्या प्रकृति की उपासना से ठीक पहले गुरु पूर्णिमा को गुरु, नाग पंचमी को नाग, ऋषि पंचमी को ऋषि और पितृ

पक्ष में पितरों की संतुष्टि हेतु, तृप्ति हेतु उन्हें पूजन कर ही देवी भगवती की ओर मन को बढ़ाते हैं। प्रकृति का यही आरोही क्रम है। शम्भवोपाय, आणवोपाय का रहस्य यही है कि गुरु, नाग, ऋषि, पितर का द्रोही शक्ति तत्त्व को प्राप्त नहीं कर सकेगा। अश्विन अमावस्या का रहस्य समझें, 'अमा' महाकला है। गिनती में सोलहवीं पर सोलहों कलाओं की शक्ति इसमें शामिल है। यह अमावसी सूर्य-चन्द्रमा संगम है। यही कुहू है। कभी हमारे पूर्वपुरुष इस आश्विन मास की अमावस की पूरे वर्ष प्रतीक्षा करते थे कि सविता की गोद में बैठे यम के संग आनन्दित होते अपने वायव्य पितरों से अपने मन की बात घर का दुःख-सुख कहेंगे। वंशवृद्धि के लिए आशीष लेंगे और यह तो पक्की हो रही है कि अग्नि से आहुतियाँ लेने वाले हमारे पितर हमारी प्रार्थनाओं को सुनते भी हैं। तीनों लोकों को जोड़ने वाली रज्जु दर्भ है, कुशासन पर बैठकर जो सोम प्रेमी पितरों को अर्पित किया जाता है, उसे वह बड़े प्रसन्न मन से ग्रहण भी करते हैं। समय की सीमा को देखें तो हम आप भी आने वाली न जाने कितनी पीढ़ियों के पितर ही तो है। हमने समय परिधि का जिक्र किया है। हमारी आयु का एक कारक निर्धारक तत्त्व चन्द्रमा और पृथ्वी का परिक्रमा परिपथ भी है। एस्ट्रोनामी में अर्थ मून कैरैक्टिरस्टिक डिस्टेंस नाम से एक यूनिट होती है, यह चन्द्रमा की कक्षा के आधे परिणाम को दर्शाती है। इस पर अश्विन कृष्ण पक्ष में तनिक नजर रखें विज्ञानी लोग। यह चन्द्रमा का प्राणायाम है। पितरों की कई कोटियाँ इस आयाम पर दृष्टि रखती हैं।

यह पितृ पक्ष खगोल समझने की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण हो सकता है। शतपथ ब्राह्मण कहता है कि 'विभुः उध्वभागे पितरो वसन्ति।' विभु अर्थात् चन्द्रमा के दूसरे हिस्से में पितरों का निवास है। चन्द्रमा का दक्षिण पक्ष जो हमसे ओझल है जो यमालय है। आज के विज्ञान की दृष्टि में केनिस मेजर और माइनर के विकिरण चन्द्रमा के इस ओझल पट पर पड़ते हैं। अथर्व की मानें तो यह दोनों सूर्य-श्वान ही श्राद्ध हवि के अन्तिम भोक्ता हैं। 'श्यामश्च त्वा न सबलश्च प्रेषितौ यमश्च यौ पथिरक्षु श्वान।' मनुष्यों के प्राणों का चरम आयाम मुक्ति, मोक्ष अथवा निर्वाण ही तो है। पितरों और श्राद्ध तत्त्व को समझने की दृष्टि से तनिक ज्योतिष में उतरते हैं। द्वादश भाव कालपुरुष विष्णु का पाद है। हम सब जानते हैं कि पितरों की मुक्ति ने निमित्त विष्णुपद गया में श्राद्ध किए जाते हैं। मोक्ष विशुद्ध रूप से नारायण के अधिकार में है। शाक्त और शैव गणपत्य सम्प्रदायों के भी लोग इसी अभिमत को मानते हैं। काशी में अन्नपूर्णा से भिक्षा माँगकर भगवान् शिव भी जिस तारक मंत्र को बाँटते फिरते हैं वह भी 'नारायण' अथवा 'राम' नाम ही है। अनन्त शेषशायी विष्णु सो रहे हैं और कमला उनके चरण दबा रही हैं। यह मोक्षकारक महानारायण निर्वाण पुरुष कैसे सोते हैं? कहाँ सोते हैं? यह महानारायण का सिर बद्री में है। महाराज इसलिए इस तीर्थ को कपाल गया कहते हैं। कहीं कपालतीर्थ कहीं बद्रीकपाल। यह ज्ञात अज्ञात सभी पितरों की मुक्ति के लिए प्रार्थना करते हैं। मोक्ष नारायण की नाभि-नाभिगया नैमिशारण्य में हैं।

कलिकाल का तीर्थोत्तम पाद सब जानते हैं 'विष्णुपद बोध गया' बृहदारण्यक कहता है "प्राणा वै गयाः"। प्रकारान्तर से पिण्डदान अथवा श्राद्ध अपान में प्राण की, प्राण में प्राण की और प्राण में अपान की आहुति है। 'अपाने जुह्वति प्राणं।' रहस्यदर्शी योगियों की शब्दावली कहती है कि गया ही, गया में पिण्डदान करती है। बचपन में लोग 'गया गया गया'। इसका अंग्रेजी अनुवाद पूछते थे चुहल के लिए। इसका असली अर्थ तो केवल योगियों के पास है। प्राण, अपान, व्यान, उदान, समान। ये पंचप्राण ही पांच पितर हैं। प्राण ही प्राणायाम से इन पंचप्राणों का उद्धार करता है। यही है 'गया, गया, गया'।

पितृपक्ष शरद का प्रारम्भ ही है। कभी शरद हेमन्त शिशिर जीवन के लिए कठिन होते थे। शरद में सोमतत्त्व अग्नितत्त्व को अपमर्दन करना आरम्भ करता है। यह वैवस्वत यम का कालप्रभात है। शरद् (शृहिंसायाम्) कहते हैं न अपमर्दन करना आरम्भ करता है। यह वैवस्वत यम का कालप्रभात है। शारद् शृहिंसायाम्) ऋतु (ऋ गतिप्रापण्योः) कहते हैं न। इसलिए भी ऋषियों ने प्राण तत्त्व की चिंता की होगी और काक, श्वान पिपीलिका, ब्राह्मण में गौ इस चिंता के क्यों न अंग हो। शरद में आयु की चिन्ता सहज रही होगी इसलिए ही वैदिक ऋषि प्रार्थना करते हैं जीवेम् शरदः शतम्। पितरों की तृप्ति से शरद में प्राण को बल मिलेगा। आप श्राद्ध के दान वाली वस्तुओं पर गौर करें तो तिल, जौ, घी, जूता, कम्बल। ऐसा लगता है कि शीत व शरद की तैयारी है। जगत् में ताप का एक चक्र है। निषेचन के समय शरीर गर्म मृत्यु के समय ठंढा। प्राण ही अग्निसोमात्मक है। ऊष्म उर्ध्वगामी अग्नि जो अवाची से उदीची की तरफ गति करते हैं। शीत, सोम जिनकी गति उदीची से अवाची की तरफ है जैसे देवता नेत्र भोग से तृप्त हो जाते हैं, वैसे ही आवाहन के बाद पितृगण भी सुसंस्कृत व्यंजनादि को देख कर तृप्त हो जाते हैं। बीते आश्विन अमावस्या हम सभी भारतवंशियों के पितृ तृप्त हुए, वरुण व ऋषि तृप्त हुए।

नित्यानन्द प्रभु

भक्तिपथ

डॉ० अर्चना शर्मा
पीएच.डी., डी.लिट्
भारतीय दर्शन परम्परा, विशेषकर
श्री अरविन्द दर्शन की विशेषज्ञ
शोध पत्रिका 'प्रज्ञा',
'आनन्दवार्ता' एवं 'नवनीत'
तथा अन्य पत्र-पत्रिकाओं में
लेखों का प्रकाशन
अनेक ग्रंथों का प्रणयन

संपर्क
मो. 8171502992

चैतन्य सम्प्रदाय में नित्यानन्द महाप्रभु को संकर्षण का अवतार एवं चैतन्यदेव से अभिन्न उनके नाम कीर्तन के अनन्य सहयोगी, प्रचारक, विचार-प्रसारक एवं परम भक्त के रूप में मान्यता मिली। उनका जन्म वीरभूमि जिले के एकचक्रा ग्राम में ब्राह्मण कुल में मुकुन्द ओझा एवं पद्मावती के घर में हुआ था। उनके पिता को घड़ाई पण्डित कह कर बुलाया जाता था। उनका नाम कुबेर रखा गया। परन्तु जनश्रुति है कि एक भक्त संन्यासी बालक कुबेर को माता-पिता से भिक्षा में माँगकर ले गया तथा उनका नाम बदलकर उन्हे नित्यानन्द कहना शुरू किया। घर छोड़कर जाने के बाद नित्यानन्द भजन, प्रभुवन्दन एवं तीर्थों में निरन्तर भ्रमण करते रहे। उन्होंने बंगाल से आरम्भ कर समस्त भारतवर्ष यानि पूर्व से पश्चिम तथा उत्तर से दक्षिण के अधिकांश नगरों, ग्रामों, मन्दिरों और मठों का दर्शन एवं उनके साथ सत्संग किया। प्रमुख आश्रमों के विविध ग्रंथालयों में बैठकर उन्होंने धर्मग्रंथ पढ़े और अगाध ज्ञान प्राप्त किया। श्रीकृष्ण की लीलाओं को हृदयंगम करके वे उनका वर्णन करते थे। कृष्णदास कविराज ने चैतन्य चरितामृत के आदि लीला के द्वितीय परिच्छेद में चैतन्य तत्त्व की व्याख्या करते हुए अनन्त अवतार एवं चैतन्य से अभिन्न नित्यानन्द की भावपूर्ण वन्दना की है।

वन्देहमन्ताद् भुतैरक्य श्री नित्यानन्दमीश्वरम्।
यस्येच्छया तत्स्वरूपमज्ञेनापि निरूप्यते ।।

जिनकी कृपा से शास्त्रविहीन अर्थात् शास्त्र को न जानते हुए भी व्यक्ति उनके तत्त्व का निरुपण कर सकता है। उस अनन्त परम ऐश्वर्यशाली ईश्वर श्री नित्यानन्द प्रभु को मैं नमस्कार करता हूँ। कविराज के ज्ञानचक्षु सर्वदा श्रीराधाकृष्ण एवं संकर्षण की अद्भुत लीलाओं को प्रत्यक्ष देखते, एवं अन्तः प्रज्ञा एवं ऋतचैतन्य अर्थात् दिव्य दृष्टि से देखी लीलाओं की सहज अभिव्यक्ति अपनी लेखनी द्वारा-'बहुजन हिताय बहुजन सुखाय' उनका साध्य बन गया। भक्ति निश्चय ही अपने आप में साधन भी है और प्रेमपूर्वक प्राप्त उपलब्धि को कृष्ण चैतन्य के भक्तों को समान रूप से उसका वितरण करना ही भक्ति का साध्य भी है।

सूरदास का कथन है कि शब्दशक्ति से बाधित व्यक्ति तो उस आनन्द को व्यक्त नहीं कर पाता -

अविगत गति कछु कहत न आवै,
ज्यों गूंगे मीठे रस अंतरंग ही भावै।।

परन्तु इन भक्त संतों की पाँचों ज्ञानेन्द्रियों के साथ ही इनका मन और अन्तःचेतना भी निरन्तर राधा-कृष्ण एवं प्रेमाभक्ति के कारण ध्यान-मनन एवं चिन्तन से क्रमशः ऊपर उठ कर नृत्य की मनमोहन मुद्राओं द्वारा पूरे भक्त-मंडल को भी माधुर्य रस से ओतप्रोत कर देती थी। अनुभूति एवं अभिव्यक्ति दोनों एक ही तत्त्व के दो पक्ष हैं।

सर्वअवतारी कृष्ण, स्वयं भगवान्।
तोहार द्वितीय देह, श्री बलराम ।।

भगवान् की प्रत्येक लीला में अनन्त उनके सहभागी हैं। प्रेमाभक्ति में प्रेमास्पद के प्रति प्रगाढ़ता, स्नेह, मान, राग-अनुराग एवं भाव द्वारा बढ़ती ही जाती है। नित्यानन्द को अवधूत के रूप में जाना जाता है, तान्त्रिक संन्यासी अवधूत कहलाते हैं। जब तक इच्छा हो वे घर से दूर रह कर भजन, कीर्तन,

साधना एवं भ्रमण करते हैं। फिर से गृहस्थी बसाने के लिए वे अपने जीवन के उत्तरार्ध में पाणिग्रहण करके पत्नी तथा बच्चों के साथ जीवन व्यतीत करते हैं। चैतन्यदेव से आयु में बड़े होने पर भी उन्होने उनके परामर्श से नित्यानन्द महाप्रभु ने भी विवाह कर लिया था। उनके वस्त्र भी बहुमूल्य होते थे एवं उनके आभूषण भी

यो विलंघ्याश्रमान् वर्णानात्मन्येव स्थितः पुमान्।
अतिवर्णाश्रयी योगी अवधूतः स उच्यते ।।

श्री सार देशानन्द ने श्री चैतन्य महाप्रभु नामक ग्रंथ में लिखा है कि भ्रमण करते हुए भी नीलकंठ महादेव का विग्रह एवं तारामंत्र जिसको बजाकर वे गाया करते थे, उन्हें नित्यानन्द के वंशजों ने अपने 'खरदा' के निवास स्थान पर पूजाघर में रखा है प्रतिदिन अभी भी उनके विग्रह के साथ ही उसकी पूजा होती है। बंगाल और ब्रज के अनेक मंदिरों में श्रीकृष्ण राधा के साथ ही हमें दिव्य युगल के साथ ही निमाई और निताई के विग्रह ऊपर हाथ उठाए हुए कीर्तन की मुद्रा में दिखाई देते हैं।

द्वापर के बाद कलयुग में भी संकर्षण ने कृष्ण चैतन्य से पहले जन्म लिया। चैतन्य से आठ वर्ष बड़े भाई नवद्वीप से बाहर निकल कर संन्यासी बन गए थे, जिनका नाम विश्वरूप है। आयु में निताई विश्वरूप के बराबर थे। तीर्थ भ्रमण करते हुए उनकी शंकरारण्य नाम के संन्यासी से भेंट हुई। आयु के समान ही दोनों के स्वभाव भी एक जैसे थे। तीर्थों में भ्रमण करते हुए निताई जब नवद्वीप पहुँचे तो वहाँ सर्वप्रथम श्रीनिवासाचार्य से उनकी भेंट हुई जो नवद्वीप में उज्ज्वल रसमयी भक्ति-सम्पत्ति का प्रतिदिन प्रचार-प्रसार कर रहे थे। 'प्रेमः पुमर्थो महान्' ही उनका सर्वस्व था। अपने अनेक भक्त अनुयायियों के साथ केवल राधाकृष्ण की लीलाओं की चर्चा, उन परम तत्त्व के संश्लिष्ट एक प्राण, दो देह के अभेद के रहस्य जानना, समझना ही श्रीनिवास का कार्य था और कीर्तन उस प्रेम की परम-सहज आनन्द-अभिव्यक्ति। निताई जब उनसे मिले तो आग्रहपूर्वक श्रीनिवास उन्हें अपने घर ले आये। नित्यानन्द की ऊर्ध्व चेतना जो रस विग्रह भगवान् के प्रति सर्वोच्च भक्तिसम्पन्न थी उसको देख परख कर श्रीनिवासाचार्य को बहुत संतुष्टि मिली।

दोनों के बीच परस्पर चर्चा में ही नित्यानन्द ने ब्रज की लीला का वर्णन करते हुए कहा-ब्रज में श्रीकृष्ण श्यामवर्ण के सुन्दर सलोने मुख के ऊपर मोरपंख लगाकर, पीताम्बर धारण कर जब अपनी मुरली से सातों स्वरों से विविध रागों को छेड़ते हैं तो सारे ब्रजवासी उनके वेणु के सम्मोहन से मोहित होकर बेसुध से होकर उसी दिशा में खिंचे चले आते थे। 'रन्धान् वेणोरधरसुधया पूरयन गोपवृन्दैः' की नित्यानन्द ने ऐसी व्याख्या की कि श्रीनिवास बेसुध हो गए। गोचारण करते हुए मध्याह्न में ब्रज के छोटे-छोटे गोपग्वालों के साथ एक बड़ा गोलाकार वृत्त बना कर दधि, ओदन अचार और मिष्टान्न परस्पर बाँटकर खाते हुए ब्रह्मा को भी मोहित कर दिया वे अज्ञानवश उनके गाय, बछड़ों को चुरा कर ले गए परन्तु तत्क्षण वे सारी गाय व बछड़े वैसे ही वहाँ पर चरने लगे। श्रीवास पर भी निताई की लीला वर्णन शैली की रोचकता का गहराई तक प्रभाव हुआ तो उन्हें लगा कि वे स्वयं ब्रज में हैं। नित्यानन्द ने पटाक्षेप करते हुए कहा कि भगवान् के सखा सुबल, मधुमंगल, रैता, पैता, मना और मनसुखा इस ऐश्वर्य लीला को जान भी न पाए। खाते रहे वैसे ही उन गोपाल कृष्ण की मधुर लीलाओं के प्रेमरस का आस्वादन जो ब्रजवासियों ने किया था वही नित्यानन्द में श्रीवास एवं उनके अनुयायियों को अपनी ओजस्वी वाणी से कराया।

चैतन्य से आठ वर्ष पूर्व जन्मे नित्यानन्द का जन्म माघ शुक्ल त्रयोदशी को हुआ था। नवद्वीप में जन्में श्रीगौरांग महाप्रभु से उनका परिचय शीघ्र ही प्रगाढ़ता में परिणत हो गया। भक्ति और नाम संकीर्तन द्वारा राधाकृष्ण की लीलाओं का श्रवण कराने वाले निमाई और निताई एक प्राण और दो देह हो गए, जिनका अनुसरण पूरी भक्त मंडली करने लगी। श्रीनिवास की भक्तिमति पत्नी मालिनी देवी अपनी सन्तान के समान ही निताई की देखभाल करने लगी। यद्यपि गौरांग व नित्यानन्द को क्रमशः निमाई और निताई नाम चैतन्य महाप्रभु की माता जी शची देवी ने दिया था।

भाव एवं महाभाव कान्ता प्रेम अथवा मधुरा भक्ति में ही प्रकट होते हैं। 'उज्ज्वलनीलमणि' में मधुरा भक्ति की व्याख्या करते हुए कहा गया है –

तयोरप्युभयोर्मध्ये राधिका सर्वाधिका।
महाभाव स्वरूपेयं गुणैरति वरीयसी।।

भगवान् श्रीकृष्ण को विविध भावों में वृषभानुनन्दिनी जिस प्रकार प्रेमरस का आस्वादन कराती हैं, वह उनके चिन्मय विग्रह का लौकिक प्रकाशन है। समस्त ब्रजवासियों एवं संसार के असंख्य भक्तों के प्रिय नन्दनन्दन की विविध भावों से आनन्दवर्धन करने वाली राधा ही ब्रजवासियों की आराध्या है। उनकी विशिष्ट अष्ट सखियाँ ललिता, विशाखा, चित्रा, सुदेवी, रंगदेवी, तुंगभद्रा, इन्दुलेखा

एवं चंपकलता में भी ललिता, विशाखा अपरिहार्य हैं क्योंकि उनकी प्रगाढ़ प्रेममयी निकुंज-लीला में भी दोनों उपस्थित रहती थीं।

नित्यानन्द के नवद्वीप जाने से पहले ही चैतन्यदेव ने उस अंचल में मायापुर सहित अनेक छोटे बड़े ग्रामों और नगरों में हरिनाम संकीर्तन की धूम मचा दी थी। निन्यानन्द ने बहुत सारे लोगों से चैतन्य एवं उनके ज्ञान की भक्ति एवं हरिनाम संकीर्तन के आन्दोलन के बारे में सुना था। वराणसी तक चैतन्य के नाम संकीर्तन की धूम मची हुई थी। जैसे ही महाप्रभु चैतन्य नित्यानन्द से मिल दोनों परस्पर प्रगाढ़ आलिंगनबद्ध हुए। उनके रोम पुलकित हो उठे और नयनों से प्रेमाश्रु बरसने लगे, यह देखकर भक्तों को भी असीम आनन्द हुआ।

नित्यानन्द के नवद्वीप आगमन के समय गौरांग महाप्रभु अपनी माता एवं पत्नी विष्णुप्रिया देवी के साथ गृहस्थ जीवन यापन कर रहे थे परन्तु नाम संकीर्तन में रमे भगवान् की लीलाओं को अपनी व्याख्या द्वारा ज्ञानी भक्त एवं संतों को वितरित करना ही उनकी दिनचर्या का प्रमुख अंग था। मिलने पर चैतन्यदेव, नित्यानन्द को अपने घर ले गए, वहाँ शची देवी के दर्शन कर, चरणस्पर्श कर, माता कह कर पुकारा। अपने पुत्र का कुशल क्षेम जानकर विश्वरूप से नित्यानन्द की समानता देख कर उन्हें अपना विश्वरूप खोने का दुख भी मिट गया व उन्होंने दोनों को अपने घर पर ही कीर्तन, भजन एवं सत्संग करने का आदेश दिया। जिसके फलस्वरूप निमाई-निताई के साथ शची माता के घर में ही आनन्द महोत्सव प्रतिदिन होने लगा।

कीर्तन करते हुए उन्मत्त होकर नृत्य करते हुए चैतन्य देव बीच-बीच में आनन्द से मूर्च्छित हो जाते थे। इसलिए उन्हें गिरने से बचाने के लिए निताई उनके निकट ही बने रहते थे, उनके अग्रज बन कर। भक्तजन आते समय आवश्यक वस्तुएँ प्रचुर मात्रा में लाने लगे। इष्ट मित्रों, सम्बन्धी भक्तों की पत्नियों के साथ विष्णुप्रिया देवी भोजन इत्यादि के साथ ही भक्तों की हर प्रकार की सुख-सुविधा की व्यवस्था करतीं। वे देर रात तक व्यस्त रहतीं। वे गौरांग महाप्रभु रात्रि में भगवान् की कथा एवं राधाकृष्ण की लीलाओं का वर्णन भक्तों को सुनाते, निमाई उन लीलाओं के अन्तर्निहित तत्त्व को समझाते हुए रस में डूब जाते। अधिक भीड़ देख कर चैतन्य देव और नित्यानन्द ने श्रीनिवास के घर में उनके आंगन में एकान्त देख कर रात्रि का कीर्तन और प्रवचन भी करना आरम्भ कर दिया था। साथ ही गौरांग के आग्रह पर भक्त हरिदास के साथ मिलकर नित्यानन्द पूरे नवद्वीप में दीन-दुखियों को कीर्तन की महिमा बताते, यह भी कि नाम जप से जीवन के सारे दुख-ताप नष्ट हो जाएँगे, किसी प्रकार का अभाव नहीं रहेगा। इस प्रकार उस पूरे बंग समाज में चैतन्य की ख्याति फैल गई। दुखी जन सुखी हो गए। कीर्तन करते हुए प्रभु के साथ ही चैतन्य महाप्रभु की भी जय जयकार होने लगी, जिससे पुरातन कट्टरपंथी लोगों को बहुत ईर्ष्या हुई। नवद्वीप की रक्षा का भार लोगों ने जगन्नाथ एवं माधव को दे दिया था, वे ब्राह्मण होकर भी दुराचारी थे। उन्हें लोग जगाई और मधाई नामों से पुकारते थे। धर्म प्रचार और नाम संकीर्तन सुनने से उन्हें क्रोध आ जाता और वे दोनों असहज हो जाते। उन्होंने दुराचरण, मद्यपान कर लोगों को डराने-धमकाने की आदत बना ली थी। उन्हें यह जान कर कि उनके बहुत से दुष्ट साथी भी चैतन्य महाप्रभु के भक्त बन गए हैं, असीम यंत्रणा हुई और वे प्रतिशोध लेने की योजना बनाने लगे। नित्यानन्द जब हरिनाम संकीर्तन करते हुए रास्ते पर चलते तो जो भी मिलता उसे गले लगा कर कीर्तन करने लगते, साथ ही हरिदास भी। इस भक्ति प्रचार के क्रम में वे दोनों जगाई एवं माधाई के घर हरिनाम जप करते हुए पहुँचे तो वे दोनों प्रांगण में बैठे मद्यपान कर रहे थे। उनका गहरा काला रंग व मद्य पीते रहने से उनकी लाल-लाल आँखें उनके रूप को भयंकर बना चुकी थीं। दोनों संतों ने उनसे मिलते ही कीर्तन के बीच में ही उनसे परिचय देते हुए अपने साथ आने के लिए कहा तो वे छुरा लेकर उन्हें आंगन से भगाने के लिए दौड़े इस पर भी जब लोगों ने उनकी दुष्प्रवृत्तियाँ बता कर वहाँ से तुरंत निकल कर भागने को कहा तो निताई हरिदास के साथ भाग कर पास के एक घर में छिप गए। इधर ये दोनों मद्यपान से नशे में बेसुध होकर एक दूसरे के ऊपर ही गिरने-पड़ने लगे।

अगले दिन पुनः उन्हें सुधारने, भक्त बनाने एवं हरिनाम स्मरण करने की शिक्षा देने के लिए निताई फिर हरिदास के साथ वे घर पहुँच गए तो मद्य पीते हुए निताई ने मद्यपात्र को फेंक कर नित्यानन्द के सिर में मारा। काँच की सुराही से निताई का मस्तक फट गया। वे रक्तधारा से लहुलुहान हो गए पर नित्यानन्द ने हरिनाम संकीर्तन नहीं छोड़ा। उसी समय किसी ने जाकर चैतन्यदेव को इस दुर्घटना के विषय में बताया तो विद्युत् गति से वहाँ पहुँचकर उन्होंने अपनी तर्जनी को ऊपर उठा कर चक्र, चक्र कह कर सुदर्शन चक्र का आह्वान किया। अंगारों से जलते हुए नेत्र और ऊपर उठा दक्षिण-हस्त सप्रेम अपने हाथ से नीचे

करके नित्यानन्द उनके चरणों से लिपट गए। शान्ति की प्रार्थना करते हुए उसके वध का निषेध किया। पूरी भक्त मण्डली विस्मित हो उठी क्योंकि बारम्बार उन दुष्टों को क्षमा करने की पराकाष्ठा देख कर वे पुलकित हो उठे और बोले तुम्हारे प्रेमपूर्ण हृदय और अद्भुत सहनशीलता के कारण ही मैं आज शांत हो पाया। वे दोनों भी होश में आकर चैतन्य और नित्यानन्द की शरण में आ गए।

स्वामी सारदेशानन्द ने अपनी पुस्तक श्री चैतन्य महाप्रभु में लिखा है 'जगाई-माधाई' के उत्पात से नवद्वीप के लोग परेशान थे परन्तु अब उनकी परोपकार वृत्ति एवं धर्मभाव देख कर सबके हृदय में श्रद्धा का उदय होने लगा। निमाई की इच्छानुसार जगाई-मधाई प्रतिदिन सुबह सबसे पहले गंगातट पर जाकर घाट को धो-पोंछ कर स्वच्छ कर देते हैं ताकि लोग आनन्दपूर्वक स्नान आदि कर सकें। नवद्वीप में आज भी मधाई का घाट देखने में आता है। सप्त देवालयों में हमें वृन्दावन, नवद्वीप एवं गौड़ीयमठों में सूत्र रूप में भक्ति एवं चैतन्य महाप्रभु के माहात्म्य के साररूपी मंत्र को निताई ने उपर्युक्त प्रसंग में पूर्णतः चरितार्थ कर दिया था। प्रकृति के पुरुषों का उद्धार करके -

तृणादपि सुनीचेन, तरोरपि सहिष्णुता।
अमानिनः मानदेन कीर्तनीयः सदा हरिः।।

धरती पर वन-प्रांतर में सहज ही तृणलता गुल्म बिछे हैं, प्राकृतिक रूप से प्रकृति को आच्छादित किए हुए एक से दूसरे स्थान पर जाते हुए उनसे चरणों का स्पर्श स्वतः ही होता रहता है। उन जड़ तृणों का भी उतना ही महत्त्व है जितना कि आत्मतत्त्व का, उन पर चले बिना पथिक आगे नहीं बढ़ सकता है। महाप्रभु ने अन्तस् की गहराई तक निम्न तत्त्वों की महिमा को स्वीकार किया है क्योंकि हमारे ऊर्ध्वारोहण की यात्रा जड़ से आत्मा तक पहुँच पाती ...इसी सर्वसमावेशी भाव को नित्यानन्द ने भी उपर्युक्त उदाहरण से चरितार्थ किया। समाज के लिए जो सम्माननीय नहीं हैं उन्हें भी यथोचित सम्मान देने का उदाहरण प्रस्तुत करने वाले श्रीहरि अथवा विष्णु के कलि के पावन अवतार भी सदा ही कीर्त्तनीय है।

कीर्तन, नृत्य, भगवद्चर्चा के साथ ही व्रत, त्योहार और पर्व का समारोह श्रीनिवास के आंगन में वर्ष भर नियमपूर्वक २५ एकादशियों के साथ होता था। एक बार आषाढ़ शुक्ल पूर्णिमा जिसे गुरुपूर्णिमा, व्यासपूर्णिमा और गुड़िया पूर्णिमा भी कहा जाता है। उसमें गुरुपूजा की तैयारी पूरी कर ली गई तो निताई को चैतन्य महाप्रभु ने गुरुदेव का पूजन करने का निर्देश दिया। इससे खुश होकर निमाई और निताई आन्दातिरेक से संकीर्तन करते हुए दोनों हाथ उठाकर नाचने लगे। साथ में अश्रुपूर्ण नेत्रों से झरते हुए आँसुओं की अजस्र धारा भक्तों को भक्ति के सागर में आकंठ डूबा कर कीर्तन की तुमुल ध्वनि आकाश को गुंजाने लगी। शास्त्रोक्त विधि से पूरी तैयारी करके नेत्र बंद करके नित्यानन्द महाप्रभु ने गुरु का ध्यान चित्त में लगाया। उनके हाथों में सुगंधित सुमनों की माला थी एवं सबका ध्यान निताई-निमाई पर ही था। अकस्मात् किसी दिव्य आदेश पर नित्यानन्द ने वह माला महाप्रभु चैतन्यदेव के कण्ठ में पहना दी। प्रेम के आवेश में चैतन्यदेव के मुख पर सौदामिनी-सी स्वर्णिम चमक आ गई। उसको आश्चर्य से निहारते हुए नित्यानन्द महाप्रभु को उन्होंने अपने षड्भुज रूप के क्षणिक दर्शन करा कर श्रीनिवास के आँगन में अलौकिक लोक की सृष्टि की। जिसकी आभा से चकित निताई से चैतन्यदेव ने कहा -नित्यानन्द इस माला से शीघ्र व्यासदेव का पूजन करो तो भ्रमित नित्यानन्द ने देखा कि सामने खड़े निमाई ही विश्वम्भर हैं। इसलिए वह गौरांग प्रभु के सिर पर चढ़ा दी जो उनके सघन कुंचित केशों के मध्य शोभित हुई जिसके स्पर्श से ही वे तत्काल षड्भुज धारी महाप्रभु सशंख, चक्र, गदा, पद्म, हल और मूसल धारण कर प्रकट हो गए तथा आवेश में भावविह्वल, नित्यानन्द चैतन्य महाप्रभु के सामने उनके चरणों में गिरकर अचेतन हो गए। धरती पर संज्ञाहीन आनन्द मूर्च्छा में पड़े नित्यानन्द को देख कर कीर्तन मन्द्र से सप्तक पार करके तार सप्तक पर पहुँच गया। आज भी ब्रजवासियों के घरों में भ्रमण करके पाँच गृहस्थों से भिक्षा माँग कर खाने वाले विरक्त साधु मंजीरा बजाते हुए

श्रीकृष्ण चैतन्य प्रभु नित्यानन्दा।
हरे कृष्ण, हरे कृष्ण, कृष्ण, कृष्ण हरे हरे।
हरे राम, हरे राम, राम राम हरे हरे।।

'मन भज लो श्री राधे गोविन्द' आदि गाते हुए ब्रजवासियों के घरों के द्वार पर मधुकरी वृत्ति करते हैं।

****

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ : सौ वर्षों की सेवायात्रा

शरदः शतम्

श्री चन्द्रभाऊ त्रिपाठी
निदेशक
राष्ट्रीय तकनीकी शिक्षक प्रशिक्षण
एवं अनुसंधान परिषद्
शिक्षा मंत्रालय भारत सरकार,
पूर्व प्राध्यापक, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय
पूर्व निदेशक, यू. आई. ई. टी.
कुरुक्षेत्र विश्व विद्यालय
पूर्व कार्यकारिणी सदस्य
विद्या भारती संस्कृति शिक्षा संस्थान
अकादमी परिषद् सदस्य,
विद्या भारती उच्चशिक्षा
संस्थान, तकनीकी समूह के सदस्य
शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास दिल्ली

संपर्क
मो. 8295299556

वर्तमान में जब राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की सौ वर्षों की यात्रा पर कुछ लिखने का विचार आया तो उसे चंद पृष्ठों में नहीं समेटा जा सकता है, उस अथाह समुद्र को केवल हृदय की गहराइयों में अनुभव किया जा सकता है। इस संगठन की यात्रा एक छोटे से पौधे से विशाल वट वृक्ष बनने तक की कहानी है जो संगठन की दृढ़ता, समर्पण और राष्ट्रीय सेवा के प्रति प्रतिबद्धता को दर्शाती है। इन सौ वर्षों की अपनी यात्रा में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के स्वयंसेवक कोविड जैसी महामारी हो या अन्य किसी प्राकृतिक आपदा में स्वयंसेवक सबसे अग्रिम पंक्ति में खड़े होकर पीड़ित मानवता की सेवा करने के साथ ही उनके लिए सहारा बने हैं।

संघर्ष और विकास की प्रारम्भिक यात्रा :- विजयादशमी के दिन २७ सितम्बर १९२५ को मोहिते का वाड़ा नामक एक छोटे से मैदान पर डॉ. केशव राव बलिराम हेडगेवार ने केवल १५-२० युवाओं और बालकों के साथ ऐतिहासिक शाखा का शुभारम्भ किया था। डॉ. हेडगेवार जी ने कलकत्ता (कोलकत्ता) के नेशनल मेडिकल कॉलेज से चिकित्सा की शिक्षा प्राप्त की और वहाँ क्रान्तिकारी गतिविधियों में सक्रिय रूप में भाग लिया। उन्होंने अनुशीलन समिति की सदस्यता ग्रहण की और स्वदेशी आन्दोलन में सक्रिय भूमिका निभाई। उन्हें इन गतिविधियों से यह अनुभव हुआ कि केवल राजनीतिक आन्दोलन से ही राष्ट्र का निर्माण नहीं हो सकता है। विनायक दामोदर सावरकर की पुस्तक 'हिन्दुत्व' (१९२३) के तत्त्व से अत्यधिक प्रभावित होकर और तत्कालीन साम्प्रदायिक दंगों में हिन्दुओं की दुर्दशा को देखते हुए उन्होंने विचार किया कि 'हिन्दू समाज' को संगठित करना होगा, उनमें शक्ति और आत्मबल का संचार करना होगा। यह कार्य पीढ़ियों का है, लेकिन हमें आज से ही प्रारम्भ करना होगा।'

उस समय किसी ने कल्पना भी नहीं की होगी कि यह शुभारम्भ एक दिन विश्व के सबसे बड़े अनुशासित स्वयंसेवी संगठन में परिवर्तित हो जाएगा। आज लगभग ८३ हजार से भी अधिक नियमित दैनिक शाखाओं के साथ भारत के ४६ प्रांतों में सक्रिय है और ४० लाख से अधिक स्वयंसेवक शाखा में आते हैं। विश्व के ६० से अधिक देशों में संघ की शाखाएँ 'हिन्दू स्वयंसेवक संघ' के नाम से सक्रिय हैं।

१९२६ में संगठन को औपचारिक नाम राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ दिया गया। १७ अप्रैल १९२६ को डॉ.हेडगेवार जी के घर पर हुई स्वयंसेवकों की एक बैठक में इस नाम पर सहमति बनी। उसी वर्ष नागपुर में शाखाओं की संख्या १२ हो गई। पहली बार गणवेश में खाकी निकर, खाकी कमीज, खाकी टोपी और लॉग बूट को स्वीकार किया गया। जो नागपुर में काग्रेस के १९२० में हुए अधिवेशन के स्वयंसेवकों की पोशाक से प्रेरित था।

भगवा ध्वज संघ का गुरु :- राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की एक अनूठी परम्परा और सोच विश्व के अन्य सभी संगठनों से पूर्णतः अलग पहचान बनाई है। जब संघ की स्थापना हुई तो अनेक स्वयंसेवक चाहते थे कि डॉ. साहब को गुरु के रूप में स्वीकार किया जाए क्योंकि सभी स्वयंसेवकों के सर्वाधिक प्रिय और प्रेरणा स्रोत थे। परन्तु डा. साहब ने इस प्रस्ताव को अस्वीकार करते हुए एक क्रान्तिकारी निर्णय स्वयंसेवकों की

टोली में विचार-विमर्श कर लिया। उन्होंने स्वयंसेवकों से कहा कि 'कोई भी व्यक्ति चिरस्थायी नहीं हो सकता न ही एक से अधिक स्थानों पर एक ही समय में उपस्थिति हो सकता है। व्यक्ति में कभी भी विकार उत्पन्न हो सकता है चाहे वह कितना ही संयमी क्यों न हो। इसलिए हमें भगवा ध्वज को गुरु स्वीकार करना चाहिए। भगवा ध्वज भारतीय संस्कृति का और सनातन धर्म का प्रतीक है। यह त्याग, बलिदान, वीरता और देशभक्ति की भावना को प्रेरित करता है। मराठा शासक छत्रपति शिवाजी महाराज और गुरु गोविन्द सिंह जैसे महान् योद्धाओं ने भी भगवा ध्वज को अपनाया था।' डॉ. साहेब जी ने इस सनातन के प्रतीक को संघ के लिए एक मात्र राष्ट्रीय आदर्शों के प्रतीक के रूप में स्थापित किया।

१९२७ में भगवाध्वज को संघ के गुरु बना लिया गया। १९२८ में पहली बार व्यासपूजा (गुरुपूर्णिमा) के दिन औपचारिक रूप से गुरुपूजा का आयोजन किया गया जिसमें भगवा ध्वज का पूजन किया गया। पूर्व सरकार्यवाह एच.वी.शेषाद्रि जी ने अपनी पुस्तक *Rss A Vision in Action* में लिखा है कि "भगवा ध्वज भारत की राष्ट्रीय संस्कृति और परम्परा का सम्मानित प्रतीक रहा है। जब हेडगेवार जी ने संघ की स्थापना की तो उन्होंने भगवा ध्वज को ही सभी स्वयंसेवकों के समक्ष राष्ट्रीय आदर्शों के सर्वोच्च प्रतीक के रूप में रखा। उन्होंने इसे गुरु की संज्ञा दी और व्यासपूजा के दिन गुरुपूजा की परम्परा स्थापित की। इसी दिन स्वयंसेवक इसकी वेदी पर पुष्प के साथ अपनी श्रद्धा अर्पित करते हैं जिसे गुरुदक्षिणा कहा जाता है। उस समय से लेकर आज तक यह परम्परा निरन्तर चलती आ रही है। भगवा ध्वज को संघ में किसी भी अधिकारी पद से भी सर्वोच्च माना गया है। सभी स्वयंसेवक शाखा के शुभारम्भ और समापन पर प्रार्थना के बाद इसे प्रणाम करते हैं। यह विशिष्ट परम्परा स्वयंसेवकों की विनम्रता, समर्पण और सामूहिक नेतृत्व की कार्यशैली अवधारणा की पहचान है।

स्वतंत्रता आन्दोलन में संघ का योगदान - यद्यपि राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने संगठन के रूप में स्वतंत्रता आन्दोलन में प्रत्यक्ष भाग नहीं लिया। लेकिन अनेक स्वयंसेवकों ने व्यक्तिगत स्तर पर १९४२ में भारत छोड़ो आन्दोलन में और अन्य आन्दोलनों में सक्रिय रूप से भूमिका निभाई। श्रीगुरु जी और अनेक स्वयंसेवक कारा में निरुद्ध हुए।

देश के विभाजन के समय १९४७ में संघ ने पाकिस्तान और बांग्लादेश से आए शरणार्थियों की सेवा में अपने संगठन क्षमता का परिचय देते हुए हजारों शरणार्थियों की जान की रक्षा की। चाहे उसके लिए रक्तदान ही क्यों न करना पड़ा हो। इस कार्य की प्रशंसा स्वयं सरदार वल्लभ भाई पटेल ने की थी। देश की एकता की मजबूती के लिए स्वयं गुरुजी ने जम्मू-काश्मीर के महाराजा श्री हरिसिंह जी से बात कर उनको पाकिस्तान के साथ जाने से रोका तथा भारत में विलय के लिए प्रोत्साहित किया।

गांधी जी की हत्या का अनैतिक आरोप : सन् १९४८ के ३० जनवरी को गांधी जी की हत्या होते ही हत्यारा का सम्बन्ध अनैतिक रूप से संघ से जोड़कर प्रतिबंध लगाकर बदनाम किया गया। जबकि न्यायालयीन प्रक्रिया में इस आरोप को सिद्ध नहीं किया जा सका। सरदार वल्लभ भाई पटेल ने भी माना कि 'गोडसे का संघ से कोई सम्बन्ध नहीं था। वह हिन्दू महासभा का एक साधारण कार्यकर्ता था।' उसने गांधी के मुस्लिमपरस्त नीतियों के क्रियान्वयन से क्षुब्ध होकर घृणित कार्य किया। १९४९ संघ से प्रतिबंध न्यायालय के कानून द्वारा तत्कालीन शासन से कहा गया व प्रतिबंध हटा लिया गया।

भारतीय जनसंघ का गठन - तत्कालीन सरकार के केन्द्रीय मंत्री डॉ.श्यामा प्रसाद मुखर्जी ने जम्मू-कश्मीर में भारत सरकार का कानून लागू न होने और उसे अन्य राज्यों से अलग विधान से चलाने के विरोध में सरकार से त्यागपत्र देकर एक देश में दो प्रकार के विधान, दो निशान नहीं चलेगा का नारा देकर सत्याग्रह और जेल भरो आन्दोलन का आह्वान किया। इस हेतु श्रीगुरु जी से विचार-विमर्श कर राजनैतिक कार्य को सबलता प्रदान करने के लिए कर्मठ स्वयंसेवकों की माँग की। श्री गुरुजी ने पंडित दीनदयाल उपाध्याय और अटल बिहारी बाजपेयी, श्री लालकृष्ण आडवाणी, बलराज मधोक आदि वरिष्ठ स्वयंसेवकों को इसमें पूर्णतः पूर्णकालिक कार्य के लिए डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी का सहयोगी बनाया। आन्दोलन में डॉ.मुखर्जी का बलिदान हुआ। देश में तत्कालीन सरकार के विरुद्ध जनजागरण शुरू हुआ। सन्१९५१ में भारतीय जनसंघ का निर्माण हुआ। धारा ३७० का विरोध उस समय से ही चलता आ रहा था।

आपातकाल में १९७५ से १९७७ के बीच संघ के कार्यकर्ताओं ने लोकतंत्र की रक्षा के लिए कठिन संघर्ष किए। अत्याचारी सरकार के विरुद्ध जनता के बीच दमन कारी कारनामों को पहचान कर हस्तपत्र के माध्यम से सजग और जागरूक करना। अनेक संघ के वरिष्ठ स्वयंसेवक भूमिगत होकर इस कार्य को किए। परिणाम स्वरूप १९७७ के आम चुनाव में दमनकारी सत्ता का अंत हुआ ।

संघ के स्वयंसेवक देश प्रेम से ओतप्रोत होकर कार्य करते रहे हैं। १९६२ का चीन-भारत का युद्ध, १९६५ में पाकिस्तान-भारत का युद्ध, १९७१ में पूर्वी पाकिस्तान का बांग्लादेश के रूप में गठन या १९९९ के कारगिल युद्ध में आदि में रक्तदान, सेना की सहायता, उनके लिए हवाई पट्टी तैयार करना आदि कार्य पूर्ण निष्ठा एवं समर्पण से किए। २००४ की सुनामी, गो-संरक्षण अभियानों तथा २०१९-२०२१ में कोविड में राहत कार्य करते हुए लोगों के पास भोजन पहुँचाना, दवाई एवं परामर्श देना आदि दुरुह कार्य भी पूरी तत्परता से किए।

देश में आत्मसम्मान की रक्षा के लिए रामजन्म भूमि के आन्दोलन को श्रीराम मंदिर के निर्माण तक ले आना, यह पूर्णनिष्ठा एवं समर्पण से ही संभव हुआ।

संघ के सरसंघचालक : नेतृत्व की अनूठी परम्परा - डॉ. हेडगेवार जी के निधन से पहले ही डॉ.साहब जी ने प्रतिनिधित्व हेतु पूज्य श्री माधवराव सदाशिव राव गोलवलकर (श्रीगुरु जी) का चुनाव कर लिया था। २१ जून १९४० में निधन के बाद श्रीगुरु जी दूसरे सरसंघचालक के दायित्व को ग्रहण कर १९७३ तक इस पद की मर्यादा और यश को बनाए रखा। श्री गुरु जी बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय में प्राणिशास्त्र के प्राध्यापक थे। १९३३ में संघ के सम्पर्क में आए और डॉ. साहब के पथ पर चलते हुए संगठन को वैचारिक सुदृढ़ता प्रदान की। उनकी पुस्तक "वी ऑर ऑवर नेशनहुड डिफांइण्ड" (१९३९) और 'बंच ऑफ थाट्स' संघ की वैचारिक आधार को आगे बढ़ाया। उनके नेतृत्व में संघ का चतुर्दिक व्यापक विस्तार हुआ। उन्होंने वैचारिक क्रान्ति के लिए अनेक संगठनों के गठन की भूमिका तैयार कर उनके स्थापना में अतुलनीय योगदान दिया।

१९७३ में समरसता के सशक्त कर्मयोगी श्री बाला साहब देवरस जी (मधुकर दत्तात्रेय देवरस) तीसरे सरसंघचालक बने। वे १९९४ तक इस पद पर रहे। उन्होंने सामाजिक समरसता पर विशेष बल दिया। उन्होंने १९७४ में घोषणा की कि "यदि छुआछूत पाप नहीं तो संसार में कुछ भी पाप नहीं है।" यानि यदि 'अस्पृश्यता गलत नहीं तो संसार में कुछ भी गलत नही है।' उन्होंने इस सिद्धान्त को अपने घर और परिवार में प्रयोग कर समाज को नई दिशा दी। इस आह्वान ने अछूतपन और अछूत लोगों की सेवा में राष्ट्रीय स्तर पर प्रयास हुए।

राजनीतिक अछूतपन को दूर कर समाज में हिन्दू समाज को नई दिशा - १९९४ में प्रो. राजेन्द्र सिंह उपाख्य रज्जू भैया चौथे सरसंघचालक बने। उन्होंने राजनीतिक क्षेत्र में स्वयंसेवकों के माध्यम से एक नई दिशा दी। कई राज्यों में भारतीय जनता पार्टी की सरकारें, गठबंधन कर बनीं। इनके माध्यम से समाज से भारतीय ज्ञान परम्परा को पाठ्यक्रम में लागू करने का प्रयास हुआ।

स्वदेशी के प्रबल प्रणेता सरसंघचालक : श्रद्धेय कुप्पहल्ली सीता रमैया सुदर्शन जी - सन् २००० में सरसंघचालक बनने के बाद अपने देश में स्वावलम्बन, आर्थिक आत्मनिर्भरता के प्रबल प्रणेता माननीय सुदर्शन जी ने अपने परम्परागत उद्योग धन्धे मुख्य रूप लघु व कुटीर उद्योग की पहचान कर उनके पुनरुत्थान हेतु स्वयंसेवकों के माध्यम से अनेक प्रयत्नों को दिशा दी। अन्य पंथावलम्बियों के साथ सौहार्दपूर्ण विचार-विमर्श हेतु इस कार्य में श्री इन्द्रेश जी के माध्यम से अनेक बार उलेमाओं और उनके मौलानाओं एवं ईसाई पंथ के शीर्ष नेतृत्व के साथ समन्वयात्मक बैठकें की। वे भारतीय चिंतन और वैदिक ज्ञान विज्ञान के प्रबल मार्गदर्शक थे। उनके प्रयास से कार्यकर्ता विद्यालयों भारतीय ज्ञान परम्परा का पठन-पाठन और वैदिक गणित के लिए सत्ताधारी वर्ग से सम्पर्क बनाए रखते थे।

२००९ में माननीय मोहनराव भागवत जी ने छठे सरसंघचालक के दायित्व को ग्रहण कर संघ को समाज में सुदृढ़ करने की ठोस योजना बनाकर कार्यरूप में परिणत की। कई विधाओं में रुचि और उनके बारे में जानकार होने से शारीरिक, घोष और बौद्धिक क्षमता का विकास तथा विचार-विमर्श में भारतीय ज्ञान परम्परा के महत्त्व को समाज में पहुँचाने हेतु अनेक माध्यमों से क्रियान्वयन करने में मार्गदर्शन देते हैं। जिन स्थानों पर नियमित शाखा नहीं वहाँ कुछ करने हेतु साप्ताहिक मिलन की योजना कर क्रियान्वयन हेतु प्रेरित किया। सेवाबस्तियों में समाज के अपने बांधवों से अपना सम्पर्क बने इस हेतु सेवा भारती, एकल विद्यालय, संस्कार केन्द्र और साप्ताहिक चिकित्सा सुविधा पहुँचाकर उनको राष्ट्र की मुख्य धारा में लाने व विधर्मी शक्तियों से उनको दूर रखने हेतु स्वयंसेवकों का वे मार्गदर्शन करते हैं।

संघ की सामाजिक क्षेत्र में सेवा यात्रा :- सामाजिक सेवा यात्रा शिक्षा, स्वावलम्बन, स्वास्थ्य, स्वच्छता हेतु सेवा भारती का गठन हुआ। वैचारिक चेतना जागृत करने के लिए महिला समाज के लिए राष्ट्रीय सेविका समिति का कार्य प्रारम्भ से ही एवं राजनैतिक

क्षेत्र के लिए १९८० में भारतीय जनता पार्टी (पूर्व रूप भारतीय जनसंघ) का गठन हुआ। भारतीय मजदूर संघ, भारतीय किसान संघ, अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद्, हिन्दूत्व को समाज में सुदृढ़ करने हेतु विश्व हिन्दू परिषद्, जनजातीय क्षेत्र में कार्य हेतु वनवासी कल्याण परिषद् एवं अन्य वैचारिक विमर्श हेतु प्रज्ञा-प्रवाह संगठन सक्रिय हैं। इन संगठनों को उद्देश्य वंचित, उपेक्षित क्षेत्र की सेवा, स्वावलम्बन एवं राष्ट्रहित में समाज को जागृत कर अन्य देश विरोधी संगठनों से वंचित समाज को मिल रहे प्रलोभनों से रोकना है।

शैक्षिक क्षेत्र में अनोखी पहल - १९५२ में सरस्वती शिशु मंदिर योजना के रूप में जाना गया। १९७७ में विद्या भारती शिक्षा के माध्यम से भारतीय संस्कृति, राष्ट्रवाद, नैतिक मूल्यों और सामाजिक शैक्षिक उत्थान के लिए विद्या भारती का कार्य देश के ७७६ जिलों में से ६६८ में सुचारु रूप से चल रहा है। इन जिलों में १३००० औपचारिक विद्यालय और १०००० से अधिक एकल विद्यालयों एवं संस्कार केन्द्रों के माध्यम संस्कार युक्त शिक्षा प्रदान करने का कार्य एवं विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास के कार्य में लगा हुआ है। इन विद्यालयों में १,४४,४२५ शिक्षक एवं ३३ लाख विद्यार्थी शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं। विद्या भारती के अनौपचारिक शिक्षण संस्थान समाज में जहाँ संसाधन की उपलब्धता कम है और दूरवर्ती क्षेत्रों में अनेक बाल संस्कारकेन्द्र में २,३४,६६७ से अधिक बालक शिक्षा और संस्कार प्राप्त कर रहे हैं। अनेक विद्यार्थियों को प्राथमिक शिक्षा केन्द्रों में निःशुल्क शिक्षा प्रदान की जाती है। विद्या भारती का लक्ष्य है कि २०२७ तक ४० लाख छात्रों को प्रतिवर्ष शिक्षा प्रदान कर राष्ट्र के लिए देशभक्ति से ओतप्रोत जिम्मेदार नागरिकों का सृजन हो।

सेवा भारती - सेवा के क्षेत्र में ५०० से अधिक चिकित्सालयों, छात्रावासों और अन्य प्रशिक्षण केन्द्रों के माध्यम से समाज में सेवा का कार्य कर रही है।

वनवासी कल्याण आश्रम :- जनजातीय क्षेत्रों में ७,००० प्रकल्पों के द्वारा ५०,००० छात्रों को छात्रावासीय सुविधा निःशुल्क प्रदान कर रहा है। ये संगठन भारतीय मूल्यों के संरक्षण एवं संवहन हेतु प्रतिबद्ध होकर कार्य पूर्ण समर्पण से कर रहे हैं।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की सतत यात्रा एक प्रेरणादायक उदाहरण है जो दर्शाता है कि कठिन परिश्रम और अनवरत किए कार्य से एक छोटा पौधा समय के साथ एक विशाल वटवृक्ष बन गया है, जो अपने आस-पास के वातावरण को सकारात्मक रूप से प्रभावित करता है। २०२५ से इस संगठन का शताब्दी वर्ष सामाजिक सद्भाव, पर्यावरण संरक्षण, आत्मनिर्भरता और पारिवारिक मूल्यों के संरक्षण हेतु देशव्यापी अभियान के साथ कार्य प्रारम्भ किया गया है। यह निसंदेह भारत के विकसित बनने की दिशा में मील का पत्थर है।

वाद-विवाद में बुद्धि का उपयोग अवश्य होता है, किन्तु इस प्रकार किया तो वह उपकारी नहीं, प्रत्युत अपकारी ही होता है। फिर सब लोग पास कैसे आएँगे ? प्रथम हम दोनों अर्थात् हम और जिसे हमें समझाना है उसके बीच अंतःकरण की एकात्मता स्थापित होनी चाहिए। वह और हम दो शरीर किन्तु एक आत्मा, ऐसी स्थिति उत्पन्न होने पर हमारे हृदय की ध्येयनिष्ठा उसके हृदय में प्रविष्ट होगी और ऐसे विशुद्ध प्रेम के आधार पर ही एक-एक मनुष्य को हम अपना कर उसमें अपने ध्येय की उपासना, भक्ति करने की इच्छा जाग्रत कर उसे अपना सहयोगी बना सकते हैं। इसके लिए हमें अत्यन्त विवेकपूर्वक अपना चरित्र बनाना होगा। पड़ोसी से उत्तम व्यवहार, उसके जीवन में भली भाँति समरस होकर, उसका सुख-दुःख समझकर, उसके सुख में वृद्धि और दुःख का निवारण करने हेतु चाहे जो भी कष्ट करने के लिए नित्य सिद्ध रह कर सबको अपनाने का प्रयास करना चाहिए। इसी का दूसरा स्वरूप है जहाँ भी काम करें, वहाँ जो भी हमारे सम्पर्क में आए चाहे वह हमारा सहपाठी छात्र हों अथवा हम कहीं सेवारत हों तो हमारे समान अन्य छोटे बड़े जो कर्मचारी हों उनके अथवा उद्योग, व्यवहार में, सम्बन्ध आने वाले विविध श्रेणी के लोग के साथ हमारा ऐसा व्यवहार हो अंतःकरण में हमारे विषय में श्रद्धा, आदर, आत्मीयता उसके हृदय में उत्पन्न हो और हम सब अन्तःकरण से एकरस हो जाएँ। इस आत्मीयता के कारण हमारे हृदय की संघ विषयक दृढ़ अनुभूति उनके हृदय में भी स्वयमेव ही संक्रमित होगी। यह सब काम करना 'साधारण स्वयंसेवक' के रूप में हमारा कर्तव्य है। यह प्रत्येक स्वयंसेवक का स्वस्फूर्त कार्य है, इसे करते हुए ही हम संघ कार्य की वृद्धि कर सकते हैं।

- एक साधारण स्वयंसेवक (पूज्य श्री गुरु जी)

भारत की समुद्री सीमा

सीमा सुरक्षा

डॉ० रवीन्द्र कान्हेरे
अध्यक्ष,
विद्या भारती अखिल भारतीय
शिक्षा संस्थान
अध्यक्ष, उच्च शिक्षा शुल्क नियामक
एवं विनियामक प्राधिकरण, म.प्र.
पूर्व समकुलपति, इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय
मुक्त विश्वविद्यालय
सुप्रसिद्ध विचारक, शिक्षाविद्

संपर्क
मो. 9406632151

भारत की तटरेखा ७५१६.६ कि. मी.(मुख्यभूमि ५४२२.६ कि.मी.,द्वीप क्षेत्र २०६४ कि.मी. है।) इसके पश्चिम में अरब सागर, दक्षिण पश्चिम में लक्षद्वीप सागर, पूर्व में बंगाल की खाड़ी और दक्षिण में हिन्द महासागर है।

1. अन्तरराष्ट्रीय कानून में इन सीमाओं के समायोजन को समुद्री परिसीमन कहा जाता है। देश का प्रादेशिक समुद्र उसकी आधार रेखा से १२ नॉटिकल मील (२२ किमी १४ मील तक फैला होता) है।
2. भारत हिन्द महासागर में सबसे लम्बा तट रेखा वाला देश है।
3. विश्व के सभी देशों को समुद्रों में भाग देने के लिए अर्थात् उनकी समुद्री सीमाएँ निर्धारित करने के लिए १९८२ में संयुक्त राष्ट्र संघ के सदस्य देशों के बीच एक समझौता हुआ था जिसे यूएनसीओएलओएस 'यूनाइटेड नेशन कन्वेंशन ऑन द लॉ ऑफ सी' कहा जाता है। यूएनसीएलओएस के आधार पर भारत की समुद्री सीमा तीन प्रकार की है -

1. प्रादेशिक समुद्री सीमा (टेरिटोरियल सी)
2. अविच्छिन्न मण्डल (कन्टीगुयस जोन)
3. अनन्य आर्थिक क्षेत्र (एक्सक्लुसिव एकोनोमिक जोन-ईईजेड)

प्रादेशिक समुद्री सीमा - आधार रेखा से समुद्र में १२ समुद्री मील तक प्रादेशिक समुद्री सीमा है। समुद्र में प्रादेशिक समुद्री सीमा १२ नॉटिकल मील तक भारत का सम्पूर्ण अधिकार है।

अविच्छिन्न मण्डल/संलग्न क्षेत्र - आधार रेखा से समुद्र में २४ समुद्री मील तक अविच्छिन मण्डल सीमा है। अविच्छिन्न मण्डल सीमा में भारत को तीन प्रकार के अधिकार दिए गए हैं-

(अ) सीमा शुल्क वसूली का अधिकार । (आ) सीमा के अन्तर्गत साफ सफाई का अधिकार। (सी) वित्तीय अधिकार, कारोबार करने का अधिकार।

(३) अनन्य आर्थिक क्षेत्र :- आधार रेखा से समुद्र में २०० मील तक भारत का अनन्य आर्थिक क्षेत्र है। अनन्य आर्थिक क्षेत्र में भारत को तीन तरह का अधिकार प्राप्त है।

(क) २०० समुद्री मील तक भारत नए द्वीपों का निर्माण कर सकता है।

(ख) वैज्ञानिक परीक्षण का अधिकार।

(ग) प्राकृतिक संसाधनों के दोहन हेतु पूर्ण अधिकार।

समुद्र में प्राकृतिक संसाधनों के प्रचुर भंडार हैं। आधार रेखा से २०० समुद्री मील अर्थात् अनन्य आर्थिक क्षेत्र में भारत को प्राकृतिक संसाधनों के दोहन का सम्पूर्ण अधिकार है। उदाहरण के लिए मुम्बई हाई जो भारत का सबसे बड़ा समुद्री तेल और प्राकृतिक गैस भंडार का क्षेत्र है वह मुम्बई के पास अरब सागर में छिछले समुद्र में अनन्य आर्थिक क्षेत्र में ही स्थित है। यहाँ देश के ६५ प्रतिशत तेल का उत्पादन होता है। तीन तरफ से भूमि से घिरे समुद्री क्षेत्र को खाड़ी कहते हैं। जैसे बंगाल की खाड़ी, बड़ी खाड़ियों को अंग्रेजी में 'बे' कहते हैं, जैसे 'बे ऑफ बंगाल'। संकरी छोटी खाड़ियों को अंग्रेजी में गल्फ कहते हैं। (जैसे-गल्फ ऑफ खम्भात।)

गुजरात में भारत की सबसे लम्बी तट रेखा

१६०० किलोमीटर है। भारतीय समुद्री तट का लगभग २४ प्रतिशत है। भारत के एक ओर हिमालय तो तीन ओर से समुद्र है। तटीय सीमा साझा करने वाले कुल नौ राज्य हैं, जिनमें गुजरात, महाराष्ट्र, गोवा, कर्नाटक, केरल, तमिलनाडु, आंध्रप्रदेश, ओडीसा और पश्चिम बंगाल। दमन और दीव, पुडुचेरी, लक्षद्वीप समूह, अंदमान और निकोबार द्वीप समूह तटीय केन्द्रशासित प्रदेश हैं। भारत की समुद्री सीमा मालदीव, श्रीलंका, बर्मा, इंडोनेशिया, थाईलैंड, पाकिस्तान और बांग्लादेश आदि देशों के साथ मिलती है।

पाकिस्तान से अनसुलझे समुद्री सीमा विवाद है लेकिन सटीक सरिखण में स्पष्टता की कमी के कारण अवैध रूप से मछली पकड़ने में मछुआरों की गिरफ्तारी, हथियार की तस्करी, आतंकवादी घुसपैठ, मानव तस्करी और दवा की तस्करी की घटनाएँ निरंतर घटती रहती है। उपर्युक्त कारणों से राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए निरन्तर खतरा है। कुछ अनचाहे संदेहों से पड़ोसी पाकिस्तान और श्रीलंका से तनाव बना रहता है। सुरक्षा ऐजेंसियों द्वारा लगातार तटीय क्षेत्रों की निगरानी की जाती है। यह क्षेत्र गैस के भंडार का ३१ प्रतिशत और अन्य तेल, कीमती खनिजों, यूरेनियम, टिन, सोना और हीरे के समृद्ध भंडार है। इसके तटों में आर्थिक हालात और राजनीतिक स्थिरता के चरम विविधताओं वाला देश पाकिस्तान भी है।

हिन्द महासागर के तटीय क्षेत्र में बसी शहरी आबादी व व्यापक, आर्थिक गतिविधि और औद्योगिक प्रतिष्ठानों का केन्द्र है। भारत के मामले में इसकी व्यापक आबादी सांद्रता, आर्थिक ताकत और विशाल समुद्र तट समग्र रूप से हमारे राष्ट्रीय जीवन में एक महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। इन तटीय क्षेत्रों को शहरीकरण की प्रवृत्तियाँ, शहरी शासन की गुणवत्ता, पर्यावरण और जलवायु परिवर्तन की चुनौतियों का सामना करना पड़ता है।

निरन्तर अवैधानिक मत्स्य आखेट के कारण मछलियों की संख्या कम होने से प्रतिकूल असर परम्परागत मछुआरों को सहना पड़ता है। मछुआरों के लिए अन्य संकट भी बढ़ रहे हैं। मछली पकड़ने के मशीनीकृत तरीके बढ़ने से मछलियों की संख्या भी कम हो रही है। इससे इनके के लिए अवसर तो और भी कम हो रहे हैं। समुद्र तट पर पर्यटन से शहरीकरण बढ़ा है इससे कई मछुआरों की बस्तियों को उनके मूल स्थान से विस्थापित भी होना पड़ा है।

तट के पास का समुद्री जल, जैव विविधता को बनाए रखने व जलीय जीवों के प्रजनन के लिए विशेष महत्त्व रखता है। प्रदूषण बढ़ने से समुद्री जीवों पर अत्यधिक प्रतिकूल असर पड़ रहा है। जैसे-जैसे जलवायु परिवर्तन के कारण दुनिया गर्म हो रही है, समुद्र का बढ़ता स्तर सबसे गम्भीर चुनौती है। यह घटना भारत के तटीय क्षेत्रों को अत्यन्त प्रभावित करती है, इससे तटीय शहरों को खतरा होता है। स्लोवल वार्मिंग, कटाव और भूमि हानि तथा तटीय कटाव तेज हो जाता है क्योंकि उच्च जलस्तर तटरखाओं को नष्ट कर देता है और तटीय भूमि को बहा ले जाता है। इससे बहुमूल्य भूमि व बुनियादी ढाँचे को क्षति पहुँचती है।

समुद्री जल मीठे जल के स्रोतों का अतिक्रमण करता है। यह भूजल को प्रदूषित कर सकता जिससे पीने और कृषि के लिए उपयुक्त पानी अनुपयुक्त हो जाता है। यह इन संसाधनों पर निर्भर समुदायों के लिए महत्त्वपूर्ण चुनौतियाँ उत्पन्न होती हैं।

समुदायों का विस्थापन :- समुद्र का बढ़ता स्तर संवेदनशील तटीय क्षेत्रों में रहने वाले समाज को अपने घर को छोड़कर ऊँची जमीन की तलाश के लिए मजबूर होना पड़ता है। इस विस्थापन के कारण सामाजिक और आर्थिक व्यवधान उत्पन्न होते हैं।

पारिस्थितिकी तंत्र की क्षति :- तटीय पारिस्थितिकी तंत्र जैसे मैंग्रोव और मूँगा की चट्टानें समुद्र के स्तर में वृद्धि के प्रति संवेदनशील हैं। वे समुद्री जीवन के लिए आवश्यक आवास प्रदान करते हैं। वे समुद्री तूफान के विरुद्ध बफर के रूप में कार्य करते हैं। जैसे ही ये पारिस्थितिकी तंत्र क्षतिग्रस्त या जलमग्न होते हैं इसका प्रभाव खाद्य श्रृंखला पर पड़ता है और मछली पकड़ने के उद्योगों को प्रभावित करता है। समुद्र के स्तर में वृद्धि का लगातार खतरा और उससे जुड़ी चुनौतियाँ तटीय निवासियों के शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य को प्रभावित करती हैं।

समुद्र के स्तर में वृद्धि की सम्भावना वाले क्षेत्रों में स्वास्थ्य सेवाओं तक पहुँच तेजी से होना चुनौतीपूर्ण हो जाता है। जिससे स्वास्थ्य सम्बन्धी असमानताएँ और चिन्ताएँ बढ़ रही है।

अपेक्षित कार्य :- तटीय क्षेत्रों में स्थित बस्तियों में शिक्षा व स्वास्थ्य की व्यवस्था अति आवश्यक हो गई है। समुद्र तटों की निरन्तर स्वच्छता, प्राकृतिक बफर की सुरक्षा हेतु नागरिकों को जागरूक व प्रशिक्षित किया जाना चाहिए। संवेदनशील क्षेत्रों में नागरिकों की जागरूकता, अपरिचित संदिग्ध व्यक्तियों के आवागमन और राष्ट्रविरोधी गतिविधियों को नियंत्रित करने में सहायक है। अतः इस दिशा में सम्पर्क और प्रबोधन आवश्यक है।

शिक्षा और राष्ट्रीय सुरक्षा

सुरक्षा

श्री जितेन्द्र कुमार पाठक
प्राचार्य
अनेक विषयों के ज्ञान,
शैक्षिक विषयों पर प्रबोधन,
मंचीय कार्यक्रमों का अनुभव

संपर्क
मो. 8224932009

किसी भी राष्ट्र की सम्प्रभुता, एकता और प्रगति का मूल आधार उस राष्ट्र की सुरक्षा है। देश की सुरक्षा के नींव का मुख्य आधार शिक्षा है। शिक्षा समाज में न केवल बौद्धिक और तकनीकी कौशल प्रदान करती है बल्कि समाज में नैतिकता, सामाजिक एकता की भावना को भी पोषित करती है। राष्ट्रीय गौरव की भावना को नागरिकों में जाग्रत करती है। भारत जैसे सांस्कृतिक रूप से समृद्ध और विकासशील राष्ट्र में शिक्षा और राष्ट्रीय सुरक्षा का अटूट सम्बन्ध है। एक शिक्षित समाज न केवल आर्थिक प्रगति और सामाजिक समरसता को बढ़ावा देता है बल्कि आंतरिक स्थिरता, राष्ट्रीय एकता और बाहरी खतरों से भी मुकाबला करने की क्षमता को विकसित करता है।

प्राचीन भारत में शिक्षा को समाज और राष्ट्र की आत्मा माना जाता था। नालन्दा, तक्षशिला और विक्रमशिला जैसे विश्वविद्यालय विश्वभर में ज्ञान के केन्द्र थे। जो न केवल भारतीय विद्वानों बल्कि चीन, कोरिया, तिब्बत और मध्य एशिया के विद्यार्थियों को आकर्षित करते थे। ये संस्थान भारत की सांस्कृतिक, बौद्धिक और आध्यात्मिक श्रेष्ठता के मानक थे। चाणक्य जैसे महान् विचारकों ने शिक्षा को राष्ट्रीय शक्ति और सुरक्षा का आधार माना है। कौटिल्य के अर्थशास्त्र में शिक्षा को राज्य की नीति, प्रशासन और रक्षा का अभिन्न अंग बताया है। विद्या को नेतृत्व और रणनीतिक सोच का स्रोत माना गया है। प्राचीन भारत में शिक्षा का यह मॉडल न केवल व्यक्तिगत विकास बल्कि सामाजिक और राष्ट्रीय एकता को बढ़ावा देता था। परन्तु औपनिवेशिक काल में लार्ड मैकाले की शिक्षा नीति ने भारतीय शिक्षा प्रणाली को कमजोर करने का सुनियोजित प्रयास किया। इस नीति का उद्देश्य भारतीयों को उनकी सांस्कृतिक जड़ों से काटकर ऐसी पीढ़ी तैयार करना था जो औपनिवेशिक शासकों के प्रति वफादार रहे। परन्तु स्वामी विवेकानन्द, रवीन्द्र नाथ ठाकुर, महात्मा गांधी और अन्य स्वतंत्रता सेनानियों ने शिक्षा को राष्ट्रीय चेतना के जागरण का हथियार बनाया। विवेकानन्द ने शिक्षा को मनुष्य में पहले से मौजूद पूर्णता का प्रकटीकरण माना जबकि गांधी जी का नई तालीम और रवीन्द्र नाथ ठाकुर का शान्ति निकेतन स्वेदशी शिक्षा के प्रतीक बने। इन प्रयासों ने न केवल स्वतंत्रता संग्राम को बल दिया, बल्कि स्वतंत्रता के लिए एक सशक्त और आत्मनिर्भर समाज की नींव भी रखी।

आधुनिक युग में राष्ट्रीय सुरक्षा की परिभाषा व्यापक हो गई है। यह केवल सैन्य शक्ति या सीमा सुरक्षा तक ही सीमित नहीं है बल्कि इसमें साइबर सुरक्षा, सूचना युद्ध, सांस्कृतिक अखंडता, आर्थिक स्थिरता और सामाजिक एकता जैसे पहलू भी शामिल हो गए हैं। इन सभी क्षेत्रों में शिक्षा की साकारात्मक भूमिका सर्वोपरि हो गई है। भारत की नई शिक्षा नीति २०२० इस दिशा में एक क्रान्तिकारी कदम है। यह नीति भारतीय भाषाओं, संस्कृति और मूल्यों की शिक्षा को अभिन्न अंग बनाती है। जिससे विद्यार्थियों में राष्ट्रीय गौरव और एकता की भावना को जागृत करती है। साथ ही यह स्टेम यानि विज्ञान, तकनीकी, अभियांत्रिकी और गणित की शिक्षा को प्रोत्साहित करती है, यह साइबर सुरक्षा, कृत्रिम बुद्धिमता, रक्षा, प्रौद्योगिकी और डेटा विश्लेषण जैसे क्षेत्रों में भारत को आत्मनिर्भर बनाने में

सहायक है। उदाहरण के लिए भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान व रक्षा अनुसंधान और विकास संगठन (डीआरडीओ) ने स्वदेशी मिसाइल तंत्र जैसे अग्नि, ब्रह्मोस और पृथ्वी तथा साथ ही उपग्रह प्रणालियाँ जैसे नाविक और रक्षा प्रौद्योगिकियों के विकास में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है। ये उपलब्धियाँ भारत की रक्षा क्षमता को बढ़ाने के साथ ही वैश्विक मंच पर देश की साख को मजबूत करती है। इसके अलावा राष्ट्रीय शिक्षा नीति में कोडिंग, डिजिटल साक्षरता और तकनीकी कौशल पर जोर देने से भारत साइबर युद्ध और सूचना युद्ध जैसे आधुनिक खतरों से निपटने में सक्षम हो रहा है।

राष्ट्रवादी दृष्टिकोण से शिक्षा वह शक्ति है जो भारत को आत्मनिर्भर और वैश्विक शक्ति बनाती है। एक शिक्षित नागरिक न केवल अपने अधिकारों और कर्तव्यों के प्रति जागरूक होता है बल्कि देश के प्रति अपनी जिम्मेदारी को भी समझता है। यह जागरूकता आंतरिक सुरक्षा के लिए महत्त्वपूर्ण है क्योंकि सामाजिक विखंडन, क्षेत्रवाद, साम्प्रदायिकता और नक्सलवाद जैसे खतरों को कम करती है। इस सन्दर्भ में विद्या भारती द्वारा निर्देशित और समितियों द्वारा संचालित सरस्वती शिशु मंदिरों और अन्य शैक्षिक संस्थान राष्ट्रीय सुरक्षा और एकता को मजबूत करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। विद्या भारती संगठन जो राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की विचारधारा को मानते हुए भारत वर्ष में हजारों विद्यालयों के संचालन में प्रेरक की भूमिका निभाती है। इन विद्यालयों में लाखों छात्र-छात्राएँ देशभर में पढ़ते हैं इन विद्यालयों में शिक्षा का आधार भारतीय संस्कृति, जीवनमूल्य और नैतिकता है जो विद्यार्थियों में राष्ट्रीय गौरव, अनुशासन और देशभक्ति की भावना को प्रबल करता है। इन विद्यालयों न केवल शैक्षिक उत्कृष्टता पर ध्यान देते हैं बल्कि योग, संस्कृत और भारतीय इतिहास के गौरवशाली अध्यायों को पाठ्यक्रम में शामिल करके विद्यार्थियों को अपनी सांस्कृतिक जड़ों से जोड़ते हैं। ये विद्यालय ग्रामीण और शहरी दोनों क्षेत्रों में शिक्षा की पहुँच को बढ़ाते हैं। इससे सामाजिक समावेशिता और एकता को बल मिलता है। इसके अलावा विद्या भारती के विद्यालयों में आयोजित सांस्कृतिक और राष्ट्रीय कार्यक्रम जैसे स्वतंत्रता दिवस, गणतंत्र दिवस, गांधी जयंती विद्यार्थियों में राष्ट्रीय चेतना का भाव और देश के प्रति निष्ठा की भावना को जाग्रत करते हैं। यह राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए एक मजबूत आधार तैयार करता है। कहा भी गया है कि एक जागरूक और संस्कृति से जुड़ा युवा सामाजिक विखंडन या बाहरी प्रचार के प्रभाव से आसानी से प्रभावित नहीं होता है।

भारतीय सैन्य अकादमियों जैसे राष्ट्रीय रक्षा अकादमी, भारतीय सैन्य एकादमी और नौसेना अकादमी में दी जाने वाली शिक्षा न केवल तकनीकी और सामरिक प्रशिक्षण प्रदान करती है, बल्कि नेतृत्व, अनुशासन और देशभक्ति जैसे मूल्यों को भी विकसित करती है। इन संस्थानों ने ऐसे सैन्य नेताओं को तैयार किया जिन्होंने १९६५, १९७१ व कारगिल युद्ध जैसे महत्त्वपूर्ण अवसरों पर भारत की सम्प्रभुता की रक्षा की। इसके अतिरिक्त तकनीकी शिक्षा के क्षेत्र में भारत के इंजीनियर्स और वैज्ञानिकों ने स्वदेशी रक्षा प्रौद्योगिकियों जैसे तेजस लड़ाकू विमान और अर्जुन टैंक के विकास में योगदान दिया है, जो भारत को रक्षा क्षेत्र में आयात पर निर्भरता कम करने में मदद करते हैं।

हालांकि भारत की शिक्षा प्रणाली के सामने कई चुनौतियाँ हैं। ग्रामीण क्षेत्रों में शिक्षा की गुणवत्ता और पहुँच में कमी, बुनियादी ढाँचे का आभाव, शिक्षक प्रशिक्षण की अपर्याप्तता और डिजिटल डिवाइस जैसी समस्याएँ राष्ट्रीय सुरक्षा को अप्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करती है। उदाहरण के लिए अशिक्षित या कम शिक्षित युवा नक्सलवाद, आतंकवाद या सामाजिक अशान्ति जैसे खतरों के प्रति अधिक संवेदनशील हो सकते हैं। यूनेस्को के आँकड़ों के अनुसार, भारत में २६ करोड़ से अधिक बच्चे स्कूलों में हैं लेकिन गुणवत्तापूर्ण शिक्षा उनकी पहुँच से दूर है। इसके अलावा शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों के बीच के स्तर में असमानता एक गम्भीर चुनौती है। इस समस्याओं का समाधान करने के लिए सरकार को शिक्षा बजट में वृद्धि एवं शिक्षक प्रशिक्षण को मजबूत करना और डिजिटल शिक्षा के प्रसार पर ध्यान होगा। एनईपी २०२० में प्रस्तावित डिजिटल लर्निंग और ऑनलाइन शिक्षा मंच जैसे दीक्षा और स्वयं इस दिशा में सकारात्मक कदम है। साथ ही विद्या भारती जैसे संगठन ग्रामीण और सुदूर क्षेत्रों में शिक्षा की पहुँच बढ़ाने में योगदान दे रहे हैं। सरस्वती शिशु मंदिर व ऐसे विद्यालयों में न केवल शैक्षणिक विकास हेतु शिक्षा प्रदान की जाती है, बल्कि सामाजिक और सांस्कृतिक जागरूकता को बढ़ावा देकर समाज के कमजोर वर्गों को मुख्यधारा से जोड़ने का कार्य भी करती है जो आंतरिक सुरक्षा के लिए आवश्यक है।

राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए एक और महत्त्वपूर्ण पहलू है सूचना युद्ध और साइबर सुरक्षा। आज के डिजिटल युग में फर्जी समाचार, प्रचार और साइबर हमले हमारे राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए बड़े खतरे बन चुके हैं। शिक्षित नागरिक इन खतरों को पहचानने और उनका मुकाबला करने में सक्षम होते हैं। उदाहरण के लिए भारत में साइबर सुरक्षा विशेषज्ञों ने हाल के कई वर्षों में कई

साइबर हमलों को नाकाम किया है। जैसे कि चीनी हैकर्स द्वारा भारतीय बुनियादी ढाँचे पर किए गए हमले। एनईपी २०२० में डिजिटल साक्षरता और कोडिंग को स्कूल पाठ्यक्रमों में शामिल करने के प्रावधान से भारत को साइबर सुरक्षा के क्षेत्र में वैश्विक शक्ति बनाने की दिशा में एक महत्त्वपूर्ण कदम है। इसके अलावा शिक्षा के माध्यम से युवाओं को आलोचनात्मक सोच और सूचना विश्लेषण की क्षमता विकसित करने में मदद मिलेगी जो सूचना युद्ध के खिलाफ एक प्रभावी ढाल बन सकती है। विद्या भारती के विद्यालयों में नैतिक शिक्षा और भारतीय मूल्यों पर जोर देने से विद्यार्थी दुष्प्रचार और सांस्कृतिक विखंडन के प्रयासों के विपरीत देश के प्रति अधिक जागरूक बनते हैं जो सूचना युद्ध के संदर्भ में अतिमहत्त्वपूर्ण है।

सामाजिक एकता व राष्ट्रीय अखंडता में शिक्षा का विशेष योगदान है। भारत जैसे विविधतापूर्ण देश में जहाँ विभिन्न प्रकार के धर्म, भाषाएँ और संस्कृतियाँ सह अस्तित्व में हैं, शिक्षा एक ऐसा मंच प्रदान करती है जो विभिन्न समुदायों को एकजूट करती है। स्कूलों और विश्वविद्यालयों में विद्यार्थियों को राष्ट्रीय एकता, सहिष्णुता और समावेशिता के मूल्यों को सिखाया जा सकता है, जो सामाजिक सद्भाव को बढ़ावा देता है। उदाहरण के लिए केन्द्रीय विद्यालय, नवोदय विद्यालय और विद्या भारती द्वारा निर्देशित सरस्वती शिशु मंदिरों जैसे संस्थानों ने विभिन्न पृष्ठभूमियों के छात्रों को एक मंच पर लाकर राष्ट्रीय एकता को मजबूत किया है। विद्या भारती के स्कूल विशेष रूप से भारतीय संस्कृति और मूल्यों पर आधारित शिक्षा प्रदान करते हैं जो विद्यार्थियों में सामाजिक समरसता और राष्ट्रीय गौरव की भावना को प्रोत्साहित करता है। इसके विपरीत शिक्षा की कमी सामाजिक असमानता और अलगाव को बढ़ा सकती है। जो आंतरिक अशन्ति का कारण बन सकता है।

वास्तव में शिक्षा और राष्ट्रीय सुरक्षा एक दूसरे के पूरक हैं। एक सशक्त शिक्षा प्रणाली न केवल बौद्धिक और तकनीकी रूप से मजबूत नागरिक तैयार करती है बल्कि राष्ट्रीय गौरव, नैतिकता और सामाजिक एकता की भावना को प्रबल करती है। विद्या भारती और इस जैसे शैक्षिक संगठन का योगदान इस संदर्भ में प्रेरक व अनुकरणीय है क्योंकि यह न केवल शिक्षा के प्रसार में योगदान देता है बल्कि भारतीय संस्कृति और मूल्यों को पुनःसृजन करके राष्ट्रीयता को मजबूत करता है। भारत जैसे राष्ट्र के लिए जो अपनी प्राचीन सांस्कृतिक विरासत और आधुनिक महत्त्वकांक्षाओं का अनूठा संगम है, शिक्षा वह आधार है जो इसे वैश्विक शक्ति बनने की दिशा में अग्रसर करता है। सरकार, समाज और नागरिकों को मिलकर यह सुनिश्चित करना होगा कि शिक्षा प्रणाली न केवल ज्ञान का स्रोत बने बल्कि राष्ट्रीय सुरक्षा का एक मजबूत कवच भी बने। इस दिशा में उठाए गए कदम भारत को न केवल आत्मनिर्भर बल्कि विश्व गुरु के रूप में स्थापित करेंगे। राष्ट्रीय शिक्षा नीति २०२० विद्या भारती व इस जैसे अनेक संगठनों के प्रयास से अनेक सुधारों को लागू करने के दृढ़ संकल्प और सामूहिक प्रयासों के साथ भारत एक ऐसी शिक्षा प्रणाली विकसित कर सकता है जो राष्ट्रीय सुरक्षा को सुदृढ़ करने के साथ-साथ विश्व मंच पर भारत की साख को और ऊँचा उठाए।

मुखपृष्ठ की चित्रकार - श्रीमती पूजा झा

मधुबनी चित्रशैली की विख्यात रचनाकार।
लोकजीवन के विविध आयामों,उत्सवों, ग्रामीण जीवन, मैथिली संस्कृति, अनेक विषयों पर चित्रकारी।
आपके चित्र "फेस्टीवल ऑफ मिथिला" को भारतीय दूतावास दुबई में स्थापित किया गया है।
'इम्पेक्ट ऑफ गर्ल एजुकेशन' को प्रिस्टन यूनीवर्सिटी ने खरीदा है।
कोरोना काल में बने चित्र "ब्रेव साईकिल गर्ल" 'आर्ट म्यूजियम, साइप्रस विश्वविद्यालय अमेरिका' में प्रदर्शित।
आपके बनाए चित्रों का प्रकाशन अनेक स्मारिकाओं में हुआ है।
महाविद्यालय स्तरीय प्रतियोगिता में प्रथम पुरस्कार प्राप्त किया है।
बाली संस्कृति आधारित विषय पर मिथिला शैली में बखूबी चित्रकारी की है।
टाटा की २०२१ वार्षिक डायरी में 'कला : समय की आवश्यकता' को स्थान मिला है। दस देशज राज्य शिल्प सम्मान बिहार से सम्मानित। अनेक महाविद्यालयों में चित्रकारी कार्यशालाओं में प्रशिक्षक रही है।

बच्चों के मानसिक उलझन : समस्या एवं निराकरण

बाल-मन

डॉ. सुयश शेण्डेय, एम. डी.
वरिष्ठ मनोचिकित्सक,
परामर्शदाता मनोरोग विभाग,
थेरेपी चिकित्सक,
सर गंगाराम सिटी अस्पताल,
राजेन्द्र नगर नई दिल्ली।
बच्चों के मानसिक स्वास्थ्य पर अनेक विद्यालयों में शिविरों का सफल आयोजन।

संपर्क
मो. 9981499484

बच्चों की पढ़ाई केवल किताबों या गृहकार्य तक ही सीमित नहीं रहती, यह उनके मस्तिष्क के विकास, सामाजिक जुड़ाव और घर-विद्यालय के सहयोग से गहरे रूप से जुड़ी हुई है। कई बार बहुत समझदार बच्चे भी अपने काम को अधूरा छोड़ देते हैं, कक्षा-कक्ष में ध्यान नहीं दे पाते या परीक्षा में प्रयास के बावजूद भी अच्छे अंक नहीं ला पाते हैं। इसे आलस या लापरवाही कहकर टाल देना आसान है पर अक्सर इसकी पृष्ठभूमि में भावनात्मक व व्यवहार सम्बन्धी कठिनाईयाँ होती हैं, जो बच्चे के शैक्षिक प्रदर्शन को प्रभावित कर रही होती हैं। समय रहते हुए उसकी पहचान, संवाद और सुव्यवस्थित उपचार ही इसका सही रास्ता है।

मस्तिष्क के तंत्रिका के विकास और संज्ञाहीन होने से वास्तविक असर - इसमें बच्चे की गतिविधियों पर ध्यान लगाए रखना और उसको नियंत्रित करना और आवेग को रोक लगाना कठिन कार्य है। ऐसा बच्चा पाँच-दस मिनट सुनने के बाद बाद ही भटक जाता है। गृहकार्य (होमवर्क) शुरू करने के बाद भी अधूरा छोड़ देता है। बीच में ही बोल पड़ता है या जल्दी ही गुस्सा कर बैठता है। कुछ बच्चे ज्यादा चंचल दिखाई देते हैं एवं कुछ अन्यमनस्क लगते हैं और कई में दोनों लक्षण साथ-साथ होते हैं। मन केवल लगता भर ही नहीं है, बल्कि मस्तिष्क के कार्यकारी नियंत्रण से जुड़ी कठिनाइयाँ भी हैं जो संगठन, समय प्रबंधन और कार्य समाप्ति पर असर डालती हैं और सीधे तौर पर शैक्षिक प्रदर्शन से जुड़ी हुई हैं।

Autism Spectrum Disorder (ASD) इसमें सामाजिक सम्प्रेषण और संवेदी प्रसंस्करण भिन्न-भिन्न ढंग से कार्य करता है। बच्चा दूसरों के इशारों/भावों को उतनी सहजता से नहीं पढ़ पाता है, नियमबद्ध दिनचर्या और पूर्वानुमानित वातावरण उसे सुरक्षित लगता है। इसमें बच्चा संवेदी परिहार या संवेदी बचाव जैसे तेज आवाज से कान को बचाते हुए उसे ढक लेता है या तेज प्रकाश से बचने के लिए आँख को ढक लेता है और साथ ही दूसरी स्थिति में तेज उछल-कूद करता है, तेज गति से आवाज सुनना पसंद करता है, तथा तेज रोशनी को पसंद करता है। दबाव या तेज गति का अनुभव बार-बार तलाश कर सकता है। रोशनी, गंध, बनावट, आवाज किसी भी चैनल में यह भिन्नता दिखती है। परिणाम स्वरूप सामूहिक गतिविधियाँ, मौखिक निर्देशों और बदलते समय सारिणी में कठिनाई आती है। जो सीखने की गति और भागीदारी को प्रभावित करती है।

Specific Learning Disabilitry (SLD) – Disability not Disorder यह तब दिखती है जब समझदार बच्चा पढ़ने, लिखने या गणित में एक या एक से अधिक बुनियादी मनोवैज्ञानिक प्रक्रियाओं में कठिनाई दिखाता है। अपठन विकार या वाक् विकास में शब्द की पहचान और उसका समग्र प्रवाह टूटता है। बच्चा 'राम' को 'रमा' पढ़ देता है या पंक्ति को ही छोड़ देता है। Dysgraphia में लिखावट, स्पेसिंग और स्पेलिंग बार-बार बिगड़ते हैं। Dyscalculia में संख्या बोध, तालिका ज्ञान और बहु चरणीय हल Multi Step Problem Solving भी भारी पड़ते हैं। यहाँ बुद्धि की कमी नहीं। सीखने की शैली और न्यूरल प्रोसेसिंग का फर्क है। बिना संवेदनशील सहयोग के ऐसे बच्चों का

आत्मविश्वास बाधित हो सकता है। जो सीधे तौर पर शैक्षिक प्रदर्शन को प्रभावित करता है।

बौद्धिक असमता में - इसमें सीखना संभव है, पर गति हम उम्र के साथियों की तुलना में धीमी रहती है। नए कौशल जमाने में अधिक अभ्यास, दृश्य सहायकों और छोटे-छोटे लक्ष्य की जरूरत पड़ती है। सही अपेक्षाएँ और अनुकूल पाठ्य विधियाँ यहाँ निर्णायक बनती है।

भावनात्मक व व्यवहार सम्बन्धी कठिनाइयाँ - सीखने से बाधित करती अदृश्य दीवारें, जिससे ज्यादा चिन्ता करने से बच्चा का परीक्षा या प्रस्तुति करने से पूर्व दिल धड़कना शुरू हो जाता है कि कहीं गलत न हो जाए। इस शंका में कि गलत हो जाएगा वह टालमटोल का शिकार हो जाता है। कक्षा-कक्ष में सही होने पर भी हाथ उठाने में कतराने लगता है। निराशा में रुचि घटती है। कार्य के प्रति ऊर्जा कम हो जाती है। आत्ममूल्यांकन नकारात्मक बनता है कि कितनी भी पढ़ लूँ, कोई फायदा नहीं होने वाला है।

विपरीत अवज्ञा विकार (ओडीडी) इसमें निर्देशों के प्रति बहस और चिढ़ दिखाई दे सकती है। जबकि कन्डक्ट डिसआर्डर में नियम उल्लंघन, आक्रामकता और संपत्ति/व्यक्ति-हानि तक के व्यवहार आ सकते हैं। ये स्थितियाँ अकेली भी हो सकती हैं और न्यूरोडेवलपमेन्ट डिसआर्डर के साथ सह विद्यमान भी, ऐसे में सहायता की जरूरत और बढ़ सकती है।

शुरूआती पहचान में शिक्षकों का निर्णायक स्थान - शिक्षक रोज-रोज देखने से, सूक्ष्म व्यवहार में बदलाव को पकड़ लेते हैं। काम अधूरा छोड़ना, बार-बार दिए निर्देश को भूलना, साथियों से दूरी बना लेना या अनुशासन भंग करने की दुहराव। वे जब संवेदनशील संवाद के माध्यम से इसे माता-पिता से साझा करते हैं। बच्चे पर कलंक लग जाएगा ऐसा डर लगा रहता है और इससे हेतु समाधान का रास्ता खुलता है। कक्षा स्तर पर साधारण समायोजन जैसे कि सामने की बेंच, दृश्य सहायक, संक्षिप्त और क्रमबद्ध निर्देश तथा कार्य समाप्ति पर त्वरित सकारात्मक प्रतिक्रिया अक्सर बड़ा अंतर बनाते हैं।

समाधान : सहयोगी टीम और विशेषज्ञों का समन्वित कार्य पहचान के बाद अगला चरण सुव्यवस्थित, बहु विषयी सहयोग है मनोचिकित्सक सविस्तार से मूल्यांकन करते हैं जहाँ उपयुक्त हो एडीएचडी में उत्तेजक या गैर उत्तेजक औषधि तथा उत्तेजना या निराशा में प्रमाण आधारित औषधियाँ दी जा सकती हैं। हमेशा कम खुराक में नियमित निगरानी के साथ। मनोवैज्ञानिक भावनात्मक विनियमन, नकारात्मक सोच की पहचान, सामाजिक कौशल और अध्ययन की कला पर काम करते हैं, संज्ञात्मक व्यवहारात्मक चिकित्सा, अभिभावक प्रबोधन और कक्षाकक्ष की समन्वयात्मकता के साथ। बच्चों के चिकित्सक विकासात्मक मील के पत्थर की भाँति संयुक्त परेशानियों के साथ ही नींद, थायरॉयड, एपीलेप्सी और थेरेपी जैसी प्राथमिकताओं को समेटकर उनसे निपटने की समग्र योजना निर्धारित करते हैं।

विशेष शिक्षक - एसएलडी और अन्य आवश्यकताओं के लिए एवं व्यक्तिगत जरूरतों के लिए शिक्षा योजना बनाया जाता है। लक्ष्य छोटे-छोटे, मापन योग्य, फ्रोनिक्स, ऑडियो बुक, ग्राफिक्स आर्गनाइजर, सीखो-दिखाओ-दोहराओ (आई डू/वी डू/यू डू) जैसे ढांचों के साथ। ओकुपेशनल थेरेपीस्ट (ओटी) सूक्ष्म, स्थूल, मेंटर कौशल, बैठने व लिखने की मुद्रा तथा संवेदनशील क्रियात्मक कार्य को प्रस्तुत करते हैं। याद रहे एएसडी में संवेदनशीलता को दरकिनार (कान ढकना, रोशनी से दूर होने की संवेदनशीलता और संवेदनशील अत्यधिक होना (कूदना, घूमना, गहरे दबाव/झूले की चाह) दोनों संभव है। उचित संवेदनशील भोजन और कक्षाकक्ष अनुकूलन (आवाज से दूरी बनाना, गतिविधि से अलगाव) से लाभ मिलता है। भाषा को बुलवाने वाले पॉथोलाजिस्ट/आवाज थेरेपीस्ट ध्वनि उच्चारण, शब्दावली, वाक्य संरचना और उसकी उपयोगिता पर कार्य करते हैं। यह एएसडी और भाषिक विलम्ब दोनों में केन्द्रीय भूमिका निभाते हैं।

क्रमबद्ध प्रक्रिया : पहचान से सुधार, पहले कक्षाकक्ष और घर दोनों जगह अवलोकन से संकेत एकत्र करें कि क्या कठिनाइयाँ जटिल है, शोर है, लिखावट है या चिंता ज्यादा है? फिर मनोवैज्ञानिक परीक्षण, क्लिनिकल बातचीत और आवश्यक चिकित्सा जाँच के साथ उनका समग्र मूल्यांकन हो तथा इसके आधार पर एक व्यक्तिगत योजना बने जिसमें अल्पकालिक (६-१२ सप्ताह) और दीर्घकालिक (६-१२ माह) के लक्ष्य स्पष्ट हों कि किस विषय में सहायता कौन सी थेरेपी कितनी बार, विद्यालय के साथ समायोजन किस प्रकार और कैसे किया जाए। क्रियान्वयन चरण में कक्षाकक्ष की रणनीतियाँ (छोटे चरण, दृश्य, विश्राम व विराम) पर नियमित अध्ययन के समय व सकारात्मक प्रोत्साहन, तथा चिकित्सीय शैक्षिक सत्र समन्वित रूप से चले। समायोजन चरण में परीक्षा समय में वृद्धि, वैकल्पिक उत्तर प्रारूप (ओरल टाइपिंग) कम, व्याकुलता वाले वातावरण को कम करना तथा असाइन्मेंट ब्रेकअप

जैसे उपाय हों। हर ८-१२ सप्ताह पर प्रगति समीक्षा में आँकड़ों के साथ देखें। पढ़ने का प्रवाह, त्रुटि दर, कार्य समाप्ति, कक्षाकक्ष भागीदारी और जो काम कर रहा है उसे बनाए रखे, जो नहीं कर रहा उसे बदलिए। सह विद्यमान स्थितियाँ जैसे एसएलडी के साथ चिंता या ऑटिज्म के साथ एडीएचडी एक साथ सम्बोधित हों, एक विषय की प्रगति दूसरे विषय की प्रगति को सुगम करती है।

घर, स्कूल एवं क्लिनिक में एक ही टीम हो। सबसे टिकाऊ सुधार तब आता है जब माता-पिता, शिक्षक और विशेषज्ञ एक सी ही भाषा बोलते हैं। बच्चे के प्रति सम्मानजनक व्यावहारिक और समाधान केन्द्रित। घर पर निर्देश छोटे और समय सीमा वाले हों (दस मिनट में यह अनुच्छेद पढ़ना है) बच्चे को यह अहसास दिलाना कि वह इन निर्णयों में भागीदार है और उसके प्रयास पर तुरंत सराहना देना। (जैसे आज तुमने पंक्ति नहीं छोड़ी-शाबास) अपने आप में, बच्चे को हमारा उनसे जो अपेक्षित संस्कारित व्यवहार है उसकी ओर सहजता से ले जाता है। स्कूल में शिक्षक उसी रणनीति को कक्षाकक्ष के कार्य में पिरो दें। क्लिनिक में वही लक्ष्य थेरेपी सत्रों का कम्पास बने। यह निरंतरता बच्चे के मस्तिष्क को नया ढाँचा अभ्यास कराने का मौका देती है। यही न्यूरो प्लास्टिसिटी का व्यवहारिक उपयोग है।

समग्र दृष्टि अनिवार्य :-दवा अकेली पूरी कहानी नहीं, यहाँ तक कि थेरेपी भी नहीं। बच्चों के मस्तिष्क का तंत्रिका तंत्र और न्यूरल कनेक्शन इस आयु में अत्यन्त गतिशील होते हैं और निरंतर बदलते रहते हैं। समय पर व्यवहार सम्बन्धी कठिनाइयों को केवल मनोवैज्ञानिक ढंग से देखते हैं, सीखने की समस्याओं को यदि विशेष शिक्षक सँभालते हैं या वाणी से जुड़ी कठिनाइयों को स्पीच थैरेपिस्ट देखते हैं। यदि पूरी टीम मिलकर काम नहीं करती है तो कई बार मूल निदान छूट जाते हैं। दुष्परिणाम यह होता है कि बहुमूल्य समय व्यर्थ चला जाता है। जब वास्तव में बच्चे के मस्तिष्क और विकास में गहरे परिवर्तन संभव होते हैं। एक बार यह आयु निकल जाने के बाद आगे चलकर कोई उपाय उतना प्रभावी नहीं होता है, जितना उचित समय पर होता है। इसलिए एक समग्र सोच व दृष्टिकोण टीम के लिए अनिवार्य है। समन्वित चरणबद्ध और आँकड़ा आधारित काम ही बच्चे को सुरक्षित और आत्मविश्वासी बनाता है। तभी उसका शैक्षिक प्रदर्शन स्थायी रूप से सुधरता है।

निष्कर्ष : तंत्रिका विकास दोष तथा भावनात्मक व व्यवहार सम्बन्धी कठिनाइयाँ अदृश्य बाधाओं की तरह बच्चे के सामने खड़ी हो सकती है। शिक्षक सूक्ष्म संकेत को पहचानें, माता-पिता सहानुभूति और धैर्य के साथ पहल करें। विशेषज्ञ एक समन्वित प्रमाण आधारित योजना बनाकर साथ चलें तो बच्चा केवल अंक ही नहीं बल्कि आत्मविश्वास, सामाजिक कौशल और जीवन कौशल में भी आगे बढ़ता है। यही वह संगठित और मानवीय राह है जो बच्चे को उसकी वास्तविक क्षमता तक कक्षा कक्ष से लेकर जीवन पर्यन्त पहुँचाती है।

दिल से निकले कविता हो गए !

लेखक - सुश्री वन्दना
समीक्षक - डॉ ऋतु

कविता प्रायः सबके भीतर होती है। किन्तु उसे शब्दों में अभिव्यक्त, प्रतिभावान ही कर पाते हैं। 'दिल से निकले कविता हो जाए' का लेखन रचनाकार वंदना त्रिपाठी ने किया है। ये प्रतिभासम्पन्न कवयित्री हैं। वे 'वाद और विवाद' में बंधी रचनाकार नहीं हैं। वे कहती हैं -

जन्म का बंधन होता, हार भी खुशी-खुशी माने।

हृदय के विविध भावों को उन्होंने कागज पर उकेरा है। जिनमें एक ओर नारी सुलभ अनुभूतियाँ हैं तो दूसरी ओर समाज और राष्ट्र के ज्वलन्त प्रश्न। वंदना जी की कविताओं में हृदय और मस्तिष्क का सुन्दर संतुलन है। अर्थ की अनेक छवियों से लैस इनकी कविताएँ अनेक परत लिए हुए हैं- 'नहीं रही नारी कठपुतली, नाचती नहीं अब इशारों पर'।

सरल-सहज शब्दों में रचित ये कविताएँ पाठकों को गहराई तक प्रभावित करती हैं। ८४ कविताओं का यह संकलन पाठकों को भविष्य के प्रति एक समर्थ और गुणी कवयित्री के रूप में आशावान् बनाता है।

सिंधु जल समझौते की तथ्यात्मक जानकारी

सामयिकी

श्री चमन शर्मा
वरिष्ठ अधिवक्ता,
उच्चतम न्यायालय दिल्ली
पूर्व कोषाध्यक्ष,
शाहदरा बार एसोसिएशन,
पूर्व प्रबंधक, गीता बाल भारती
व. मा. विद्यालय
विधि सम्बन्धी विषयों पर
गहन चिंतन व लेखन

संपर्क
मो. 9811861348

२२ अप्रैल २०२५ को जम्मू कश्मीर के पहलगाम के बैसरन के मैदानों में आतंकवादियों ने पर्यटकों के एक समूह पर भयानक हमला कर दिया जिसमें देशभर से आए निर्दोष पर्यटकों को बड़ी ही बेरहमी से निशाना बनाया गया तथा पर्यटकों को उनका धर्म पूछ-पूछ कर उनके परिवार वालों के सामने ही मौत के घाट उतार दिया गया। इस नृशंस हमले में मारे गए भारतीय नागरिकों के कारण प्रत्येक भारतीय के मन में गुस्से का गुब्बार फूट निकला तथा भारत व भारत सरकार ने आतंकवादियों व उनके समर्थन में खड़े पाकिस्तान, पाकिस्तानी सेना व उनके समर्थक आतंकवादी संगठनों को सबक सिखाने के लिए सभी सैनिक व कूटनीतिक कदमों के इस्तेमाल करने में साहसिक निर्णय लिया। जिसमें भारतीय सेना द्वारा किए गए सैनिक 'आपरेशन सिन्दूर' की धमक व हमारी सेना का पराक्रम पूरी दुनिया देख चुकी है। परिणामस्वरूप पाकिस्तान घुटने पर आ गया व पाकिस्तान द्वारा भारतीय सेना के सामने संघर्ष विराम का प्रस्ताव रखा गया व दोनों देशों के बीच संघर्ष विराम लागू हो गया। यह ऑपरेशन ७ मई से १० मई २०२५ की मध्यरात्रि से लेकर युद्ध विराम तक चला, ऑपरेशन का उद्देश्य पहलगाम में हुए आतंकवादी हमले का जवाब देना था।

ऑपरेशन सिन्दूर के अलावा भारत सरकार ने पाकिस्तान पर दबाव बनाने के लिए कुछ कूटनीतिक कदम भी उठाए। जैसे भारत-पाकिस्तान के अटारी बार्डर पर प्रत्येक गतिविधि को रोकना व सभी पाकिस्तानी नागरिकों का वीजा निरस्त करने जैसे महत्त्वपूर्ण कदम उठाते हुए एक ऐसा निर्णय लिया जिससे पूरा का पूरा पाकिस्तान बिलबिला उठा। जिसे पाकिस्तान के राष्ट्रपति ने 'गले की नस' काटने की संज्ञा दी थी। वह था भारत सरकार द्वारा **सिंधु जल-संधि** को निलम्बित करना। आज हम उसी सिंधु जल-संधि (आईडब्ल्यूटी) के बारे में विस्तार से चर्चा करेंगे।

सिंधु जल-संधि है क्या ?-

सन् १९४७ में स्वतंत्रता प्राप्ति के समय भारत व पाकिस्तान के बीच भौगोलिक संसाधनों का बँटवारा तो हो गया लेकिन भारत से पाकिस्तान की तरफ बहने वाली नदियों के जल एवं प्रवाह का बँटवारा नहीं हो पाया। स्वतंत्रता के समय भारत और पाकिस्तान के बीच जो सीमा रेखा खींची गई वह सिंधु नदी घाटी के बीचों-बीच से गुजरी जिसके परिणामस्वरूप भारत ऊपरी इलाका बन गया। जबकि पाकिस्तान निचला इलाका क्योंकि सभी नदियों का जल भारत से होकर पाकिस्तान की ओर बहता है। पाकिस्तान के पंजाब में सिंचाई के लिए जो नहरें इस्तेमाल होती थीं वे दो बड़ी परियोजनाओं पर निर्भर थी। जिनमें एक रावी नदी पर माधोपुर और दूसरी सतलुज नदी पर फिरोजपुर। आजादी के समय ये दोनों परियोजनाएँ भारत के हिस्से में आ गईं। आजादी के बाद से ही पाकिस्तान, भारत के खिलाफ पानी के उपयोग व बहाव के नियंत्रण को लेकर तरह-तरह के आरोप लगता रहा है। बँटवारे के समय ही पाकिस्तान सरकार के असहयोग व जम्मू कश्मीर पर पूर्वनियोजित हमले को लेकर भारत ने कुछ समय के लिए पाकिस्तान की ओर बहने वाला पानी रोक दिया था लेकिन संघर्ष विराम के कारण वर्ष १९५१ में ही भारत ने पाकिस्तान को पूरा पानी देना शुरू

कर दिया था। पानी को फिर से रोके जाने की आशंकाओं को लेकर पाकिस्तान इस मुद्दे को लेकर संयुक्त राष्ट्र सभा में चला गया व भारत पर पानी की कटौती का आरोप लगया। इस मसले को लेकर संयुक्त राष्ट्र में भारत व पाकिस्तान के मध्य जल बँटवारे व क्षेत्रीय शक्ति को स्थापित करने के लिए समझौते की प्रक्रिया शुरू की गई। भारत व पाकिस्तान के मध्य जल संसाधनों के विकास व बँटवारे को लेकर अन्तरराष्ट्रीय पुर्ननिर्माण एवं विकास बैंक की मध्यस्थता में बातचीत हुई। यह प्रक्रिया नौ वर्षों तक लगातार जारी रही व विश्व बैंक की मध्यस्थता में यह समस्या सुलझा। अंततः १९ सितम्बर १९६० कराची में यह संधि की गई जिसमें तत्कालीन पाकिस्तान के राष्ट्रपति अयूबखान व भारत के तत्कालीन प्रधानमंत्री श्री जवाहरलाल नेहरू ने हस्ताक्षर किये तथा इस पर विश्व बैंक के उपाध्यक्ष श्री डब्ल्यू ए.बी.इलिफ ने भी हस्ताक्षर किए। यह संधि १ अप्रैल १९६० से प्रभावी मानी गई तथा उसी समय से लागू की गई।

सिंधु जल संधि के अनुसार अविभाजित भारत की पूर्वी नदियों सतलुज, ब्यास, रावी जिनका वार्षिक जलप्रवाह औसत लगभग ३३ मिलियन एकड़ फीट है उनका पूरा जल भारत को बिना किसी रोक-टोक के उपयोग करने के लिए आवंटित किया गया। वही पश्चिमी नदियों सिंधु, झेलम, चिनाब जिनका औसत वार्षिक प्रवाह लगभग १३५ मीलियन एकड़ फीट है का अधिकांश जल पाकिस्तान को आवंटित किया गया है। हालाँकि भारत को पश्चिमी नदियों के जल का उपयोग घरेलू जरूरतों, गैर खपत उपयोग, कृषि कार्यों और जल विद्युत् उत्पादन के लिए अनुमति है। इन नदियों से जल विद्युत् उत्पादन का अधिकार भारत को बिना रोक-टोक के प्राप्त है। इस संधि में निर्धारित डिजाइन और संचालन की शर्तों का पालन हो यानि जल बहाव का न्यूनतम बिंदु बरकरार रहना चाहिए। भारत न्यूनतम जल प्रवाह को प्रभावित किए बिना पश्चिमी नदियों पर अधिकतम ३.६ मिलियन एकड़ फीट तक जल भंडारण भी कर सकता है। इस संधि में कुल १२ अनुच्छेद व ८ परिशिष्ट है।

संधि के अनुच्छेद तीन (१) के अनुसार भारत पर यह दायित्व है कि वह पश्चिमी नदियों के जल के प्रवाह को पाकिस्तान में बहने देने के लिए बाध्य है। संधि के अनुच्छेद पाँच के अनुसार ६२,०६०,००० पौंड पाकिस्तान के जल स्रोतों के विकास के लिए दस समान वार्षिक किस्तों में भुगतान करने के लिए भी सहमत हुआ है। इसके अलावा संधि में यह भी प्रावधान किया गया कि यदि संधि आगे बढ़ती है तो निम्नलिखित प्रकार के भुगतान जिसमें एक वर्ष के लिए ३,१२५,००० पौंड, दो वर्ष के लिए ६,४०६,२५० पौंड व तीन वर्ष के लिए २,८५०,००० पौंड निर्धारित किए गए।

संधि के अनुच्छेद -६ के अनुसार भारत पाकिस्तान को पानी के भंडारण व प्रवाह का दैनिक डाटा भी प्रदान करेगा जिसमें पानी के बहाव की जानकारी पाकिस्तान को रहेगी और वह पानी के नियन्त्रण को सुरक्षित कर सकेगा। संधि के अनुच्छेद-८ एवं ९ में दोनों पक्षों के मध्य यदि कोई विवाद होता है तो उसके समाधान हेतु त्रिचक्रीय व्यवस्था की गई है। जिसमें

चरण १ स्थायी सिंधु आयोग :- यदि संधि की व्याख्या या इसके उल्लंघन से सम्बन्धित कोई संदेह या विवाद उत्पन्न होता है तो इसे हल करने की पहली जिम्मेदारी स्थायी सिंधु आयोग की होती है। जिसमें संधि के संचालन से जुड़े संवाद के लिए दोनों देशों से एक-एक आयुक्त के साथ स्थायी सिंधु आयोग की नियुक्ति करने की आवश्यकता है जिसको नियमित रूप से वर्ष में कम से कम एक बार बारी-बारी से भारत व पाकिस्तान में बैठक करना आवश्यक है।

चरण २ तटस्थ विशेषज्ञ :- यदि स्थायी सिंधु आयोग में किसी तकनीकी विषय को लेकर सहमति नहीं बन पाती है तब मामला तटस्थ विशेषज्ञ के पास भेजा जाता है, जिसकी नियुक्ति विश्व बैंक के द्वारा की जाती है, इसका निर्णय सभी पक्ष को मानना बाध्यकारी होता है।

चरण ३ मध्यस्थता न्यायालय : - यदि विशेषज्ञ भी मामले को हल करने में विफल रहता है तो विवाद मध्यस्थता न्यायालय के पास भेजा जाता है। यह आमतौर पर सात सदस्यों वाला अस्थायी अधिकरण होता है जो अपनी प्रतिक्रियाओं व निर्णयों का निर्धारण बहुमत के द्वारा करता है।

क्या भारत एकतरफा सिंधु जलसंधि समाप्त कर सकता है? - सिंधु जल संधि जिसने अब तक चले लगातार सीमापार आतंकवाद और दोनों देशों के मध्य हुए चार युद्धों एवं चली आ रही दुश्मनी के बावजूद अपना अस्तित्व बचाए रखा उसे भारत सरकार की प्रधानमंत्री की अध्यक्षता में दिनांक २३ अप्रैल २०२५ को हुई सुरक्षा मामले की समिति की आपात बैठक में सिंधु जल संधि को अनिश्चित काल के लिए स्थगित करने का निर्णय लिया गया है। परन्तु इससे एक बड़ा सवाल जन्म लेता है कि क्या भारत एकतरफा सिंधु जल संधि को समाप्त कर सकता है।

सिंधु जल संधि से बाहर निकलने का कोई प्रावधान नहीं है। यानि भारत सरकार या पाकिस्तान सरकार में कोई भी अपनी तरफ से बिना दूसरे पक्ष की सहमति से, कानूनी तौर पर इससे से बाहर नहीं जा सकता है। इस संधि की कोई भी समाप्ति की तिथि नहीं है। इसमें किसी भी प्रकार का संशोधन दोनों पक्षों की सहमति से ही सम्भव है।

उपर्युक्त संधि के विश्लेषण से यह पता चलता है कि यह संधि भारत के हित में नहीं है तथा इससे ज्यादा लाभ पाकिस्तान को है। क्योंकि सभी नदियाँ भारत से होकर गुजरती हैं तब भी पूरे जल का ८० प्रतिशत पानी का उपयोग पाकिस्तान के हिस्से व केवल २० प्रतिशत पानी का निर्बाध उपयोग भारत के हिस्से में आया है। इसके अलावा पाकिस्तान के जल स्रोतों के विकास के लिए भारत को ६२,०६०,००० पौंड का भुगतान करना भी भारत के हित में नहीं है। इससे पाकिस्तान को ही लाभ पहुँचता है।

सिंधु जल संधि का विरोध उस समय कांग्रेस के संसद सदस्यों ने भी किया था जिसमें श्री इकबाल सिंह एवं हरिश्चन्द्र माथुर ने संसद् में बहस के दौरान संधि का विरोध करते हुए चेतावनी दी थी कि भारत ने केवल पाकिस्तान को खुश करने के लिए भारत के हित का त्याग कर दिया है। श्री अटल बिहारी वाजपेयी जी ने इसे भारत के लिए नुकसानदायक बताया था। जम्मू काश्मीर के उपराज्यपाल श्री मनोज सिन्हा जी ने इस संधि की आलोचना करते हुए कहा कि भारत को इस संधि के आधार पर अपने ही क्षेत्रों में नदियों की सफाई नहीं कर सकता है। इस पर तत्कालीन प्रधानमंत्री जवाहर लाल नेहरू जी संसद् में जवाब देते हुए इसे 'शान्ति को खरीदने' की संज्ञा दी थी। अर्थात् उस समय के नेता भी इस संधि के पक्ष में नहीं थे। पाकिस्तान के राष्ट्रपति ने भी हस्ताक्षर के बाद तुरन्त यह घोषणा की थी कि इस संधि का कोई भी प्रभाव जम्मू काश्मीर के विवाद पर नहीं पड़ेगा। जवाहर लाल नेहरू का शान्ति को खरीदने का प्रयास पाकिस्तान नेताओं के दोगलेपन से विफल हो गया।

सिंधु जल संधि के स्थगन प्रभाव - इस संधि को स्थगित किए जाने पर भारत के पास कई विकल्प मौजूद है क्योंकि भारत सरकार कुछ निर्णय लेती है तो संधि को समाप्त करने की दिशा में यह पहला कदम हो सकता है। पाकिस्तान की जीवनरेखा कही जाने वाली सिंधु और उसकी सहायक नदियों के पानी पर नियंत्रण होते ही पाकिस्तान के लोग पानी के लिए तरस जाएँगे। एक अनुमान के मुताबिक २१ करोड़ पाकिस्तानी नागरिकों की जल की जरूरतों की पूर्ति इन्हीं नदियों पर निर्भर करती है। पाकिस्तान के प्रमुख शहर जैसे कराची, लाहौर और मुलतान भी, सिंधु और उसकी सहायक नदियों के जल पर निर्भर है तथा पाकिस्तान के तरबेला व मंगला जैसे पावर प्रोजेक्ट भी इसी नदी पर निर्भर हैं। पाकिस्तान की शहरी जल आपूर्ति ठप हो सकती तथा बिजली उत्पादन बुरी तरह से प्रभावित हो सकता है।

पाकिस्तान की ८० प्रतिशत कृषि योग्य भूमि १६ मीलियन हैक्टेयर सिंध नदी जल प्रणाली पर निर्भर है। सिंधु जल संधि से मिलने वाले पानी का ६३ प्रतिशत हिस्सा सिचाई के लिए प्रयोग किया जाता है। जिसके बिना वहाँ खेती किया जाना सम्भव नहीं है। सिंधु जल संधि के स्थगित होने पर पाकिस्तान में खाद्य उत्पादन में गिरावट आ सकती है एवं खाद्यान के आभाव में भुखमरी फैल सकती है। इसलिए पाकिस्तानी सेना प्रमुख ने सिंधु जल को स्थगित करने को पाकिस्तान के 'गर्दन की नस' को काटने की संज्ञा दी है।

निष्कर्ष - उपर्युक्त विश्लेषण के आधार पर सिंधु जल संधि को भारत के हित में न मानते हुए व पाकिस्तान सरकार द्वारा प्रायोजित आतंकवाद के संरक्षण व संवर्धन करने के खिलाफ प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने इस संधि को स्थगित करते हुए कहा कि **"पानी व खून साथ-साथ नहीं बह सकते, अतः जब तक पाकिस्तान आतंवादियों का साथ देना बंद नहीं कर देता यह संधि स्थगित रहेगी।"**

भारत द्वारा निलम्बित शब्द का प्रयोग अपने दायित्वों को अस्वीकार करने के रूप में नहीं देखा जाना चाहिए। बल्कि यह रणनीतिक संकेत है कि संधियों को व्यावहारिक, राजनैतिक परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए लचीला एवं उसे प्रासंगिक बनाया जाना चाहिए। संधियाँ तभी टिकाऊ हो सकती हैं जब सभी पक्ष अपनी विश्वसनीयता बनाए रखते हैं और भारतीय हितों को कोई क्षति न पहुँचती हो। हालांकि इस संधि को समाप्त करने का कोई आधार नहीं है। लेकिन संधियों के कानून पर आधारित वियना कन्वेन्शन १९६९ के अनुच्छेद ६२ के तहत पर्याप्त आधार मौजूद है जिसके तहत ऐसी संधि को खारिज किया जा सकता है।

•••••••••

शेषाद्रि जी की सादगी और महानता

संस्मरण

श्री आलोक गोस्वामी

सहयोगी सम्पादक, पांचजन्य
सम्पादकीय विभाग में २५ वर्ष,
देश-विदेश में रिपोर्टिंग का अनुभव,
सम्पूर्ण भारत में अनेक बार प्रवास,
देश : अनेक समस्याओं पर रिपोर्टिंग
कश्मीर-विस्थापित हिन्दुओं, पूर्वोत्तर में
ईसाइयों-त्रस्त जनजातीय बंधुओं की
पीड़ा व धर्मान्तरण के लिए मजबूरी
पर विशेष रिपोर्टिंग,
संसद् के अनेक सत्रों की रिपोर्टिंग,
इस्लामी देशों के अनेक नेताओं का
साक्षात्कार।
राजनीति, विदेश से संबंद्ध, आर्थिक
विषयों एवं आंतरिक सुरक्षा पर
विशेष रुचि।
२५० से अधिक नेताओं, सामाजिक
प्रतिष्ठित विभूतियों, संतों,उद्योगपतियों
प्रशासकों आदि के साक्षात्कार।
ऑल इण्डिया रेडियो में कार्यक्रमों की
प्रस्तुति और पत्रकारिता का अनुभव।

संपर्क

मो. 9810040656

बात उन दिनों की है जब श्री एच.वी. शेषाद्रि जी राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सह सरकार्यवाह थे। १९२६ बंगलुरु में जन्मे शेषाद्रि जी बड़े ही उच्चकोटि के प्रख्यात विद्वान्, विचारक, दार्शनिक, लेखक, चिंतक, समाजसेवी और सबसे बढ़कर सन्त जैसा ममत्व भरा दिल..वाले महामानव थे।

मा. शेषाद्रि जी खूब लिखते थे कन्नड़ और अंग्रेजी में ...एक से एक विषयों पर, जो किसी को भीतर तक झकझोर दे।

यह शायद २००० की बात होगी उन्होंने जब पुनर्जन्म के हमारे विश्वास को सबूतों के साथ साबित करने वाले विदेशी मनोचिकित्सक एडगर केसी की किताब 'मेनी मानसियन्स' पर एक श्रृंखला लिखी थी अंग्रेजी में। तब के पांचजन्य के सम्पादक के मन में विचार आया कि इस लेख को हिन्दी में अनुवाद कर छापा जाए उन्होंने ये चुनौती मुझे देते हुए कहा "इसे हिन्दी अनुवाद करो, फिर उसे शेषाद्रि जी को सुनाकर, उन्हें उसे दिखाकर स्वीकृत कराओ कि उसे छापना है या नहीं।" एकबारगी तो मैं काँप गया कि शेषाद्रि जी का लिखा अंग्रेजी का आर्टिकल!! मारे गए, वे तो बहुत ही बड़े अधिकारी हैं। उनके पास जाने की मेरी क्या बिसात, उनके लिखे को साहित्यिक यानी शास्त्रीय हिन्दी में बनाकर उनको सुनाऊँ ! बाप रे बाप। ये नहीं होने का मुझसे।

इधर शेषाद्रि जी ने अपना पहला अंग्रेजी का एपिसोड किसी के हाथ मुझे भिजवा दिया। उनके लिखे दो पृष्ठ की सामग्री पकड़ते ही हाथ एकबारगी कंपाकपा गया। लेकिन हिम्मत बटोरी और बैठ गया जमकर, जी-जान लगाकर उसकी हिन्दी बनाई। लिखने के बाद कार्यालय में फोन किया कि उनके बेहद कीमती वक्त में से कुछ पल मिलें तो हिन्दी में अनुवाद किए लेख को सुनाने के लिए आ जाऊँ। जवाब मिला अभी बाहर हैं। कल दिल्ली आएँगे तो आपका सन्देश दे देंगे उनको। मुझे जान में जान आने का एहसास हुआ तथा क्षणिक आनन्द मिला कि चलो कल तक तो राहत मिली।

अगले दिन संघ के केन्द्रीय कार्यालय केशव कुंज में उनके कमरे में हौले से कदम धरा। सामने अपने पलंग पर बैठे शायद मूढ़ी-चना खाते दिखे। 'भाईसाहब' किसी तरह मैं हलक से आवाज निकाल कर बोला। पुनः साहस बढ़ाकर बोला "भाई साहब, मैं आलोक गोस्वामी।" मेरी बात पूरी होने से पहले शेषाद्रि जी बोले "हाँ आलोक जी ! आइए, आइए, मैं इंतजार ही कर रहा था आपका। लीजिए पहले ये खाइए।" इतना सहज आत्मीयता भरा व्यवहार। मेरी अंदर की आधी घबराहट छू मंतर हो गई। अब आधी इस बात की बची थी कि मेरा अनुवाद उन्हें जँचेगा कि नहीं। मैंने सुनाना शुरू किया ..... वे आँखें मूँदे एक-एक शब्द ध्यान से सुनते रहे। पूरा सुनने के बाद बोले, "वाह, बहुत सुन्दर किया आपने"। फिर तो हर सप्ताह वह मुझे अपना अंग्रेजी की एक एक कड़ी भेजते और मैं उनका हिन्दी अनुवाद कर उन्हें सुनाता। यदि शेषाद्रि जी दिल्ली से बाहर चले जाते तो उनके नाम फैक्स भेजकर फोन कर उनसे सुझाव ले लेता था। ज्यादातर तो वह बहुत अच्छा ही बोलते, और यदि किसी शब्द में सुधार सुझाते तो साथ यह भी कहते कि "यह मेरा सुझाव है, आपको लगे तो ही प्रयोग कीजिएगा।" यानि मैं दंग रह जाता था यह देखकर कि इतने

बड़े इतने बड़े महान् विचारक, लेखक, अधिकारी, मुझ जैसे को सिर्फ सुझाव दे रहे हैं। महान् लोगों की महानता ही है कि सामने वाले की झिझक मिटाकर उसे सहज ही रखते हैं।

मा. शेषाद्रि जी के साथ, हर सप्ताह मिलते रहने का लम्बा सिलसिला चला। हम दोनों के बीच समझ बनती गई। यह देखकर उनके सहायक श्री अनिल जी ने एक मौके पर मुझसे अनुरोध कर कहा कि आलोक जी, शेषाद्रि जी के साथ मेरी एक भी फोटो नहीं है, आप किसी तरह उनके साथ मेरी एक फोटो खिंचवा दीजिए, बड़ी मेहरबानी होगी। और फिर ऐसी ही एक बैठक के बाद, फोटो खिचवाने से परहेज करने वाले शेषाद्रि जी से मैंने अनुरोध किया और वे मान गए, लेकिन बोले, "जैसे बैठा हूँ वैसे ही फोटो ले लो भाई।" उन्हें बिना बताए अनिल जी (बीच में) और एक साथी भी उनके पीछे आ खड़े हुए। उस पल मैं अपनी हँसी मुश्किल से दबा पाया था, जो फोटो में मेरे चेहरे से झलक भी रहा है।

यहाँ बता दूँ कि शेषाद्रि जी की वह सीरीज बहुत पढ़ी गई और पसंद की गई। यह मेरे पिछले जन्म के किसी सत्कर्म का ही फल था कि इस कैरियर में कई महान् लोगों के बाजू में बैठकर उनसे बतियाना हुआ। माननीय मोदी जी भी उनमें से एक हैं। उस बाबत फिर कभी।

श्रद्धेय श्री अधीश जी भटनागर : चरणामृत और प्रसाद

हल्के-फुल्के अंदाज में हमेशा मुस्कुराकर मिलने वाले और ठहाके लगाकर बात करने वाले अंदर से कितनी जीवटता से भरे होते हैं इसका अंदाजा मुझे श्री अधीश कुमार जी कि निकटता से मिला था। वे राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के अखिल भारतीय प्रचार प्रमुख थे, वे आगरा से थे। इसलिए शायद मुझ बृजवासी से प्रेम करते थे। मिलते ही वे कंधे पर हाथ रखकर पूरा हालचाल जान लेते थे। ५२ साल के जिंदादिल इंसान, साधारण कुर्ता-पायजामा पहने पूरे देश में घूमते, काम में जुटे रहते, अपने बारे में तो सोचते ही नहीं थे कभी।

एक शाम करीब ४.३० बजे मैं अपनी बाइक लेने पार्किंग की ओर बढ़ा ही था कि एक कार से उतरकर उन्होंने पीछे से मुझे आवाज लगाई..मैं मुड़ कर नमस्ते करके उनके पास गया, तो आदतन कंधे पर हाथ रखकर पूछने लगे "कहाँ जा रहे हो इस वक्त?" मैंने कहा "बस यहीं पास तक"। अधीश जी मेरे साथ राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के केन्द्रीय कार्यालय में प्रवेश करते हुए बोले "चले जाना, पहले मेरे कमरे पर चलकर एक कप चाय पी लेते हैं, दोपहर में भोजन नहीं किया था आज।" कमरा खोलकर मुझे बैठाया और किसी को चाय लाने को कहा।

वहाँ से जवाब मिला कि (जो मुझे भी सुनाई दिया) "चाय तो अब नहीं मिल पाएगी, भाई साहब।" जवाब सुनकर अधीश ने मेरी तरफ देखा और जबरदस्त ठहाका लगाते हुए बोले "जो हरि इच्छा।"

२००७ में उनके पेट के निचले हिस्से में दर्द रहने लगा था। जाँच हुई तो पता चला चौथे स्टेज का कैंसर है, बस दो-तीन महीने और, फिर..!

अपने कमरे में ही आराम करने की सलाह दी गई थी उन्हें, चलना-फिरना लगभग न के बराबर। मैं बीच-बीच में समय निकालकर मिलने जाता था उनसे और हर बार उनका यही कहना

होता था "मैं मस्त हूँ, कोई दर्द नहीं, बिहारी जी की कृपा से।" लेकिन हम सभी जानते थे कि जबरदस्त बेचैनी और दर्द झेल रहे थे वे। पलंग के सामने दीवार पर टँगी ठाकुरजी (बाँके बिहारी जी) की तस्वीर निहारा करते, बस ..एक करवट से लेटे। हालत बिगड़ती जा रही थी। एक दिन दोपहर में मुझसे उन्होंने कहा, "भाई अगर बिहारी जी का चरणामृत और प्रसाद के दो दाना मिल जाते तो ?।"

अधीश जी मुँह से कुछ खा तक नहीं पा रहे थे तब। लेकिन उनकी वह इच्छा शायद आखिरी थी। उसे पूरा करने की ठान कर मैंने वृन्दावन में बड़े भाई श्री विलास जी को फोन कर पूरी बात बताई। उन्होंने भी अगले ही दिन किसी के हाथ मुझ तक चरणामृत और प्रसाद पहुँचाया !!

२ जुलाई २००७ दोपहर में वे दोनों चीजें लेकर अधीश के कमरे में पहुँचा व उनसे बोला, भाई साहब, प्रसाद लाया हूँ श्री बिहारी जी का। इधर करवट लेकर चरणामृत ले लीजिए। अभी मैं बोल ही रहा था कि पूज्य सरसंघचालक जी कमरे में आ गए। सारी बात जानकर, बिहारी जी के चित्र की ओर संकेत करते हुए उन्होंने कहा 'लीजिए अधीश जी, ठाकुर जी का प्रसाद लीजिए।' माननीय भागवत जी आवाज सुनकर अर्द्धबेहोशी की हालत में ही किसी के सहारे से हल्की सी करवट बदली अधीश जी ने। चेहरे पर मद्धम मुस्कान लिए हुए उन्होंने प्रसाद के लिए मुँह खोला !! उनके छोटे भाई श्री आशुतोष जी ने चरणामृत और प्रसाद खिलाया उन्हें। एक गहरी तसल्ली का भाव था उस वक्त अधीश जी के चेहरे पर। तब मानो कोई तकलीफ ही नहीं थी उनके शरीर में। लेकिन, आखिरकार दो दिन बाद ४ जुलाई २००७ की दोपहर खबर आई। कि अपनी आँखें दान कर गए थे अधीश जी, इस लिए आज भी एक मस्ती, आनन्द और तृप्ति का भाव फैला रही है चारों ओर !

श्रद्धेय हो.वे.शेषाद्रि जी विद्या भारती के कार्य को एक शैक्षिक आन्दोलन बताते हुए कहते हैं कि "यह आन्दोलन क्षणिक न होकर सतत चलने वाला आन्दोलन है। हमें सरकार केन्द्रित जनमानस की मानसिकता को बदलना है। उन्होंने एडम स्मिथ की पुस्तक के आधार पर तथ्य दिए कि भारत में समाज द्वारा संचालित बंगाल प्रांत में (बिहार व आसाम को मिलाकर) तथा मद्रास प्रांत में (कर्नाटक व केरल को मिलाकर) एक-एक लाख विद्यालयों में सभी जातियों के शिक्षक थे, केवल ब्राह्मण ही नहीं थे जबकि उस समय इंग्लैंड में केवल तीन हजार विद्यालय थे जिनमें केवल प्रशासनिक अधिकारियों तथा राज-परिवार के ही बच्चे ही शिक्षा प्राप्त करते थे। उन दिनों भारत राजनैतिक दृष्टि से भी जागृत था। श्री राजगोपालाचार्य के अनुसार कई प्रदेशों में सरकार के न होते हुए भी यहाँ की जीवनधारा अखण्ड रूप से चलती रही है।"

उनका मानना था कि हमें समाजोन्मुख जीवन के आधार पर ही विद्यालय खड़े करने हैं। विद्यार्थी इंजीनियर, डाक्टर बने पर उसके साथ ही समाज सेवा तथा देशप्रेम व देश सेवा का भाव भी जाग्रत होना चाहिए। नई पीढ़ी का बालक आज अपना मार्ग ढूंढ रहा है। आज सच्चे गुरु की उसे आवश्यकता है। हमें जीवन तथा शिक्षा में भारतीय जीवन दर्शन की अवधारणा ध र्म, अर्थ, काम व मोक्ष अपनाना चाहिए। भारतीय जीवन में ब्रह्मचर्य तथा संयम को महत्त्वपूर्ण माना गया है। भारतीय दर्शन में एकाग्रता के लिए योग को महत्त्वपूर्ण माना गया है जो किसी धर्म विशेष से सम्बन्धित नहीं है। केन्या के मेयर के अनुसार योग का सम्बन्ध किसी पंथ विशेष से नहीं है।

भारतीय समाज ने सदैव जीवन मूल्यों को महत्त्वपूर्ण माना है, जीवन के समग्र विकास की ओर ध्यान दिया गया है। आज आवश्यकता है शिक्षा को संस्कारों के माध्यम से जोड़कर समाज में एकता, एकात्मता तथा समरसता के भाव जाग्रत करने की। अन्याय के विरुद्ध लड़ने की हमारी मानसिकता होनी चाहिए। बाल शंकराचार्य की भाँति समाज में परिवर्तन लाने के लिए अकेला खड़ा होने का साहस चाहिए। इस प्रकार के बालकों को तैयार करने के लिए शिक्षकों की सकारात्मक भूमिका होनी चाहिए। पुत्रवत् स्नेह के साथ प्रत्येक बालक का विकास करना होगा। छात्र को भी अपने गुरु के प्रति आस्था रखनी चाहिए। उन्होंने कार्यकर्ताओं का आवाहन किया कि यह कार्य केवल विद्यालय में स्वयं तक सीमित न रख कर समाज का भी सहयोग प्राप्त करना चाहिए और यह व्रत लेना चाहिए कि अपने सद्प्रयत्नों के द्वारा भारत के भविष्य को निखारते हुए उसे विश्व गुरु के स्थान पर स्थापित कर पाएँगे।

(मावलंकर सभागार दिल्ली में विद्या भारती द्वारा आयोजित राष्ट्रीय शिक्षा सम्मेलन, १७ अक्टूबर १९९४ को मुख्य अतिथि व मुख्य वक्ता के रूप में दिए गए उद्बोधन के अंश)

VIDYA BHARATHI
PROGRESS REPORT DURING 5TH YEAR OF NEP

Shri D. Ramakrishna Rao
Vice President
Vidya Bharati Akhil Bharatiya
Shiksha Sansthan
Writer, Social Worker

Contact
Mob. 9949058932

During the year under report having gone through the NEFECCE-22 (National Curriculum frame work foundation stage) and NCFSE – 23 (National Curriculum Frame Work Secondary Stage), our focus is on implementation and navigate the ways to equip our Vidya Bharathi ecosystem. Text books for foundation stage along with 3rd and 6th standards were in public domain necessitating training our teachers who are front line warriors.

1. **Avaasiya Vidyalayas as per NEP**
   For around 200 avaasiya and ardha avaasiya Vidyalayas of reputation, Vidya Bharathi has prepared a manual for running these schools as per NEP guidelines with our core curriculum intact. Our team met on July 29th at Bhopal with a team of experts. The manual is out and being made available to all the schools.
2. SESQ workshop to our schools NEP – able With our Bharateeya chintan and basics intact we have organised a workshop of master trainers, with the help of Shantilal Muttha Foundation (Pune) at Bhopal for 2 days on 30th and 31st July. Two aspects viz. conceptualisation of NEP-able school and quality aspects there by to be taken into account are focussed.
3. **Akhil Bharateeya Mantri Varga**
   With an aim of equipping and acquainting our mantris with basics of academic understanding and NEP along with our responsibilities a 4 – day workshop from 8th to 11th August, 2024 was conducted in Ayodhya.
4. **Spiritual Organisations 2nd Meet**
   In continuation and the decision taken on 29.03.2025 at Delhi conclave, the second meet of all the spiritual oriented organisations (which run educational institutions across the country), was held at Chinmaya mission, Chennai under the chairmanship of Swamy Mitranandaji and guidance of Dr Krishna Gopalji. 38 participants from 16 organisations discussed about the common minimum programme to educate the students in particular and the society in general to improve the value base. Inspite of heavy cyclonic conditions meeting was conducted. Next meet shall be in 2025, region wise at 11 places.
5. **Academic Assembly – Nagaland**
   An academic assembly was organised and hosted by Nagaland government in collaboration with Vidya Bharathi (Nagaland) to discuss about NEP and its implementation in the state. More than 100 academicians, state's education ecosystem including the secretaries and chief secretary did participate. Vidya Bharathi all India president delivered keynote address along with chief guest's speech by Dr. Alang the education minister.

6. **SCERT GOA – SCFS basis for transforming school education** Vidya Bharathi was invited for the national seminar on 5th December at Rajbhavan, Goa by SCERT. D.Ramakrishna Rao national president and Dr. Madhusri Saoji national secretary participated in the panel discussions on Foundation literacy and numeracy for building strong learning foundations.
7. **FICCI – ARISE School Education Conference** First time Vidya Bharathi was invited by Federation of Indian Chamber of commerce and industry which has been running more than 1200 schools of international standards for its 2day conference in the thought leadership session – the topic being "Implementation of NEP recommendations at scale across Vidya Bharathi schools", presentation was done by All India President D.Ramakrishna Rao followed by panel discussion in conversation with Rakesh Kumar secretary, Department of education, Himachal Pradesh and Anil Swarup, former secretary, School education , Government of India. The conference was represented by foreign dignitaries and educationalists.
8. **Workshop on Alligning Panchapadi and NEP for preparing a lesson plan.** A work-shop on preparing a lesson plan alligning both panchapadi learning process and NEP was held in Kurukshetra for five days i.e. from 20th to 24th December. The aim was to prepare master trainers across the country in which 99 from 11 Kshetras participated. 5 professors from NCERT did also participate as invitees and all of them received well and appreciated panchapadi learning process.
9. **Prasikshan toli to prepare modules as per new norms and NEP – needs** Prasikshan toli did think of preparing new training modules, as per new norms to face challenges in order to build leaders of learning revolution. In order to upgrade and update our stake holders including teachers, principals, purnakalin, pravasi, prabandha samithi, poorva chatra, office staff etc. Teams were formed with seniors and experts to prepare the same by 1st August.
10. **Purnakalin Karyakartha Varga** 672 purnakalin karyakarthas of Zilla and above attended Abhyas Varga for 5 days at Bhopal in which Parama Pujya Sarsanghachalak Mananeeya Mohanji Bhagawat guided the proceedings. It is aimed at acquainting them with NEP, NCF & other academic-basics including practical training on socio – economic surveys to carry out service activities in the society.
11. **States invitation for supporting the implementation of NEP and NCF** Nagaland, Manipur, Assam, Tripura, Madhya Pradesh, Goa, Rajasthan, Orissa, Maharashtra and Uttar Pradesh have invited us to be attain the syllabus revision or task force for implementing the NEP & NCF in their respective states.

The NCF 2023 for the Foundational Stage covers children aged 3-8 and is a part of the NEP 2020's 5+3+3+4 structure, focusing on play-based and activity-based learning. It aims to develop foundational literacy, numeracy, and crucial social and emotional skills through engaging methods and incorporates insights from neuroscience, cognitive sciences, and Indian traditions. Assessment is viewed as an ongoing process to inform teaching and support a child's progress.

Core principles and approach

Play-based learning: The framework uses "play" as the core method for curriculum organization, pedagogy, and overall experience. Holistic development: It emphasizes a child's holistic development, including cognitive, social, emotional, and physical growth. Integrated approach: It envisions an integrated approach to Early Childhood Care and Education, building a foundation for the later stages of schooling. Technology integration: The framework includes technology integration as a key theme. Multilingualism: Learning through regional languages is promoted. Foundational literacy and numeracy: The primary goal is to build strong foundational literacy and numeracy skills. Skill development: The framework is designed to foster creativity, critical thinking, and collaboration, moving away from an exam-centric approach. Experiential learning: Learning is based on experience and is activity-driven.

Joyful Learning Through Panchapadi Classroom Process

Shri A Laxman Rao
Secretary
Vidya Bharati
Dakshin Madhya Kshetra
Writer, Social Worker

Contact
Mob. 9951270449

National Education Policy - 2020 has recommended many changes in Indian Education System to make the learning process easy, engaged, collaborative and more joyful. Most of the time, learning in classrooms is painful because of untrained teachers and teachers not giving importance to child psychology and educational philosophy. An echo of hilarious happiness comes from nearly all the classrooms at the time of long bell in the schools just before leaving. It is the expression of happiness that the students are leaving the school. Leaving the school is happy, it means up to that time, their learning process is unhappy and not interested for the students. We can understand that something is missing in the classroom process. By keeping this in mind, the National Education Policy - 2020 has recommended joyful learning in the classroom.

Joyful learning creates positive and enjoyable learning environment in the classroom process by making the students involve in the process. Not only fun or joy, there is curiosity and love for learning. Teachers prefer to take up play-based learning by incorporating toys, puzzles, work sheets and real objects. Using more interactive sessions, discussion in groups or pair, students can participate actively in classroom process. Teachers connect classroom process with daily life real situations and students understand the textual concepts easily. Hands – on – experiences are essentially given priority and preference in the process of learning. Psychomotor domain plays a crucial role. In normal system, teachers ask questions to the students and questions from students are not yet encouraged. Here in this system, students are encouraged to ask questions, thus creativity, logical thinking, reasoning begins among the children's brain. Joyful learning encourages and develops curiosity among the students to love for life-long learning.

Joyful learning in Foundational Stage

Especially in kids' classes, play can be free, guided or structured. Conversations and stories which are of familiar concepts or characters, music, drama, body movements, arts, games play a vital role. Students opt for play outdoor rather than indoor. They love to learn in the nature or under the sky. Teachers and school management should allow them to do so and take care of arrangements which they need. Classroom arrangements are to be changeable. Infrastructure or furniture should not be fixed. Every day a special way of seating in classroom makes the students happy. Process should be different from routine. Teachers take new materials every day to the classroom to make the process joyful.

The NCFSE – 2022, 23 initiative Panchapadi Learning System

The National Curriculum Frameworks give importance to take up Panchapadi Learning System for implementation in classroom process. This system is Bharat centric learning system. As per Bharat Shiksha Darshan is modelled based on Bharat Jeevan Darshan.

Panchakosha Vikas

Panchakosha development (development of five sheaths) is one

of the prime mottos. Annamaya, Pranamaya, Manomaya, Vignanamaya and Anandamaya kosha are the five sheaths to be nurtured. These are defined as physical layer, life force energy layer, mind layer, intellectual layer and inner layer. The holistic development of the students takes into account the nurturing and nourishment of these five layers.

Development of Karanas

Karanas are classified into two types, one is outer and the other is inner. In outer Karanas, again two types which are jnanendriya and karmendriya. Jnanendriya are the five sense organs viz., sight, smell, hear, taste and touch. Karmendriya are Vani, Pani, Padou, Upastha and Payu. Inner Karanas are मन, बुद्धि, चित्त, अहंकार मन is to be controlled and बुद्धि is to be nourished or enriched. Number of activities are generated for that in the classroom process. Questions for reasoning, logical thinking, scientific temper, critical thinking are prepared by the teachers for the development of Karanas.

Our classroom process is expected to focus on developing these sheaths and the Karanas. Thus, the classroom process is a five step method which is Panchapadi learning system.

The Panchapadi

The five steps involve in the Panchapadi are Adhithi, Bodh, Abhyas, Prayog and Prasar. Through these five steps, the classroom process focuses on the development of the aforesaid areas for the holistic development of the students. In this process, the teacher is passive in teaching and active, in making the students learn. It is to learn to unlearn and relearn. Students become independent learners in future. Teacher is a facilitator and he/she provides many opportunities to the learners. Instead of the development of upakaranas, the classroom process should target developing Karanas. It is possible only in the Panchapadi, if it is properly understood and put into practice in the classroom process.

Adhiti

Adhiti is the first step in the Panchapadi learning system. Adhiti means knowledge. We know many things by using sense organs. By looking at something or someone, we come to know what it or he/she is. Looking, listening and tasting are some of the tasks of our sense organs. Watching a drama, listening to a speech, observing some incidents give some information.

The teacher introduces new concept in this step after some testing the previous knowledge and creating a concept map or mind mapping. As per NCF, students gather relevant information regarding the new concept, by answering the teachers' questions, exploring and experimenting with ideas and materials. Curiosity is ignited and developed, connecting previous knowledge with textual concept. Teachers can use songs, stories, pictures, questions as tools to develop observation capacity, to know about many things by using sense organs properly.

Bodh

This second step Bodh, is understanding the concept. In Adhiti, the students understand the superficial concept but here it establishes and deepens the understanding. Whatever the students see, observe, listen to is not complete knowledge. By using buddhi (intellect) they analyze, synthesize, discriminate, differentiate, so as to get more understanding. Students understand concepts, through play, enquiry, experiments, discussion, or reading and reflections. The teaching plan has the concepts to be learnt by the students. In the process of understanding the concepts, the teachers give more opportunities to them. Encouragement to the students make the learners learn deeply by involving in it.

Abhyas

This is practice to be given to the students based on the objectives, nature and scope of the concerned subject. Repeatedly doing something is Abhyas or the practice. The intention of this step is to improve the skills among the students by making them participating in number of activities. This is for increasing the pace of memory and retention. The acquired knowledge or understanding leads to long term memory. Whole class, group, pair, individual activities are planned to execute. In languages, Listening Skills, Speaking Skills, Reading Skills and Writing Skills are planned. Neat handwriting, writing without mistakes are also a part of it. Vocabulary, grammar related exercises can be planned for this step. In Mathematics, problem solving, creating sums, statistical data related questions can be given. In sciences, experiments, models preparation, drawing, labeling etc., are planned. In social studies subject map

drawing, pointing, table analysis, conversion of text and so on are better to execute. Population related data, sex ratio, world war related graphs, intake food calories, access for food related, food production related pie charts are to be planned for analysis.

Prayog

The Prayog is the fourth step which is application to the daily life. Application of the acquired knowledge is connecting classroom learning with real life situations. Language games, model making, dance, role play, collection of stamps, coins, survey, projects are some of the useful activities in this step. Experiential learning is one of the best activities suggested here.

Prasar

The Prasar is the fifth and the last step in the process of Panchapadi. It means that the acquired knowledge is shared with others. Sharing of the acquired knowledge with friends in the classroom or wherever it is necessary is expected. There are two steps in this process. After classroom learning, students are suggested to take up some additional learning which is self-study by going beyond the textbook. Self-study strengthens the understanding of the classroom process and strong understanding helps to share with others. They create new stories, new songs based on their understanding so that they master in the content.

All the classroom process is based on Bharatiya Jnana Parampara. Bharatiya Knowledge Systems, Art Education, Value Education, Culture Transmission to the next coming generation, Drama, Dance, Music, Games and Sports Education are some of the integrated areas to the existing content of the textbooks. Ultimately the school has to produce the students who feel proud to be Bharatiya. Competency, knowledge, skill with Indian spirit is the objective of this system. If this is rightly planed, learning is joyful for the students.

The Panchpadi Shikshan Paddhati (Five-Step Teaching Method) was developed by Lajja Ram Tomar. It has been widely promoted and implemented by Vidya Bharati, an educational organization in India.

This method is also a central pedagogical approach in the government's National Curriculum Framework for School Education (NCF-SE) 2023. It is rooted in ancient Indian educational philosophies and aims for a holistic learning experience.

The Panchpadi or five-step learning process, as outlined in the National Curriculum Framework 2023, offers a structured approach to effective classroom instruction. It involves five phases: Aditi (Introduction), Bodh (Conceptual Understanding), Abhyas (Practice), Prayog (Application) and Prasar (Expansion).

This method helps learners build a strong foundation, practise their skills, apply their knowledge in real-life contexts, and expand their understanding through sharing and peer learning.

How does it work?

The Panchpadi approach is designed to guide teachers in effective lesson planning. In the Aditi phase, teachers introduce new concepts by connecting them to the learners' prior knowledge. The Bodh phase focuses on helping the learners understand core concepts through a gamut of activities, such as discussions, experiments and readings. In the Abhyas phase, learners engage in practice to reinforce their understanding and skills through group work or projects. The Prayog phase involves the application of the concepts learned to real-life situations, so as to render the outcome of learning relevant and practical. Finally, the Prasar phase encourages learners to share and expand their knowledge through peer learning and presentations, fostering a deeper understanding and long-term retention.

Let's explore how this approach can be applied to teaching the concept of non-finite verbs.

A Fake Gajnavi story in History

Shri Subhash Chand Vats
M.A.Economics & L.lb
Asstt. Commissioner
of Police Delhi (Retd.)
Law enforcement Professional
of Delhi Police- special Cell &
crime branch
Awarded a Police Medal for
Gallantry in 2007
keen interest in Hindu
Philosophy & Sprituality

Contact
Mob. 9212150509

This analysis is based on the study of Prof Kusumlata Kedia, a well-known scholar and professor in Benaras in BHU and Benaras Vidya mandir.

Gazna or Gazni is a city or province in Afghanistan established by King Gajpati. In ancient times it was called as Gajna, but thereafter changed to Gajni. Turki Shahi, a Buddhist dynasty ruled this area up to 822 CE. Then its minister Kallal removed the Turki Shahi and established Hindu Shahi dynasty with its capital at Kabul. Hindu Shahi dynasty ruled up to 1026 CE. In our history books it is being taught that Mahmood of Gajni attacked Hindustan 17 times and demolished Somnath temple. All these attacks were primarily faced by the Hindu Shahi dynasty and other Indian Hindu kings of that period. The alleged attacks detail is as under-

Invasions of Mahmood of Ghazni

1. 1001-03 AD: Defeat of the King Jaipal, of Hindushahi Kingdom.15,000 Hindu soldiers were killed. Jaipal was defeated and captured. About 5,00,000 Indians were taken to Ghazni as slaves.
2. 1005 Mahmud of Ghazni invaded Bhatia (probably Bhera).
3. 1006. He invaded Multan, the army of King Andapala.
4. 1007- He attacked and crushed Sukhapala, ruler of Bhatinda (who had become ruler by rebelling against the Shahi kingdom).
5. 1008: Attack on Anandpal the son of Jaipal at Peshawar.
6. 1009: Invasion of Nagarkot [Kangra].
7. 1013- He defeated Anandapala, Jayapala's son, at the Battle of Waihind.
8. 1014: Attack on Thanesar.
9. 1015: Kashmir Valley attack.
10. 1018: Attack on Mathura.
11. 1019: Attack on Kannauj
12. 1021: Attack on Kashmir.
13. 1021: Attack on Kalinjar
14. 1023: Attack on Hindushahi King Trilochanapala.
15. 1925 Somnath temple invasion.
16. 1026: After looting the Somnath temple, when Mahmud was going back to Ghazni, the Jats had attacked his army. So, to punish the Jats, he returned and defeated them in 1026.
17. In 1027 CE, Mahmud avenged the attack by the Jats, who had been resisting "forced Islamization".

In his analysis Dr Kedia put a point that how will you know about an incident, whether such incident happened or not. There should be some source of it in writing by the contemporary writers. The writers of period from 988 CE to the first quarter of eleventh century at that place or outside. If there is no written proof available, then how you came to know such fact or the incident. Then how the left historians like Romilla Thapar etc has written this fact. If you locate the location of Gajna, in Afghanistan on the world map, no attack could be possible from there on Somnath. The terrain between the Gajna and Somnath is very difficult. How the army of Gajna reached

Somnath as the area between Gajni and Somnath is having a difficult terrain including rivers, deserts, mountain etc? How it was possible to mobilize a big army and what were the logistics and also the season when you pass through an area? You have to pass through an enemy territory.

A book on the life styles of the Sulatan Mahmood of Gajna by one Mohd Nazim of Cambridge University, thesis of PHD by the author in 1931, forwarded by Sir T W Arnold, mentions that none of his predecessors has ventured to write the separate memoir of Sultan Mahmood of Gajna. He further says that "for the students of Indian history the Book of Dr Mohd Nazim will not only shed light upon a hitherto obscure period in the annals of that country, but will clear up many confusions and misunderstandings". Mohd Nazim says in the preface of his book Notwithstanding, the numerous scattered notices of Sultan Mahmood in modern historical works, he has not received due attention from the oriental scholars. Consequently, numerous details that have been passed off as established facts have been omitted. As I believe that mostly the modern historians and critics of Sultan Mahmood possessed only a superficial knowledge of his carrier. No historian of Asia (including Muslims), have any knowledge.

Procedure to know the authenticity of someone- We try to know about any person when the said person was of some imminence and what has been written about that person by the contemporary writers in that area, region or country at that time. Also, anything written about him outside of the country. Contemporary writers of Sultan Mahmood were Al Beruni and Abu Al-Qasim Firdausi (Shahnama). Both these authors written nothing about Sultan Mahmood or about any attack on Somnath. Al Berni mentions Somnath in his book three times. Firstly that it is located in a port town, secondly that business activities takes place in the town and thirdly about some marriage ritual etc. Author of the book says that before we proceed further to examine the authorities on the period of the Sultan Mahmood of Gajna, it is necessary to state the works that have been perished of these contemporary or the near contemporary writers. The official chronicle most probably named (1) Dawat Namah (2) Tajul fateh dealing with the exploits of Sultan Mahmood. Besides these contemporary works at least five later works have been lost. He says about one Utbi. This Utbi was an official or secretary of Sultan. Another book of the history of India as told by its own historians, "The Mahmood period" set of 8 volumes by Eliot and Dawson. Mohd Nazim mentions about the book of Utbi which is not available anywhere. Neither Utbi book nor book of Beruni or Shahnama of Firdosi. There are just construct of these books.

Utbi was first among the contemporary authorities. The book of Utbi was 'Kitabul Yamini'. The author is concerned on fiction rather than historical pleasure. His descriptions are liking in detail. There is no mention of Somnath in Utbi's book. He rarely mentioned the route followed by the Sultan Mahmood. Also, he does not mention any indication of the locality of forts that Sultan captured. The expeditions of Central Asia and Sistan, are also treated in the same superficial manner as those against India While the other matter of interest to a modern historian viz- The early life of sultan, his system of administration, his method of warfare and the condition of the "dumb million" (A million people with communication disabilities) under him receive scarcely any mention. The book of Utbi "Kitabul Yamini is also deficient in dates.

Book of Romilla Thapar, an Indian historian of left lineage- She states at page 46 of her book "Somnath" that Utbi's account of Sultan Mahmood in book Tarikh-i-Yamini, written in 1031 makes no reference of raid on Somnath. But when this book of Utbi is not available from where these things about Somnath have been procured. According to prof Sumanlata Kedia, the story of Somnath was constructed after 1947 only. The other two books about Somnath are-

1. Jai Somnath by K M Munshi
2. Somnath by Acharya Chatursain.

In his book Jai Somnath Shri Munshi says that the attack has been mentioned in the Muslim history. But this fact has been negated itself by Prof Mohd Najim of Cambridge university. It is a fact that temple of Somnath was destructed, but by whom and when is matter of debate. Archaeology will only can shed light on this fact. Romilla Thapar says in her book that it may be destructed in the 14th century first time according to the Archaeological report. But by whom is not clear and it is emphasized that the local converted Muslims may have done so. Author Romila Thapar also mentions nothing about Somnath attack. In Romila Thapar's book on page 173, it has been mentioned that Governor General Ellenborough started curiosity about Somnath in

1842. From where he gathered the information about the gates of Somnath is unexplained. None of the Turko-Persian accounts refer to Mahmood of Gajna taking away the gates of Somnath temple. One John Wilson who was asked to investigate this matter by Henry Bartle frere, a British Colonial administrator, wrote in late 19th century that there was no reference regarding gates in any of the history and that the idea might probably originated with some travellers who may have mentioned it to Mountstuart Elphinstone, a Statesman and former Governor of the Bombay Presidency. Ellenborough also said that there was a gate of Somnath of sandalwood which was taken away by Mahmood of Gajna and we will bring that gate back. Romila Thapar in his book wrote at page 174 that probably it was a gate of Jagannath temple.

In chapter 6 of book at page 147, one story narrated by one Wattson, which some have identified as Shah of Mangroli might have told to Wattson. The story also says that idol of Somnath was broken and grinded to powder, it was given to the pandits/pujari of the temple in betel leaves to eat.

Then how this Somnath attack theory cooked in the Indian history. The investigation revealed that this was cooked by only two persons namely K M Munshi and Acharya Chatursain. Acharya Chatursain says that what happened in 1947, on direct action day 14th August 1946, he gathered all information and put all misdeeds of Muslim frenzy on Sultan Mahmood of Gajna. The Sultan of Gajna was wicked, rapist is his prabhu (Lord). Though it is fiction, but I will write.

Acharya in his book at page 351, says that I wanted to know about Sultan Mahmood of Gajna. One publisher published advertisement and also started to take orders for book. Then I was disturbed by the demand of book purchasers. Though I have no knowledge of history and also, has no courage to depict such unimaginable and public heard incident in a formidable manner, how can I write the novel. Hence, matter stretched a lot and much time passed. Then he came to know about some rugged information of English authors about Somnath, but they were not sufficient. Some people used to say that this incident is just an imagination. Then he goes through the novel of K.M Munshi 'Jai Somnath'.

At page 356 of Achary's book, he further says that at this juncture his novel "Vaishali ki Nagarvadhu" has come in the market. I have decided to establish and taste a history rasa. I have no care for the authenticity of the facts of history. I saw the novel of K M Munshi, Jai Somnath as a competitive book and thought most probably it might be resulted that his novel may not of such sound back ground but the aura of Sh K M Munshi, created jealousness in me to write this novel. I have in my mind the horror of partition of the country including the tragedy faced by the peoples in Calcutta on the direct-action day of 14 August 1946 and Lahore murderous assault, rape etc faced by the people enraged me a lot. I joined the horror of partition with the 11th century tragedy faced by the people at the hands of Saultan Mahmood of Gajna, and blamed for all the violence and horror, the Sultan Mahmood in his book 'Somnath'. I did not know that my work might be a literary crime, if so, I don't want to hide this. I accepted the imaginary thoughts of novel 'Jai Somnath' of K M Munshi as real one. Hence without caring the historical facts, having thoughts of partition horror in my mind, put all blame on the Sultan Mahmood of Gajni. I did not think that Sultan Mahmood was a rapist, murderer, and enemy of mankind, but I revere him as my 'Lord' (deity).

The big and startling question is that history of Sultan Mahmood of Gajni or Gajna is being taught in our history books without any authentic proof. Who included this fake history in the books and for what purpose. It was just to denigrate and demean the Hindu community.

****

Impacts of Digital Payments : Small Businesses in the Indian Market

Professor P. K. Dashora
Vice Chancellor
Mangalayatan University,
Chairman Vidya Bharati
Rajasthan kshetra
Many Research Paper
prasented in various seminors
Many Prestigious award
recieved from National &
International organisations

Contact
Mob. 9414162682

In recent years, India has witnessed a seismic shift in its financial ecosystem, largely driven by the proliferation of digital payment platforms. What began as a response to the country's long-standing cash-dominant economy has now evolved into a cornerstone of financial modernization and inclusion. The rise of mobile wallets, Unified Payments Interface (UPI), QR code-based payments, and point-of-sale (PoS) innovations has not only transformed consumer behavior but also created a new operational paradigm for small businesses—especially in the post-demonetization and post-COVID digital boom.

Small and medium enterprises (SMEs), which constitute over 90% of India's total enterprises and contribute nearly 30% to the nation's GDP (Ministry of MSME, 2022), stand at the epicenter of this digital evolution. As digital payments gain prominence, these businesses are both beneficiaries and subjects of a technological revolution that is reshaping commerce, supply chains, and customer interactions.

Background & Context

India's journey toward a digital payment ecosystem has been both transformative and strategic. With a population exceeding 1.4 billion and a historically cash-reliant economy, India faced significant challenges in modernizing its financial infrastructure. However, a convergence of government policy, mobile penetration, and fintech innovation has catalyzed a rapid shift toward digital financial services—especially after pivotal moments such as the 2016 demonetization and the COVID-19 pandemic.

The Government of India's flagship program, Digital India, launched in 2015, set the foundation by promoting digital infrastructure and financial literacy. This was complemented by the rollout of Aadhaar (the world's largest biometric ID system), Jan Dhan Yojana (a financial inclusion scheme), and the Unified Payments Interface (UPI), which has revolutionized peer-to-peer and merchant payments.

As a result, India has become one of the fastest adopters of digital payments globally. According to the Reserve Bank of India (RBI), the volume of UPI transactions crossed 14.04 billion in May 2024 alone (RBI, 2024). For small businesses, especially micro and informal enterprises, this digital evolution presents both unprecedented opportunities and critical challenges.

The small business sector in India—referred to as Micro, Small and Medium Enterprises (MSMEs)—employs over 110 million people and is often characterized by informal processes, limited access to formal credit, and cash-based operations. The shift to digital payments is disrupting this status quo. With mobile-based payments, real-time settlements, and digital transaction histories, even unregistered businesses are now beginning to participate in the formal economy.

Key Impacts on Small Businesses

Digital payments have been a transformative force across India's diverse small business landscape. This section dives into sectoral impacts

and community-specific outcomes, especially focusing on underrepresented segments like street vendors, artisans, and marginalized populations.

1.1 Customer Base Expansion and Market Reach

Digital payments have unlocked new customer segments for small businesses—especially youth, tourists, and digitally savvy consumers—who prefer contactless transactions.

1.2 Kirana Stores: The Quiet Backbone of Indian Retail

Kirana (neighborhood) stores form the largest retail network in India, often serving hyper-local demand. Traditionally reliant on paper-based credit and cash transactions, many are now transitioning to digital PoS systems and QR codes.

Some Digital plans introduces in India are as follows:

2.1 Digital India Mission (2015)

Launched in July 2015, Digital India laid the foundational digital infrastructure for financial inclusion. Its three core components—digital infrastructure as a utility, governance and services on demand, and digital empowerment of citizens—enabled the rollout of Aadhaar, Jan Dhan accounts, and mobile-based financial services.

For small businesses, this initiative supported:

- **Aadhaar ekyc** for easy on boarding into formal banking
- **Paperless authentication** for MSME registration
- **Digital locker and eSign** services for faster government registrations and subsidy claims

2.2 Pradhan Mantri Jan Dhan Yojana (PMJDY)

The Jan Dhan Yojana scheme created over 400 million no-frills bank accounts with Aadhaar linkage. Though originally for households, it indirectly empowered small businesses run from homes or by individual proprietors.
The scheme facilitated:

- Access to **overdraft facilities** for sole proprietors
- **Insurance coverage** and pension schemes (like Atal Pension Yojana) for micro-entrepreneurs
- Seamless DBTs (Direct Benefit Transfers) for vendor reimbursements and COVID-19

2.3 Unified Payments Interface (UPI) by NPCI

UPI, launched by the National Payments Corporation of India (NPCI) in 2016, has been the biggest enabler of merchant digitization. With real-time, zero-cost payments and QR code acceptance, UPI has simplified digital adoption for businesses of all sizes.

As per NPCI (2024), over 50 million merchants are now live on UPI. It also enabled:

- Merchant QR onboarding through apps like BHIM, PhonePe, Paytm
- Interoperable QR codes (Bharat QR) to avoid vendor lock-in
- Integration with micro-lending and buy-now-pay-later (BNPL) schemes

2.4 PM SVANidhi Scheme (2020)

PM Street Vendor's AtmaNirbhar Nidhi (PM SVANidhi) is a flagship government initiative aimed at empowering street vendors by providing:

- INR 10,000 working capital loans (renewable on repayment)
- Cashback incentives for using **UPI or digital PoS**
- Digital literacy workshops and merchant QR kits

According to the Ministry of Housing and Urban Affairs (2023), over **42 lakh street vendors** have benefited, with 65% actively using digital payments.

2.5 Digital Saksham (2021)

This collaborative initiative by the Ministry of MSME, SIDBI, and Google is aimed at upskilling micro and nano-enterprises through:

- Digital payment training
- GST compliance coaching
- Financial record-keeping using mobile apps

Targeted especially at women entrepreneurs, the scheme has conducted over 1,500+ workshops across rural and peri-urban India.

3.0 : Challenges Faced by Small Businesses in Adopting Digital Payments

While India's digital payment infrastructure is among the most advanced globally, the adoption journey for small businesses is uneven, especially in Tier-2/3 cities, rural markets, and informal sectors. Despite policy support and technological innovation, several challenges persist:

3.1 Digital Illiteracy and Technical Know-How

A major barrier for small business owners—particularly in

rural areas—is lack of digital fluency. Many owners:

- Do not understand how to set up or troubleshoot UPI/ QR apps
- Are unaware of transaction tracking or reconciliation tools
- Fear making errors during transactions or exposing themselves to fraud

Example: In Bihar and Jharkhand, SHG-led enterprises struggled to use QR apps without repeated hand-holding from local NGOs (Digital Sakshar Survey, 2023).

3.2 Infrastructure Deficits: Internet, Power, Devices

Reliable infrastructure is critical for real-time payments. Yet:

- Patchy mobile data networks limit UPI use in remote areas
- Lack of smart phones or compatible PoS devices hampers merchant onboarding
- Frequent power outages in rural India disrupt payment continuity

According to the TRAI Performance Indicator Report (2022), over 45,000 villages still lack 4G mobile coverage, severely limiting seamless payment experiences.

3.3 Fear of Digital Fraud and Data Breaches

Fraud is one of the most cited deterrents in merchant adoption. Small business owners express concerns over:

- Fake QR code scams
- Phishing messages
- Unauthorized debits or failed transaction recoveries

A report by CERT-In (2023) reported a 71% rise in digital financial fraud cases affecting micro-enterprises between 2020 and 2022.

Case: In Gujarat, a fruit vendor lost INR 2,000 due to a fake app screenshot scam and discontinued UPI usage entirely. Such instances amplify community distrust.

3.4 Lack of Customer Demand or Literacy

Merchants often cite low customer awareness as a hurdle:

- Many customers, especially senior citizens or laborers, prefer cash
- Merchants avoid using UPI to avoid embarrassing interactions when customers don't understand the process
- There's pressure to maintain both cash and digital systems, which increases complexity

In Tier-3 towns like Hardoi (UP), shopkeepers reported digital usage spikes only during COVID-19 lockdowns, after which many customers reverted to cash (NABARD-IRMA Study, 2022).

3.5 Transaction Charges and MDR Confusion

Although UPI is free for most users, ambiguity exists around:

- Merchant Discount Rates (MDRs) for card transactions
- QR scanner rental or PoS terminal costs
- SMS charges or hidden fees by payment app providers

Small merchants operating on narrow margins see any additional cost as burdensome. Some prefer cash to avoid even a 1–2% deduction.

3.6 Fragmented Digital Ecosystem

Multiple wallets, QR codes, and non-standard interfaces lead to:

- QR code clutter at counters (PhonePe, Paytm, Bharat QR)
- Confusion over interoperability (which app works with which QR)
- Inconsistent dispute resolution mechanisms

Unlike China's integrated super apps, India's ecosystem is innovative but fragmented, increasing cognitive load for non-tech-savvy users.

3.7 Gender and Social Barriers

Women entrepreneurs, tribal artisans, and members of marginalized communities face disproportionate hurdles:

- Lower smartphone access due to male-dominated device ownership
- Cultural taboos against women managing finances or technology
- Less exposure to training programs or government schemes

4.0 : Conclusion and Recommendations; Conclusion :-

India's digital payments revolution has unlocked a new era of financial inclusion, business formalization, and economic empowerment for small enterprises. From kirana stores in Madhya Pradesh to artisans in Kerala and street vendors in Delhi, digital tools have democratized access to finance, improved transaction transparency, and enabled micro-entrepreneurs to participate in the formal economy without requiring high capital or technical literacy.

However, the transition is far from complete. Despite infrastructure advancements and government schemes like

PM SVANidhi and Digital Saksham, the full benefits of digital adoption remain unevenly distributed—with rural entrepreneurs, women, and marginalized communities facing disproportionately high barriers. Trust, awareness, device access, and digital fluency continue to shape the depth and quality of adoption.

India's policy environment is robust and proactive, but greater coordination between financial institutions, local governments, NGOs, and digital platforms is required to ensure no segment is left behind in this transformation.

Recommendations: Based on the research and international best practices explored, the following recommendations are proposed for policymakers, ecosystem enablers, and MSME stakeholders:

1. **Build Last-Mile Digital Capacity**
   - Scale digital literacy programs tailored for micro-entrepreneurs, women, and tribal groups in local languages
   - Involve NGOs, SHGs, and cooperative societies in trust-building and onboarding campaigns
   - Train a cadre of "Digital Business Sakhis" to serve as field-level digital enablers in underserved regions
2. **Enhance Infrastructure and Device Access**
   - Expand affordable smartphone financing schemes for small business owners
   - Strengthen public-private partnerships under BharatNet and PIDF to ensure reliable mobile and data coverage in Tier-3/4 regions
   - Encourage development of offline-first UPI features for no-network areas
3. **Promote Interoperability and Ecosystem Simplicity**
   - Standardize QR code usage (via Bharat QR) to eliminate platform clutter
   - Encourage single-window dashboards for merchants to track all digital transactions across apps
   - Support development of regional-language digital tools that use audio, icons, or visual cues
4. **Improve Trust, Security, and Redress Systems**
   - Deploy awareness campaigns on digital safety and scam prevention
   - Mandate robust dispute resolution standards for all payment service providers
   - Introduce low-cost insurance for micro-merchants against UPI fraud
5. **Link Payments to Formal Credit Pathways**
   - Integrate UPI and PoS data with Account Aggregator (AA) systems for alternate credit scoring
   - Expand SIDBI-PSB59Minutes and fintech lending partnerships for micro-loans based on digital cashflows
   - Offer interest rate rebates or GST incentives to MSMEs demonstrating consistent digital behavior
6. **Embed Gender and Inclusion Frameworks**
   - Set gender targets for digital skilling schemes under Digital Saksham and PMEGP
   - Subsidize digital devices for women-led businesses and SC/ST entrepreneurs
   - Highlight success stories of rural and marginalized digital entrepreneurs to inspire peer learning
7. **Institutionalize Continuous Research and Monitoring**
   - Fund longitudinal studies on the impact of digital payments on MSME profitability and sustainability
   - Disaggregate data by region, gender, income, and business type to inform localized interventions
   - Encourage open-data sharing across platforms like NPCI, RBI, and MSME Ministry for policy refinement

By implementing these targeted interventions, India can accelerate toward a more inclusive, resilient, and digitally empowered MSME economy—one where the smallest businesses hold the power to grow, thrive, and compete in an increasingly digital world.

****

'Rescue the rescuers'

Dr. Bhuvan Chand Pandey
Senior Consultent,
Sir Ganga Ram Hospital,
New Delhi
Writer, Social Worker

Contact
Mob. 9999200881

'We may encounter defeats , but we must never be defeated. - Maya Angelou.

A medical specialist is sculptured after decades of hardship, dedication, rigorous learning, exhaustive duty hours and tons of sweat, yet decades of practical experience is required to reach a state of professional epitome. However, even after attaining this stage, complications and adverse outcomes are inevitable in clinical practice. Despite providing the best possible care, unexpected and undesired outcomes do occur, probably due to variations in patient characteristics (anatomy, physiology, genetics, and other underlying disorders). If a mistake is committed by a common man, "to err is human" is often quotedto alleviate the associated guilt. Ironically, regardless of numerous adverse circumstances and high-risk situations, there is little room for apologies in the field of healthcare. Regardless of deep regret for the incident, it is rarely acknowledged. Various measures have been taken to mitigate such unwanted issues, but adverse outcomes still do occur, as they are not governed by a strict mathematical formula.

The difficulties and complexities in medical practice, especiallyin critical areas endure an immense physical and mental toll, and is usually concealed beneath the white coats, scrubs, and scalpels. Though this profession is noble, satisfying,fulfilling and often praised for its compassion, selflessnessand commitment,however, there is a hidden cost that many people fail to acknowledge. The students join the medical course with lots of enthusiasm, but soon they become stressed and frustrated due to the inherent complexities and the hard work required, which compels many of them to change or quit the profession. The attrition rate of professionals in the healthcare area is significantly high in developed countries, with one out of every four professionals in the USA and one out of every three professionals in the UK planning to leave the industry 1,2. In nations such as India, there has been a steady increase in the number of students leaving the healthcare profession and pursuing other fields. Over the past five years, over 1200 students have made this career switch, which is a matter of significant worry, particularly considering the growing demand for healthcare professionals in the future. 3

The suicide rates among medical students are also significantly elevated, ranging from seven to eight times higher than the rates observed in the general population. In the United States, this results in approximately 400 deaths annually, while in the United Kingdom, it amounts to 430 deaths during a four-year period. Notably, the incidence of suicide among medical students in India is also increasing. Even individuals who do not experience such intense frustration that leads to suicide, their home life is frequently affected and stressed, resulting in a high divorce rate among physicians. In the United States, this number surpasses 22%. Interestingly, there is an association between working more than 40 hours per week and a greater divorce rate among women. In contrast, men who work comparably

long hours had a lower likelihood of getting divorced.7

Unconventional conduct, tough to acclimatise and sensitive area of work involving human life, is an area of great concern among the medical field, even though the related hazards and repercussions are well understood. Lack of sufficient sleep, prolonged isolation from social circle, and the absence of a calm work environment all contribute to heightened irritability, mental exhaustion, and physical lethargy. Individuals fortunate enough to possess a solid familial unit and strong social bonds employ diverse methods to alleviate stress and dissatisfaction.

As most of the medical professionals mature and gain experience, some of them learn from their own mistakes, others learn from the experiences of others, and knowledgeable folks anticipate and plan for potential countermeasures ahead of time, but sometimes nothing works in spite of all the efforts.

This article examines many methods proposed or put into practice by our colleagues to solve difficult situations. The main objective is to mitigate our colleague's stress caused by various complex aspects (including emotional, mental, bodily, and social well-being) and shorten the recovery period during challenging circumstances. An anaesthesiologist, surgeon, and physician shared their perspectives to handle the challenging scenario. Eventually, conclusive remarks and suggestion are given by a professional psychological analyst, providing insights on various strategies to prevent and reduce stress during difficult situations.

An anaesthesiologist:

Path of medical therapy is never straightforward, and healthcare professionals often find themselves at the crossroads of ethical and medical dilemmas. Who else can realise this better than an anaesthesiologist? It is often quite difficult to make the patient understand about the inherent dangers involved with administration of anaesthesia, as their main focus is to get rid of primary disease for which surgery is plannedand anaesthesia risk often takes a backseat. The task becomes even more difficult when the patient is either unaware or is unwilling to accept the associated comorbidities and their severity, which makes the task even worse. It is often important to calm down an already anxious patient and simultaneously, make him aware about the associated risks under anaesthesia.Timely decision making is often required in most situations and choosing the most appropriate option out of many is the only alternative. However, many a times, in spite of all this, the difference between success and failure is razor-thin. The main mantra for success in anaesthesiology is prevention rather than treatment. It is often quoted amongst anaesthesiologists that a boringmonotonous anaesthetic session is more welcome than an exciting one full of ups and downs.

Despite the extensive, demanding, and prolonged working hours, the expectation to remain composed in the presence of patients and their families is a challenging demonstration of self-restraint. Conveying your point of view to the patient in appropriate words is an art rather than science, or may be the best possible outcome of both of the two. It becomes especially important when delivering unpleasant news in apt words. In addition, understanding the agony of the patient's relatives, and supporting them through their darkest hours is of immense value.

Spending an entire working life in a closed-controlled environment (the operating room) is not an easy job as it often impacts the health badly andassociated high-stress makes the things worse. Maintaining various haemodynamic parameters in the optimal range in critically ill patients is a crucial skill, but still there is minimal recognition, reward, and gratitude, as patient remains unaware about these, while being anaesthetised.8Stress levels are so high amongst anaesthesiologists that a study conducted on anaesthesiologists reported exceptionally high salivary cortisol levels, reflecting elevated stress. 9

It is always better to categorise and rationalise the risk and prepare countermeasures to control the catastrophe in advance. If something goes wrong, one shouldimmediately call for help (from seniors or colleagues) available in thevicinity.10Seniors are more experienced, and they usually offer a solution to the problem, in addition they provide constant guidance, unconditional support, always counsel to de-stress and boost the morale of the juniors. It is also noticed that the person facing an unexpected adversesituation may develop thought block, and another person called for help may be able to present an altogether different perspective of the situation and is able to provide a suitable solution. Many a times, if the reason behind the unexpected situation cannot be confirmed, an experienced technical assistant might also be of great help to provide a vitalclue, to figure out what

went wrong and how to fix it.

Whenever confronted with an adverse situation, it is always advisable not to hide the complications and discuss with your surgical team,cordiallyand clearly with explicit language,which will helpto maintain mutual trust.9The major issues and rare cases can be discussed in seminars and conferences, to avoid the catastrophes in future cases. One of the significant stresses is litigation andfinancial loss, for which, support of the legal team and their advice can significantly alleviate worries and protect one from litigationrelated issues. To reduce the mental pressure and relax, pursuing the eventual emotional anguish ordisregarding the situation will not rectify the issue, the best way to deal is to face the issue and find a solution. Once the issue gets resolved, we feel a sense of relief and contentment.Even when a solution appears implausible, time often helps to mend situations.

Two aspects play an important role to achieve higher stature in clinical practice and life; how do we face the failure? and how do we manage failure? A zeal to explore the reason of unwanted issue and managerial capacity to find the solution of the problem.The outcome of the procedure might not always match the expectations, but during undesired outcome, it is advisable to convey the regret with appropriate words in a manner that calms the affected individual.9Provocativeremarks or harsh words, blaming the individuals or circumstances will not help. Currently, due to various reasons, it is not uncommon to see violence against anaesthesiologists, a survey reported 20% occurrence of such incidents.13Breaking a bad news with sequential messages of patient's worsening condition rather than in one go is also preferred by many anaesthesiologists, as it gives ample time for the kin to get mentally prepared about the shocking news.

Our Cedeeguel

In the words of one of our co-author, "Challenges are unavoidable, even for the most talented individuals, which I would remind myself while facing difficulties. In case of unwanted issue, I try to remain focused and balanced, to the best of my ability. My initial instinct is to "call for help," a response ingrained in me through training. Secondly, to prevent further damage, I re-assess and re-direct the plan immediately to the best of my ability. In addition, I try to brainstorm the potential solutions with co-workers and seekassistance, avoid fixating the worst-case scenario. This is the time to remain composed, and to maintain my composure, distract myself from the stress and try to explore practical solutions, and if they fail, I pray to almighty. Furthermore, if the patient deteriorates or requires further extensive treatment and care or does not survive, one may encounter unfamiliar feelings. It often fills me with incapacitating sensations of remorse, even after elapsing some time. It could lead one down a very ominous path. But, sometimes if the patient's relative recognizes our engrossed involvement to save the patient, we feel rejuvenated. I still remember the value of comforting words from the husband of a deceased patient, "You did your best, but finally, it is destiny," these wordsignited me again. We do not get the expected outcome always, but that won't stop us to provide the best efforts.

Gradually, we gain experience and learn to handle the situation. Ultimately, joy of satisfaction comes after being acknowledged in the form of 'words of praise'by the patient and their attendants.'"

It's not easy to give lucigeion to the spiv One is often challenged by the fact that the surgery should live up to patient's expectation the fear of surgery should not dominate the psyche of the patient. To achieve this balance is always a tough task. Complications in the field of surgery are unfortunate, yet inevitable. Apart from the catastrophic impact on patient lives, surgery also impacts the surgeons and may result in emotional anguish sometimes completely shattering them emotionally.A surgical error in the operating room may be due to multifaceted factors.If an issue develops, regardless of the matter of how complex the problem or its origins may be, the consequences show a relentless attitude towards the caregiver. Many such complications have been recognised since decades,but medical community still lack the resources to eliminate them completely. Prompt and effortless management is always a challenge. Every surgeon builds unique surgical do's and don'ts as they progress in their careers. Theyconstantly refine their temperament and redefinetheir endurance and learn with experience (handling success andfacing failures).Sometimes, despite following the best possible course of action, oneencounters unanticipated issues head-on, and have toaccept them withresponsibility. An emotional response or a knee-jerk reaction should be avoided; as doing so will lead to decisions that are not well-grounded.

One should always be truthful to themselves, have an obsession for perfection and an intolerance for error, particularly in one's work. In the long run these qualities distinguish "good" surgeons from the average ones.

Surgeons must ignore setbacks and keep pushing themselves to get better. The most straightforward approach to address an issue, is to review the sequential stages of the surgical procedure, identify the precise instance of error, acknowledge it internally, and subsequently derive valuable insights from the mistake to prevent its recurrence. The surgeon's strength is their ability to endure adversity, as evidenced by their attitude. Furthermore, it is essential to note that, despite their specialised training, no surgeon has ever managed to evade or bypass such a situation forever."

"Regrettably, occurrence of complications are part and parcel in our domain. Despite the potentially catastrophic impact on patients' lives, surgeons may also experience profound distress from these events and find themselves inadequately prepared to cope with them emotionally. Throughout their careers, surgeons acquirerefined surgical nuances and procedures, which can be summarised as a list of recommended practices and things to avoid. The temperament and patience of a surgeon are honed over time; gradually their frequency of knee-jerk reactions reduce, and they assume responsibility for difficult times. Adopting such a strategy would demonstrate the surgeon's ability to recover quickly. Finally, it is important to acknowledge that every surgeon (experienced or novice) will inevitably encounter such situations, prior preparation and prompt management skill, leads to achieve a higher level."

Sudeologist often witness that doctors advocating the importance of mental and emotional well-being for their patients. Still, theyfrequently fail to recognise their own needs and cannot deal with the stressors associated with their work. They must also recognise and work towards their own needs as well. It is time that we address these mental and emotional challenges, call for collective change, and create a healthcare system that prioritises the well-being of patients and professionals. Doctors may feel anocious about seeking help for their mental well-being due to the fear of being judged, or it may cause hindrances in their workplace due to people questioning their credibility. But keeping yourself mentally healthy is as important as being physically well.

Getting screened at regular intervals:'Doctors do not seek help for mental health problems'this could be rationale for not screening ourselves, and also the fear of being judged. Hospitals, clinics, and organisations should make it mandatory for their physicians, surgeons, general practitioners, and anaesthesiologists to get screened or simply come in to take regular sessions with a trained psychologist for general upkeep.

Crisis intervention:Anexperienced team of psychologists provide immediate supportand quickly assess the situations that requireassistance during a crisis. It is like an emotional 'first aid' where therapists can help re-establish immediate coping skills, provide support, and restore safety. There should be debriefing meetings soon after an overwhelming event to help professionals process their experiences, feelings, and reactions in a supportive and validating setting.

Managing stress: The medical profession is one in which individuals have to be selfless, put in long hours, sacrifice family time, and be isolated in operation theatres and confined spaces, apart from the stress of giving their patients the best care. This leads to mental health problems such as anxiety, insomnia, depression, and burnout. It is vital for doctors to be able to recognise early signs and symptoms and take steps as simple as taking a 10-minute walk to recuperate, practising mindfulness, taking out 20 minutes for meditation, and going to a trained professional twice a month to develop behavioural and cognitive strategies.

Taking time out for loved ones:As a doctor, it is easy to become isolated and not give enough time to interpersonal relationships,and comes out with its own amount of guilt. Doctors must take time out and nurture relationships with their families and friends. It is healthy to be open and discuss any stressors they might be facing with them. Taking time to connect, will help to improve their emotional well-being.

Social media detox: In today's digital world, it is very easy to be influenced by social media; it is easy to give in to rumours or any sort of misinformation that floats around, as well as trolls. Getting hateful and negative comments can also take a toll on one's mental well-being. Not giving into these, maintaining a safe distance, and focusing on reliable sources of information can help ease the minds of doctors as well as enlighten them.

Easy access : By making tools available,healthcare organisations may foster a supportive environment, encouraging medical practitioners to seek assistance when necessary. It is important to remember that seeking the help of a psychologist is not limited to individuals who have a diagnosed mental health issue. Mental health professionals should be available to the healthcare team to help them explore their emotional domains, express fears, anxieties, orconcerns, gain insight into themselves, improve their relationships, develop coping skills, or simply have a safe space to talk and let things out of their system. Thus, easy access to counselling services is critical. Educational resources on mental health subjects such as stress management, mindfulness, and coping skills can also be made accessible to teach medical professionals howto manage their mental health properly. These materials can also be delivered via seminars or webinars in the hospital setting.

Support groups: Doctors face extreme stress specially during complication, and the best way to deal is open communication with other doctors, who might have had similar experiences. It is imperative to have support groups comprised of doctors where peers can openly and freely communicate and discuss the different stressors. This can be done under the supervision of a trained mental health professional to facilitate an easy flow of communication while helping tosoothe heated discussions due to differences of opinion, which are inevitable.

Appreciation events: In addition to addressing the mental and emotional difficulties that medical professionals encounter, acknowledging their efforts and achievements can help promote their well-being and establish a pleasant workplace. This can boost job satisfaction, motivation, and commitment, resulting in better performance. Patient testimonials and feedback can also be shared in such programmes, as theyhelp them see the direct effect of their efforts, which boosts their sense of purpose and fulfilment.

Systemic change: While individual assistance and treatment are critical, systemic changes are required to provide a sustainable and supportive atmosphere for their well-being. Rethinking workflows, introducing technology solutions, adequate staffing, and promoting fair work schedules with proper breaks and sufficient recovery and rest time are crucial for ensuring the well-being of healthcare professionals.

When nothing works:Consulting the ancient Indian scriptures (or any scriptures of faith), specifically designed and written to enlighten the mind during the most challenging times of life, is another interesting option. Surrender to almighty and praying to supreme power is another big stress buster and might be of greathelp for many.

Finally, a future can be built where healthcare workers feel safe, and this can be achieved by recognising their concerns, exploring diverse options, and instilling a sense of collective responsibility. In addition, a holistic approach to attain well-being, one that ensures a healthier, more sustainable, and more resilient workforce, will benefit both healthcare providers and the patients they serve.

Destress therapy as part of course curriculum Transition of a school going student to a medical course often poses a lot of stress to the individualdue to various reasons. Training of every medical student in "Destress therapy" should be a part of MBBS curriculum right from the beginning. Such training should introduce and sensitise the students regarding the various causes of stress, how to recognise early and late warning signs, as well as introducing them to the knowledge of stress managementwill lead to become a better individual in their lives.

Conclusion:It is always prudent to take preventive measures, if complication occurs, it is advocated to accept and face the issue, explore and solve the problem. Explain the condition in simple, yet apt words, discuss the course of treatment, hospital's proficiency, amenities, and expertise with the patient/relatives. In medicine, complications are inevitable due to involvement of multi-dimension characteristics, presence of known and unknown factors, yet favourable outcome is attained by those who recognise, analyse, manage, and overcome the obstacles.

****

Human Generations

Dr. Rajendra Kumar Avasthi
M. Sc., Ph. D. (Zoology)
Associate Professor and Head (Retired)
Ex. Fellow of Entomological Society of India, and
Fellow of Royal Entomological Society, London
40 Research Papers in National and International Journals.
Entomologist, Researcher and Educationist.

Contact
Mob. 9416247508

We have often been hearing and reading about generations. The experience and attitude of each generation is influenced by its time and environment, which leads to differences in their thoughts, priorities and lifestyle. When there is a huge age gap between two people, these thoughts often become the cause of conflict. This conflict is often seen between parents, grandparents and children. In fact, this is the generation gap. This difference can be towards political views, religious beliefs or lifestyle. Therefore, generation gap is known as the difference in beliefs and thoughts between people of different generations. This is the reason why people of different generations behave differently and have their own ideologies. This is a common thing and has been going on since long.

Generations usually have a period of 20-25 years and the generations born after every 20-25 years have been named according to the situation at that time. People from the old and the new generations often try to prove themselves better than others, while some feel sorry for the new generation.

The concept of human generations as a sociological phenomenon was proposed by Karl Mannheim, a German sociologist. In his 1928 essay, "Das Problem der Generationen" (translated into English in 1952 as "The Problem of Generations"), Mannheim explored how people are significantly influenced by the socio-historical environment of their youth.

The concept of human generations helps sociologists, historians, and demographers to understand and analyze the social, cultural, and economic changes over time. Each generation brings its own unique perspectives and skills. The knowledge of these generations is very important and help us to move forward.

It has been observed that people of different generations behave differently in different situations. Each generation is influenced by its time's socioeconomic, political, and technological landscape. Generations have been classified into different categories based on their attitudes, beliefs, thoughts etc. but the most commonly recognized categories in the history are –

1. **Silent Generation (born 1928-1945)** :The Silent Generation includes those born between 1928 and 1945, who grew up amid major historical events like the Great Depression and World War II. Shaped by hardship, they became known for their discipline, loyalty, and dedication to building a stable post-war society. They witnessed the shift from traditional lifestyles to a more modern, technology-driven world. Often hesitant to speak out on social issues and small in number, they tended to tolerate injustice quietly—hence the name "Silent Generation."
2. **Baby Boomers (born 1946-1964):** These people experience post-war prosperity and social change. They were instrumental in the civil right movements, and women's liberation. They have strong focus on career success and social

status. They experienced significant cultural, political, and technological changes, shaping much of modern society and filled the world with a new progressive population.

3. **Generation X (born 1965-1980):** Such people grew up in an era of transition and technological changes including personal computing and the internet. They are known for their independence and influenced by the unique social, cultural, and economic conditions of their time. Most of the people of this generation felt that both of their parents are working which did not have good impact on their life. So, they give priority to their family life over their job.

4. **Millennials (born 1981-1996):** This generation has witnessed rapid technological progress, including the rise of the internet, social media, and digital innovation. Having experienced life before and after these changes, millennials adapted to evolving technologies while retaining traditional values. Also known as Generation Y, they are typically well-educated, creative, and open to exploration. Despite facing major economic challenges like the Great Recession and the COVID-19 pandemic, they are considered fortunate in terms of access to modern facilities.

5. **Generation Z (born 1997-2012):** This is the generation whose beginning was with social media. They have grown up with smartphones, social media, and high-speed internet. They are very comfortable with technology and digital communication. Generation Z is highly aware of social, environmental, and political issues. They are often vocal about their opinions and are entrepreneurial.

6. **Generation Alpha (born 2013-2024):** Generation Alpha refers to individuals born from 2013 till 2024. They grow up in a world that is more technologically advanced and interconnected than ever before. Children born in this generation are living their lives with very sharp minds and multitasking. Children of this generation are growing up with advanced gadgets like internet, cell phones, tablets and social media. Gen Alpha is considered as the real generation of the 21st century.

7. **Generation Beta:** Generation Beta, which began on January 1, 2025 and will continue until around 2039, marks the successor to Gen Z and Gen Alpha. Nicknamed 'Beta Babies', this cohort will grow up in a world deeply shaped by artificial intelligence, autonomous transport, and immersive digital experiences. Every aspect of their lives is expected to be enhanced by technology. Demographer Mark McCrindle notes that Gen Beta will be the youngest generation and many will live into the 22nd century. He predicts they will make up about 16% of the global population by 2035 and may influence declining birth rates. Experts believe this generation will mature alongside AI and help guide the future, though they'll also face challenges like rising mis- and disinformation due to political polarization and the blurring line between real and AI-generated content.

   Gen Beta will largely be the children of Millennials and Gen Z, inheriting a world more attuned to global concerns. With parents who prioritize climate change and social equity, Gen Beta is expected to shape its identity around these values. Researcher Jason Dorsey adds that they'll be immersed in smart devices and AI, and will likely experience climate change as a pressing reality with direct impacts on their lives.

Gen Beta will likely grow in closed AC rooms. So, there is no doubt in saying that this generation will be an Indoor generation. Further, the excessive use of advance modern technologies like internet, computer, smart gadgets, machines etc. may impact on the capability of an individual, hence there is an apprehension that this generation may become physically handicapped. Secondly, the excessive use of internet, especially the visit of unwanted sites available there, may distort the mentality of a person. However, one should have to learn to live and move forward with the changing technologies, not only for self-interest but also in the interest of the country as well.

****

विद्या अखिल भारतीय शिक्षा संस्थान की कार्यकारिणी बैठक

विद्या भारती अखिल भारतीय शिक्षा संस्थान की कार्यकारिणी की बैठक अध्यक्ष डॉ.रवीन्द्र कान्हेरे जी की अध्यक्षता में आश्विन कृष्ण पंचमी से सप्तमी वि.सं.२०८२ युगाब्द ५१२७ दिनांक १२ से १४ सितम्बर २०२५ तक आदर्श विद्या मंदिर शंकर विद्यापीठ आबू पर्वत, राजस्थान में हुई। दीप प्रज्वलन एवं माँ सरस्वती की वन्दना से बैठक प्रारम्भ हुई। महामंत्री द्वारा संगठन के दिवंगत कार्यकर्ताओं, समाज के प्रतिष्ठित बंधु-भगिनियों एवं देश के विभिन्न प्रांतों में प्राकृतिक आपदा से स्वर्गवासी नागरिकों को श्रद्धांजलि अर्पित की गई। बैठक में उपस्थित समस्त प्रतिभागियों ने मौन धारण कर दिवंगत आत्माओं की शांति हेतु प्रार्थना की।

प्रास्ताविक उद्बोधन में अखिल भारतीय संगठन मंत्री श्री गोविन्द चन्द महन्त ने कहा कि पूरे देश में औपचारिक और अनौपचारिक सभी प्रकार के शिक्षा केन्द्रों का देशभर में उत्साहवर्धक संचालन हो रहा है। अपना कार्य सर्वस्पर्शी, सर्वव्यापी बने इसका हमें इस बैठक में विचार करना है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति २००० का सुव्यवस्थित कार्यान्वयन, सभी हितधारकों तक इस नीति को पहुँचाने की गति को तेज करना है। संघ के शताब्दी वर्ष के अन्तर्गत निर्धारित कार्य को सम्पन्न करना, चिन्तन बैठक बिलासपुर के करणीय बिन्दुओं का क्रियान्वयन तथा प्रत्येक आयाम को अद्यतन बनाए बनाए रखने का प्रयास हमें निरन्तर करते रहना है। आधारभूत विषयों के पाठ्यक्रम को अद्यतन किया गया है। इसे सभी के प्रयास से प्रत्येक स्तर पर प्रभावी ढंग से लागू किया जाए।

शताब्दी वर्ष के अर्न्तगत पंच परिवर्तन विषय विद्यालय से प्रारम्भ होकर समाज में जाए और इससे सकारात्मक परिवर्तन दिखाई दे। इस हेतु सभी हितधारकों का सहयोग लेते हुए हमारा कार्य शताब्दी वर्ष में और आगे बढ़े ऐसी अपेक्षा है।

मा. डॉ. कृष्णगोपाल जी, सह सरकार्यवाह, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने उद्बोधन में कहा कि -विद्या भारती का कार्य ८६ प्रतिशत जिलों में पहुँच गया है जो एक बड़ा व्याप है। प्रत्येक खण्ड तक कार्य पहुँचे ऐसा प्रयास करना है। लगभग १३ हजार विद्यालय, ४० लाख पूर्वछात्र, डेढ़ दो करोड़ का परिवार है। विशेष प्रकार का संस्कार एवं विचार देश के बड़े समूह तक पहुँच रहा है। प्रत्येक देश का अपना ध्येय है, भारत का विचार आध्यात्मिक है। विश्व में असहिष्णुता दिखाई देती है। यह मन में उत्पन्न विकार है। भोगवाद से दुनिया जूझ रही है। सबको दिशा देने का मार्ग भारत के पास है और यही आध्यात्मिकता है। भारत के सभी मत-पंथ का एक ही विचार है कि ब्रह्म एक है और सभी में व्याप्त है। भारत का अध्यात्म जहाँ जाएगा वहाँ के लोगों में एकत्व का दर्शन करेगा। यह अध्यात्म विद्या भारती के विद्यालयों में है। हम अपने विद्यालयों में अध्यात्म की शिक्षा देने की प्रणाली पर विचार कर सकते हैं। पंचकोश की संकल्पना महत्त्वपूर्ण है। आनन्दमय कोश का विकास अध्यात्म से ही सम्भव है। अध्यात्म के भाव से सभी द्वन्द्व समाप्त हो जाएँगे। स्वामी स्वयं प्रकाश गिरि जी महाराज ने अपने आशीर्वचन में कहा कि मनुष्य अन्य प्राणियों से भिन्न है, यह परमेश्वर का अंग है। धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष चारों पुरुषार्थों को वैदिक संस्कृति में महत्त्व दिया गया है। वेद की भाषा संस्कृत को जाने बिना स्थाई विचार नहीं आ सकते हैं। वेद द्वारा प्रतिपादित धर्म के पालन के बिना हम आध्यात्मिक मार्ग पर चल नहीं सकते। शिक्षा निरन्तर चलने वाली प्रक्रिया है। 'हमारे कार्य की दिशा', 'विद्या भारती लक्ष्य' की संशोधित प्रति, सप्तशक्ति विवरणिका, ज्ञान की बात, 'विद्यालय में पंचकोश', 'द वीमन साईंटिस्ट इण्डियन स्पेश रिसर्च ऑर्गनाइजेशन' पुस्तकों का विमोचन किया गया।

संख्यात्मक जानकारी- प्रांत एवं क्षेत्रानुसार विद्यालय, छात्र एवं आचार्य संख्या की पर विस्तार पूर्वक चर्चा की गई। सत्र २०२५-२६ में कुल औपचारिक विद्यालय संख्या **१२०६८** इनमें छात्र संख्या **३३,३२,७७४** तथा आचार्यों की संख्या **१,५२,६२४** है। अनौपचारिक शिक्षा केन्द्र ४४७४, सरस्वती संस्कार केन्द्रों में के ४४६८ आचार्यों के द्वारा **१,१६,३१०** भैया-बहिन अध्ययनरत हैं।

जिला केन्द्र - जिला केन्द्र के विद्यालय प्रभावी बने इस हेतु वहाँ १० या १२ वीं स्तर के विद्यालय, उत्तम परीक्षा परिणाम, मूल्यांकन, संस्कार केन्द्र, प्रभावी शिशु वाटिका, आधुनिक संसाधन, योग्य प्रधानाचार्य की नियुक्ति, छात्र प्रवेश आदि विषय पर विचार हुआ।

सेवा क्षेत्र की शिक्षा - इस विषय पर विस्तार पूर्वक चर्चा की गई। निर्णय लिया गया कि जिस विद्यालय में १५० छात्र संख्या संख्या है वहाँ एक केन्द्र, ५००-१००० तक संख्या पर ३ केन्द्र और इससे अधिक छात्र संख्या होने वाले विद्यालयों से न्यूनतम ५ संस्कार केन्द्र चलाने की योजना बनाने के लिए विचार हुआ। शताब्दी वर्ष का लक्ष्य ८००० केन्द्र का संचालन करने का तय हुआ।

जनजाति क्षेत्र एवं सीमा क्षेत्र की शिक्षा- देश की सुरक्षा से जुड़ी गतिविधियों व सीमा क्षेत्र की शिक्षा पर विचार-विमर्श हुआ। पंजाब, जम्मू-काश्मीर, पं.बंगाल की स्थिति पर चिंता व्यक्त करते हुए निर्णय लिया गया कि इन प्रांतों में नशा, लालच तथा स्वार्थवश धर्मान्तरण, तस्करी आदि से मुक्ति के लिए प्रयास तथा गुणवत्तापूर्ण शिक्षा देने के लिए संस्कार केन्द्र व एकल विद्यालय स्थापित करना आवश्यक है। इस हेतु देश के सीमा क्षेत्रों में कार्य बढ़ाने का निर्णय सर्वसम्मति से लिया गया।

परीक्षा परिणाम- प्रत्येक प्रांत में परीक्षा परिणामों पर चर्चा करते हुए उनकी समीक्षा की गई। इस सम्बन्ध में पंजाब, राजस्थान, उत्तरप्रदेश, झारखंड, ओड़ीसा व असम के प्रांतीय मंत्रियों ने बताया कि प्रांत के बोर्ड के प्रथम तीन स्थानों पर उनके छात्र आए। इसके अतिरिक्त छत्तीसगढ़, मध्य प्रदेश, हिमाचल, आंध्रप्रदेश, पं.बंगाल एवं उत्तराखंड के भी छात्र-छात्रा प्रथम १० स्थानों में अपना कीर्तिमान बनाया। सी.बी.एस.ई. एवं एस.बी.एस.ई. एवं प्रांत बोर्डों के उत्साहवर्धक परिणामों के साथ १० वीं में ६० प्रतिशत से ऊपर ८.८ प्रतिशत विद्यार्थी तथा ५० प्रतिशत से नीचे २४ प्रतिशत विद्यार्थी उत्तीर्ण रहे।

सप्तशक्ति संगम - संघ के शताब्दी वर्ष में महिलाओं को एकत्रित कर कार्यक्रम करने के उद्देश्य से कार्यक्रम की रूपरेखा, आयोजन पूर्व तैयारी, विषयवस्तु, वक्ताओं का प्रशिक्षण एवं कार्यक्रम का प्रतिफल आदि पर विस्तारपूर्वक चर्चा की गई। बसंत पंचमी २०२६ तक चलने वाले आयोजनों हेतु विस्तार से चर्चा की गई।

विद्वत् परिषद् एवं शोध - समाज के विद्वानों का सहयोग लेते हुए विमर्श, प्रशिक्षण, सामग्री का निर्माण, लेखन का कार्य किया जाना है। गत तीन माह में कुछ प्रांतों में गोष्ठियाँ हुई हैं। शोध कार्य हेतु भी महत्त्वपूर्ण विषयों पर चर्चा की गई।

समूहशः बैठकें- चार समूहों में प्रतिभागियों को विभाजित कर अध्यक्ष, संगठन मंत्री एवं संगठक, मंत्री तथा अखिल भारतीय विषय संयोजकों की अलग-अलग तय स्थानों पर टोली अनुसार बैठक हुई। इनमें प्रत्येक समूह के लिए करणीय कार्य एवं दायित्व पर चर्चा।

विषयशः वृत्त प्रस्तुति - खेल परिषद्, संस्कृति बोध परियोजना, विज्ञान मेला, गणित मेला, अटल टिंकरिंग लैब, पूर्वछात्र आदि विषयों की जानकारी इनके संयोजकों द्वारा पी.पी.टी. माध्यम से अद्यतन जानकारी प्रस्तुत की गई।

आवासीय विद्यालयों की संचालन की मानक प्रक्रिया, पंचपदी शिक्षण पद्धति उसका प्रशिक्षण, आध्यात्मिक शैक्षिक संगठनों से संपर्क, शिक्षा नीति के क्रियान्वयन, मूल्य आधारित शिक्षा प्रदान करने की व्यवस्था, इसके लिए न्यूनतम कार्यक्रमों के आधार पर विचार-विमर्श कर संगोष्ठियाँ करने पर विचार किया गया। राष्ट्रीय शिक्षा नीति क्रियान्वयन हेतु राज्य स्तर पर एससीईआरटी, डाईट आदि के साथ उनके स्टेयरिंग कमेटी के साथ समन्वय कर अधिकतम प्रयास करने पर विचार हुआ।

विद्या भारती उच्च शिक्षा संस्थान - देहादून में नेतृत्व समागम हुआ जिसमें भारतबोध, अनुभूति आदि पर चर्चा कर घोषणा पत्र बनाकर कार्य की दिशा तय की गई। पाँच बिन्दुओं पर विशेष चर्चा हुई जिनमें शिक्षा में गुणवत्ता, शोध-संस्कृति का निर्माण सभी हित धारकों के लिए प्रशिक्षण, कैम्पस विकास, जिसमें अन्य संगठनों की सर्वोत्तम अनुभवों को अपनाना, सामुदायिक सहभागिता हेतु आउट रिच कार्यक्रमों का आयोजन आदि जानकारी प्रतिभागियो को दी गई।

मानक परिषद् - इसके माध्यम से विद्यालयों का आकलन के नवीन संस्करण की जानकारी प्रतिभागियों के सम्मुख रखी गई। जिसमें प्रारम्भिक स्तर, विकासशील स्तर, कुशल स्तर, सम्पूर्ण स्तर व विशिष्ट स्तर तय किए गए। इस आंकलन विवरणिका के आधार पर विद्यालयों का आकलन करने हेतु अद्यतन साफ्टवेयर का उपयोग करने पर विचार-विमर्श हुआ।

प्रचार-प्रसार - प्रचार प्रसार के महत्त्व एवं इसकी आवश्यकता तथा उपयोगिता पर चर्चा करते हुए तय किया गया कि प्रत्येक प्रांत में अभिलेखागार, प्रचार-प्रसार प्रमुख तय किए जाएँ। इसके लिए संवाद केन्द्र गठित किया जाए। इसमें पूर्व छात्रों का योगदान लेने का विचार किया गया।

कौशल विकास - सरकारी पोर्टल सिद्ध पर पंजीकरण करवाना आवश्यक है। सभी विद्यालयों में कौशल विकास के विषय प्रारम्भ किए जाएँ, ऐसा सुनिश्चित योजना बनाई जाए।

अभिभावक सम्पर्क - यह विद्या भारती का महत्त्वपूर्ण विषय है। जिसे राष्ट्रीय शिक्षा नीति में भी स्वीकार किया गया है। प्रांत अनुसार अभिभावक सम्पर्क की जानकारी प्रतिभागियों ने प्रस्तुत करते हुए सम्पर्क योजना एवं उनके सार्थक परिणामों के उदाहरण भी प्रस्तुत किए। चर्चा के बाद कुछ बिन्दु तय किए गए-अभिभावक सम्पर्क में जीवन्तता एवं निरन्तरता होनी चाहिए। सम्पर्क के तीन विषय शिक्षा में परिवर्तन, विचार में परिवर्तन, समाज में परिवर्तन पर कार्य हो। नए आचार्यों को प्रधानाचार्य अपने साथ ले जाकर सम्पर्क करने की पद्धति सिखाएँ। गृह सम्पर्क, कक्षानुसार अभिभावकों की बैठक, साहित्य वितरण, ऑनलाईन परिवार प्रबोधन आदि सम्पर्क में सहायक हो सकते हैं।

समावेशी शिक्षा :- विचार-विमर्श करने के उपरान्त निर्णय लिया गया कि अपने विद्यालयों में सभी मत, पंथ, जनजाति आदि समस्त समुदायों, क्षेत्रों, आर्थिक एवं सामाजिक रूप से पिछड़े-अगड़े, दिव्यांग आदि सभी प्रकार के विद्यार्थियों को शिक्षा एक समान मिले, ऐसे प्रयत्न प्रयास पूर्वक करने से लघु भारत के दर्शन विद्यालय में सम्भव हो सकता है। विद्या भारती के कार्य समाज आधारित है। समयदानी कार्यकर्ताओं की संख्या में वृद्धि की आवश्यकता है, ऐसा विचार किया गया। महीने में १० दिन प्रवास करने वाले कार्यकर्ताओं की संख्या बढ़े तथा विद्यालय में गुणवत्ता बढ़े इस विषय आधारित प्रवास योजना भी बने, ऐसा सभी सदस्यों का मानना है।

समापन सत्र- श्री देशराज शर्मा (अखिल भारतीय महामंत्री) जी ने शंकर विद्यापीठ विद्यालय आबूपर्वत में सम्पन्न हुई बैठक की व्यवस्था करने हेतु क्षेत्रीय संगठन मंत्री के मार्गदर्शन लगे कार्यकर्ताओं, व्यवस्थापकों, विद्यालय के आचार्या-आचार्यों के प्रति आभार प्रकट किए। उन्होंने बतया कि बैठक में कुल ३७ विषयों पर चर्चा १८ घंटे ४५ मिनट में सम्पन्न हुई।

अध्यक्षीय उद्‌बोधन :- श्री रवीन्द्र कान्हेरे, अखिल भारतीय अध्यक्ष महोदय ने बैठक के समापन पर अपने उद्‌बोधन में कहा कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति २०२० में मातृभाषा में शिक्षण की बात कही गई है, इसके लिए हमें अभिभावकों का मार्गदर्शन करने की व्यवस्था करना होगी। मातृभाषा से ही बालकों में सीखने की गति अच्छी व तीव्र हो सकती है अतः हमें अपने कार्य में दृढ़ता से लगे रहना चाहिए। विश्व के किसी भी क्षेत्र में नई खोज होने पर तुरंत अपनी भाषा में अनुवाद हो जाता है। अतः हमें भी शिक्षा में हो रहे बदलाव को अपनी मातृभाषा में अनुवाद कर हमारे बच्चों तक पहुँचे, ऐसा प्रयास हो इससे वे अद्यतन रहेंगे। कार्य विस्तार और गुणवत्ता की आवश्यकता को पूरा करने के लिए शिशु शिक्षा पद्धति को प्रामाणिकता के साथ विद्या भारती के अलावा अन्य विद्यालयों तक विस्तार होना चाहिए। १२ व्यवस्थाओं युक्त पद्धति का सभी शिशु वाटिकाओं में क्रियान्वयन होना चाहिए। जनजाति, सीमा व संवेदनशील क्षेत्रों में अपने कार्य का और अधिक विस्तार करना है। प्रचार-प्रसार विभाग के माध्यम से विद्या भारती के कार्यों को विभिन्न क्षेत्रों में पहुंचाएँ और हर क्षेत्र हमारा मॉडल समाज के समक्ष होना चाहिए। हमारे आचार्यों को एनईपी २०२० के अनुसार शिक्षण विधि में प्रशिक्षण हेतु और अधिक प्रशिक्षक प्रशिक्षण वर्गों के माध्यम से अद्यतन किया जाना चाहिए। शिक्षण में तकनीकी का उपयोग बढ़ाना होगा। समितियों में समाज के सभी वर्गों, महिला आदि का प्रतिनिधित्व बढ़े उन्हें कार्यकर्ता के रूप में सहयोग कर उनका विकास करें।

वन्देमातरम् गायन के साथ ही बैठक सम्पन्न हुई।

विद्या भारती का अखिल भारतीय ताईक्वांडों प्रतियोगिता भूलीनगर (धनबाद) झारखण्ड में सम्पन्न

विद्या भारती उत्तरपूर्व क्षेत्र द्वारा ३६ वीं विद्या भारती अखिल भारतीय ताइक्वांडो प्रतियोगिता का आयोजन दिनांक १२-१४ सितम्बर २०२५ तक विद्या विकास समिति झारखंड के आतिथ्य में सरस्वती विद्या मंदिर भूली नगर, धनबाद में आयोजित हुआ। इस में अंडर १४, अंडर १७ व अंडर १९ श्रेणी में बालक एवं बालिकाओं की प्रतियोगिता हुई जिसमें कुल ७२ स्वर्ण पदक प्राप्त खिलाड़ी स्कूल गेम्स फेडरेशन ऑफ इण्डिया की होने वाली प्रतियोगिता के लिए चयनित हुए। तीन दिन तक चलने वाली इस प्रतियोगिता में पश्चिम उत्तर प्रदेश क्षेत्र की टीम ने सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करते हुए ओवरऑल चैम्पियन का खिताब प्राप्त किया। वहीं उत्तरपूर्व (बिहार-झारखंड) क्षेत्र को द्वितीय और पूर्वोत्तर क्षेत्र को तृतीय स्थान प्राप्त हुआ।

समापन समारोह में विद्या भारती अखिल भारतीय खेलकूद परिषद् के वर्तमान सचिव श्री कृपाशंकर शर्मा मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थे। उन्होंने प्रतिभागियों के समक्ष कहा कि खेलकूद एक साधना है, इसमें जीत उसी की होती है जो अपने खेल को साधना का कार्य समझकर परिश्रम से खेलता है। स्थानीय सांसद ढुल्लू महतो ने कहा कि यह हमारे लिए गर्व की बात है कि झारखंड में अखिल भारतीय ताईक्वांडो प्रतियोगिता सम्पन्न हो रही है। इस आयोजन से क्षेत्र की खेल प्रतिभाओं को अखिल भारतीय मंच पर प्रतिभाग करने का अवसर मिला है। सांसद महोदय ने विजेता खिलाड़ी भैया-बहनों को पदक पहनाकर सम्मानित किया। इसमें देशभर के ५०० खिलाड़ी भैया-बहन, ६२

संरक्षक आचार्य, २२ निर्णायक तथा ११ अखिल भारतीय अधिकारी भी भूलीनगर, धनबाद में पधारे थे। अखिल भारतीय मंत्री श्री ब्रह्माजी राव, क्षेत्रीय संगठन मंत्री श्री ख्यातीराम जी, क्षेत्रीय मंत्री श्री रामअवतार नरसरिया जी तथा पर्यवेक्षक श्री कैलाश जी धनगर, मालवा प्रांत, उत्तरपूर्व क्षेत्र के शारीरिक संयोजक श्री राजेश प्रसाद, प्रांत सचिव श्री नकुल कुमार शर्मा, सुरेश मंडल, नीरज कुमार लाल, रणसुमन सिंह, विवेक नयन पाण्डेय, रंजना सिंह, अखिलेश सिंह आदि उपस्थित रहे।

विद्या भारती अखिल भारतीय संस्कृति मेला, सीतामढ़ी

विद्या भारती अखिल भारतीय शिक्षा संस्थान के द्वारा अखिल भारतीय संस्कृति मेला का आयोजन विद्या भारती संस्कृति शिक्षा संस्थान के तत्त्वावधान में दिनांक ५ से ७ नवम्बर २०२५ तक जगत्जननी माता सीता जी की पावन प्राकट्य स्थली सीतामढ़ी के लक्ष्मणा नदी के तट पर बने सरस्वती विद्या मंदिर रिंगबांध सीतामढ़ी में सम्पन्न हुआ। महोत्सव का शुभारम्भ ५ नवम्बर को वरिष्ठ अधिकारियों एवं आमंत्रित महानुभावों के द्वारा दीप प्रज्वलन से हुआ। अखिल संस्कृति बोध परियोजना के संयोजक श्री दुर्गसिंह राजपुरोहित ने प्रास्ताविक उद्बोधन में कहा कि सम्पूर्ण भारत में विद्या भारती के विद्यालयों में भैया-बहनों को अपने देश की संस्कृति, परम्परा, जीवनमूल्यों पर गर्व हो इसके लिए संस्कृति ज्ञान परीक्षा का हर वर्ष आयोजन होता है। उद्घाटन समारोह में मुख्य अतिथि पूज्य श्री किशोरीशरण मधुकर 'मुठिया बाबा' ने कहा कि यहाँ भारतीय संस्कृति के दर्शन हुए। विद्या भारती द्वारा अपने विद्यालयों में भैया-बहिनों को भारतीय संस्कार, परम्परा, जीवनमूल्यों की भी शिक्षा दी जाती है, यह अत्यन्त प्रशंसनीय है। अखिल भारतीय संगठन मंत्री श्री गोविन्द चन्द्र महंत जी ने बताया कि विद्या भारती शिक्षा के क्षेत्र में विद्यार्थियों को भारतीयता व राष्ट्रीयता से युक्त शिक्षा देने का कार्य कर रही है। विद्या भारती संस्कृति शिक्षा संस्थान के माध्यम से भारतीय संस्कृति के संरक्षण, संवर्धन का कार्य करती है।

इस समारोह की अध्यक्षा श्रीमती साधना भंडारी (उपाध्यक्ष, विद्या भारती) ने भैया-बहनों को विजयी भव का आशीर्वचन देते हुए कहा कि तालियाँ केवल दूसरों के लिए ही नहीं बल्कि अपने लिए भी बजनी चाहिए। अनवरत प्रयास, मेहनत के बल पर आप राष्ट्रीय स्तर के प्रतियोगिता के लिए चयनित हुए हैं। मंच पर माननीय शुकदेव जी महाराज विराजमान थे। विद्यालय के भैया-बहनों के द्वारा माँ जानकी के प्राकट्य एवं सीताराम विवाह से सम्बन्धित मनभावन गीत एवं सुसंस्कृत नृत्य प्रस्तुत किया गया।

संस्कृति महोत्सव में तात्कालिक भाषण, कथा-कथन, संस्कृति ज्ञान प्रश्नमंच की प्रतियोगिता होती है। मूर्ति निर्माण कला की प्रतियोगिता एवं लोक नृत्य का प्रदर्शन होता है। संस्कृति वार्ता में प्रतिभागियों को भारतीय संस्कृति की विशिष्टताओं की जानकारी दी जाती है।

५ एवं ६ नवम्बर २०२५ को संध्याकालीन सत्र में मंच पर लोकनृत्य प्रदर्शन माँ सीताजी की आरती से प्रारम्भ हुआ, अलग -अलग राज्यों से आए नवोदित, प्रतिभावान् कलाकार भैया-बहनों ने भारत की जीवंत संस्कृति, कला परम्परा और विरासत को लोकनृत्य के माध्यम से प्रस्तुत किया जो अत्यन्त मनोहारी व प्रेरक था। इसमें विद्या भारती के ६ क्षेत्रों के प्रतिभावान कलाकारों ने भाग लिया। कार्यक्रम स्थल पर प्रदर्शनी एवं देहाती हाट जिसमें बिहार के खान-पान, हस्तशिल्प, मिथिला चित्रकला, धार्मिक पुस्तकों का संग्रह दर्शनीय था।

समापन समारोह में मुख्य अतिथि श्री कृष्णनन्दन सिंह, एडिशनल सॉलिसिटर जनरल ऑफ इण्डिया, पटना उच्च न्यायालय, मुख्यवक्ता मा.यतीन्द्र कुमार शर्मा जी, अखिल भारतीय सह संगठन मंत्री, डॉ. ललित बिहारी गोस्वामी प्रभारी विद्या भारती संस्कृति शिक्षा संस्थान, श्री कुलवीर कुमार शर्मा, सचिव, विद्या भारती संस्कृति शिक्षा संस्थान, मंच संचालक सुधीर कुमार (प्रबंधक संस्कृति शिक्षा संस्थान, श्री रामलाल सिंह, सचिव, लोक शिक्षा समिति उपस्थित थे। श्री रामलाल सिंह ने महोत्सव का आख्या प्रस्तुत करते हुए कहा कि देशभर से २६३ भैया-बहिन, १११ आचार्य-दीदी इस मेला में सम्मिलित हुए। सम्पूर्ण प्रतियोगिताओं के सम्मिलित रूप में प्रथम स्थान पर उत्तरपूर्व क्षेत्र, द्वितीय स्थान पर पश्चिमी उत्तर प्रदेश व तृतीय स्थान पर पूर्वीउत्तर प्रदेश क्षेत्र रहा।

समापन उद्बोधन में मा. यतीन्द्र कुमार शर्मा अखिल भारतीय सह संगठन मंत्री, विद्या भारती ने कहा कि संस्कृति जीवन जीने एवं जीवन का विषय है। संस्कृति राष्ट्र की आत्मा होती है। संस्कृति संरक्षण हेतु शास्त्र एवं शस्त्र दोनों आवश्यक है। मुख्य अतिथि श्री कृष्णनंदन सिंह ने कहा कि हम सभी भारतवासी को खानपान, पहनावा-ओढ़ावा में अपनी संस्कृति व परम्परा का निवर्हन करना चाहिए। डॉ.ललित बिहारी गोस्वामी ने कहा प्रतियोगिता अपने आप से होनी चाहिए। धन्यवाद ज्ञापन संस्थान के सचिव श्री कुलवीर कुमार शर्मा जी ने किया।

विद्या भारती का अखिल भारतीय गणित मेला

विद्या भारती अखिल भारतीय शिक्षा संस्थान का गणित मेला ०६ से ०९ नवम्बर २०२५, सर्वहितकारी केशव विद्या निकेतन जालन्धर में सम्पन्न हुआ। माँ सरस्वती, ॐ, भारत माता के चित्र के सामने दीप प्रज्वलन एवं पुष्प अर्पित कर उद्घाटन समारोह प्रारम्भ हुआ। कार्यक्रम में अधिकारी परिचय व सम्मान के बाद अखिल भारतीय वैदिक गणित संयोजक श्री देवेन्द्र राव देशमुख ने प्रस्तावना में गणित मेला का उद्देश्य, गत वर्ष सम्पन्न मेला की जानकारी और आगामी कार्ययोजना की जानकारी से प्रतिभागियों एवं अधिकारीगण को अवगत कराया। उन्होंने बताया कि इस मेला में अनेक प्रतियोगिताएँ होंगी जिनमें वैदिक गणित प्रश्नमंच, गणित प्रदर्श, गणित प्रयोग, गणित पत्र प्रस्तुति (भैया-बहन) एवं गणित पत्र प्रस्तुति (आचार्य) हेतु होगी। उद्घाटन सत्र में विद्या भारती के वरिष्ठ अधिकारी मा. गोविन्द चन्द महंत जी (अखिल भारती संगठन मंत्री), मा. देशराज शर्मा जी, (अखिल भारतीय महामंत्री), उत्तर क्षेत्र के संगठन मंत्री मा.विजय नड्डा जी का सान्निध्य प्राप्त हुआ।

मा.गोविन्द चन्द्र महंत जी ने प्रतिभागियों को सम्बोधित करते हुए कहा कि आनन्द का विषय है सभी ११ क्षेत्र इस कार्यक्रम में उपस्थित हैं। भारतीय ज्ञान परम्परा के संवर्धन हेतु विद्या भारती प्रारम्भ से ही कार्य कर रही है। प्रतियोगिता में हमारे ज्ञान का परीक्षण व प्रतिभा को परखने तथा निखारने का अवसर मिलता है। दुनिया में भारतीय ज्ञान, वैदिक गणित को स्थापित करने प्रयास हो रहा है। गणित मेला में गणित की उज्ज्वल परम्परा की प्रत्यक्ष जानकारी मिलती है। अपने अलावा अनेक विद्यालय भी हमारे द्वारा चलाए जा रहे विषय को अपने पाठ्यक्रम में ले रहे हैं।

मा.देशराज जी शर्मा, महामंत्री विद्या भारती ने अपने उद्बोधन में प्रतिभागियों को प्रेरित करते हुए कहा कि यहाँ विद्या भारती, विराट संस्थान के हम सभी विद्यार्थी गणित मेला में प्रतिभागी हैं। अपने पूर्वछात्र श्री उपेन्द्र द्विवेदी वर्तमान में भारत के थल सेनाध्यक्ष हैं, हमारे लिए गर्व का विषय है। विद्या भारती के विद्यार्थी शासकीय बोर्ड परीक्षा में कीर्तिमान स्थापित करते हुए शीर्ष पर रहते हैं। भारतीय जीवन पद्धति जीवन को समझने की दृष्टि देती है। शिक्षाविदों का मत है कि प्राथमिक शिक्षा अपनी मातृभाषा में होनी चाहिए। आपस में विचार, तर्क करने से समस्या के समाधान का उपाय मिलता है। गणित विवेक सीखाने का विषय है। वैदिक गणित प्रतियोगी परीक्षाओं हेतु शिक्षण के लिए अत्यंत उपयोगी है। विद्यार्थी को सदैव नवीन विषय सीखने की प्रक्रिया जारी रखनी चाहिए।

गणित वार्ता : भारत में गणित की उज्ज्वल परम्परा विषय पर प्रो.अमरबर खटुआ (ओड़ीसा) का प्रबोधन मिला। सांस्कृतिक कार्यक्रम में पंजाबी संस्कृति से सराबोर गिद्दा, भांगड़ा नृत्य तथा भारतनाट्यम व रामकथा का प्रभावी रंगमंचीय कार्यक्रम की प्रस्तुति प्रतिभागियों एवं अधिकारियों के समक्ष हुई।

उद्घाटन समारोह से एक दिन पहले पत्रकार वार्ता हुई जिसमें नगर के १० पत्रकार बंधु-भगिनी उपस्थित रहे। विद्यालय के प्रचार-प्रसार विभाग सूचना तकनीकी का प्रयोग कर कार्यक्रम का प्रभावी प्रसारण प्रतिदिन करता रहा।

इस मेला में देशभर से क्षेत्रीय स्तर पर प्रथम स्थान प्राप्त १४७ भैया, ६६ बहनें, ६८ संरक्षक, १४ विषय संयोजक एवं ४ अखिल भारतीय व क्षेत्रीय अधिकारी समेत मिलाकर कुल ३२६ की उपस्थिति रही।

प्रतियोगिताओं में कठिन प्रश्नों का समाधान कर विजेता बने भैया-बहिनों का परिणाम इस प्रकार है - प्रथम स्थान-पश्चिमी उत्तर प्रदेश, द्वितीय स्थान-उत्तर क्षेत्र एवं पूर्व क्षेत्र तथा तृतीय स्थान पूर्वी उत्तर प्रदेश एवं दक्षिण मध्यक्षेत्र ने प्राप्त किया।इस मेला में विद्यालय का प्रबंधन वर्ग, प्राचार्य, आचार्य परिवार एवं सहायक कार्यकर्ताओं ने कार्यक्रम की व्यवस्था सम्बन्धी गतिविधियों में उल्लासपूर्वक भाग लिए। समापन में श्री देवेन्द्र राव देशमुख ने प्रतिभागियों, अधिकारियों, व्यवस्था में लगे सभी बंधु-भगनियों के प्रति धन्यवाद ज्ञापन के साथ ही आभार व्यक्त किए। वंदे मातरम् के गायन के साथ कार्यक्रम सानन्द सम्पन्न हुआ।

विद्या भारती अखिल भारतीय विज्ञान मेला २०२५, मेरठ

विद्या भारती अखिल भारतीय शिक्षा संस्थान द्वारा आयोजित २३ वाँ अखिल भारतीय विज्ञान मेला बालेराम ब्रजभूषण सरस्वती शिशु विद्या मंदिर वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, शास्त्री नगर मेरठ, उ.प्र.में दिनांक १३ नवम्बर २०२५ को प्रारम्भ हुआ। उद्घाटन सत्र में मुख्य

वक्ता राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सह सरकार्यवाह डॉ. कृष्णगोपाल जी, मुख्य अतिथि के नाते उत्तर प्रदेश शासन के उप-मुख्य मंत्री श्री ब्रजेश जी पाठक, अध्यक्षता श्री रवीन्द्र कान्हेरे जी, अखिल भारतीय अध्यक्ष, विद्या भारती अ. भा. शिक्षा संस्थान, सान्निध्य श्रीमान् गोविन्द चन्द्र महंत, अखिल भारतीय संगठनमंत्री, विद्या भारती एवं श्री कमल किशोर सिन्हा, अ. भा. मंत्री, विद्या भारती, अतिविशिष्ट अतिथि श्री सोमेन्द्र तोमर जी, ऊर्जा मंत्री, उत्तर प्रदेश सरकार, विशेष आमंत्रित अतिथि श्री वरुण अग्रवाल, एडिको कंपनी के मैनेजिंग डायरेक्टर, श्री डोमश्वर साहु जी, क्षेत्रीय संगठन मंत्री, पश्चिमी उत्तर प्रदेश क्षेत्र, श्री प्रदीप जी, प्रांत संगठन मंत्री मेरठ प्रांत समारोह की शोभा बढ़ा रहे थे।

विज्ञान वार्ता में विज्ञान के प्रसिद्ध वैज्ञानिक, विद्या भारती के पूर्व छात्र डॉक्टर चन्द्र मोहन नौटियाल ने विद्यार्थियों के साथ परस्पर वार्तालाप में विज्ञान सम्बन्धी जानकारियाँ साझा की। प्रश्नोत्तर में उन्होंने बच्चों के जिज्ञासाओं के समुचित समाधान किए। उन्होंने विज्ञान की बारिकियों से प्रतिभागियों को सरल ढंग से अवगत करवाया।

इस मेले में हर वर्ष की भाँति इस वर्ष भी विज्ञान प्रश्नमंच, विज्ञान प्रयोग, विज्ञान पेपर प्रजेन्टेशन की प्रतियोगिताएँ हुईं। विज्ञान मॉडल मुख्यतः पर्यावरण संरक्षण, नवीनीकरणीय ऊर्जा, ए.आई. तकनीकी, बायोनिक हैंड, डिजिटल फ्यूल कैप, कैन, ई.एम.व्हीकल स्टॉपर आदि विषयों पर प्रस्तुत किया गया। इसमें प्रतिभागियों ने अपनी कर्मठ परिश्रम व कार्यक्षमता का उचित प्रयोग कर श्रेष्ठ प्रतिभा के द्वारा यथायोग्य स्थान प्राप्त किए।

स्थानीय विद्यालय के विद्यार्थियों द्वारा प्रस्तुत किए गए भव्य सांस्कृतिक कार्यक्रम ने सभी आगन्तुक अतिथियों व दर्शकों का मन मोह लिया, वे भावविभोर हो गए थे।

दिनांक १६ नवम्बर को समापन समारोह में मुख्य अतिथि उत्तर प्रदेश सरकार के विज्ञान एवं प्रायौगिकी मंत्री श्री अनिल कुमार जी, कार्यक्रम के अध्यक्ष श्री मयंक अग्रवाल जी, प्रतिकुलपति आई. आई.एम.टी. मेरठ, विशिष्ट अतिथि श्री अमित अग्रवाल, विधायक मेरठ कैन्ट की गरीमामयी उपस्थिति रही।

इस कार्यक्रम का प्रतिवेदन प्रस्तुत करते श्री नगेन्द्र पाण्डेय जी ने बताया कि इस मेले में देशभर से १५० भैया, १४६ बहनें कुल २९६ बाल वैज्ञानिक भैया-बहनें व ११२ निर्णायक, १९ क्षेत्रीय अधिकारीगण एवं १३६ संरक्षक आचार्यों ने भाग लिया। प्रतियोगिता के परिणाम में सर्वश्रेष्ठ क्षेत्र उत्तरक्षेत्र, द्वितीय पश्चिम उत्तर प्रदेश एवं तृतीय स्थान पर पूर्वी उत्तर प्रदेश क्षेत्र रहा। कार्यक्रम का संचालन श्री जगवीर शर्मा ने किया। विद्यालय के प्रबंध समिति के सभी सदस्य, विद्यालय के प्रधानाचार्य श्री कृष्ण कुमार शर्मा जी, विद्यालय के आचार्य बंधु-भगिनी का कार्यक्रम को सफल बनाने में अतुलीय योगदान रहा।

विद्या भारती ३६ वाँ खेलकूद (एथलेटिक) समारोह

विद्या भारती अखिल भारतीय शिक्षा संस्थान का ३६ वाँ अखिल भारतीय (एथलेटिक) खेलकूद समारोह दिनांक ३१ अक्टबर से ०४ नवम्बर २०२५ तक मंगलोर पब्लिक स्कूल, मंगलोर केन्द्रीय विद्यालय एवं मंगलोर इंगलिस मीडियम स्कूल हासन के संयुक्त तत्त्वावधान में सम्पन्न हुआ।

उद्घाटन समारोह सायं ४ बजे, ०१ नवम्बर २०२५ को हासन जिला स्टेडियम में श्री सोमशेखर शिवाचार्य स्वामी जी, श्रीक्षेत्र पुष्पागिरि मठ, हालेबीदु एवं श्री एच.पी.स्वरूप प्रकाश, विधायक हासन तथा श्री लक्ष्मीकान्त, सचिव रंगनाथ विद्या समस्त व अध्यक्ष, गिद्दाम्मा देवी चेरिटेबल ट्रस्ट के द्वारा माँ सरस्वती, ऊँ, भारतमाता के चित्र के समक्ष दीप प्रज्वलन एवं पुष्प अर्पण कर प्रारम्भ हुआ।

कार्यक्रम की संकल्पना एवं प्रास्ताविक उद्बोधन श्री मुखतेज सिंह बदेशा, अखिल भारतीय संयोजक खेल परिषद्, विद्या भारती अखिल भारतीय शिक्षा संस्थान के द्वारा गत वर्ष में एस.जी.एफ.आई. के खेलकूद के उलब्धियों एवं इस वर्ष होने वाली खेलकूद स्पर्धा की जानकारी दी गई।

सभी क्षेत्रों से आए हुए खिलाड़ी भैया-बहन एवं टोली प्रमुख अपने क्षेत्र के ध्वज समेत अभिवादन संचलन में भाग लिए। मंच के समाने से अधिकारियों का अभिवादन करते हुए खिलाड़ी अनुशासनबद्ध होकर अपने तय स्थान पर पहुँचे। स्थानीय विद्यालयों के विद्यार्थियों के द्वारा

स्थानीय वेशभूषा में रंगारंग सांस्कृतिक प्रस्तुति दी गई।

दिनांक २ नवम्बर से ३ नवम्बर तक पूर्वनिर्धारित खेल की विभिन्न प्रतियोगिताएँ सम्पन्न हुईं। दौड़, सम्बीकूद, ऊँचीकूद, गोला फेंक, भाला फेंक, रिले रेस आदि स्पर्धाओं में १४ वर्ष से कम, १७ वर्ष से कम एवं १९ वर्ष से कम आयुवर्ग के भैया-बहिनों ने भाग लिया। खेलों में अनुशासन बनाए रखने हेतु सबसे अनुशासित क्षेत्र के लिए पूर्वोत्तर प्रथम, राजस्थान द्वितीय एवं पूर्वीउत्तर प्रदेश क्षेत्र को तृतीय स्थान हेतु पुरस्कृत किया गया। अभिवादन संचलन में पूर्वी उत्तर प्रदेश प्रथम, राजस्थान द्वितीय एवं मध्य क्षेत्र तृतीय रहा। वंदना प्रतियोगिता में पूर्वोत्तर प्रथम, पूर्वी उत्तरप्रदेश द्वितीय तथा मध्य क्षेत्र तृतीय स्थान पर रहा। वार्षिक गीत प्रतियोगिता में पूर्वी उत्तर प्रदेश प्रथम, राजस्थान द्वितीय एवं मध्यक्षेत्र तृतीय स्थान प्राप्त किया। स्पर्धाओं के सम्पन्न होने पर पूर्वी उत्तर प्रदेश क्षेत्र, सर्वश्रेष्ठ क्षेत्र का पुरस्कार प्राप्त किया।

श्री परमेश्वर हेगड़े की अध्यक्षता में समापन समारोह हुआ, इसमें मा.श्री यतीन्द्र कुमार शर्मा अखिल भारतीय सह संगठन मंत्री, श्री देशराज जी शर्मा, अखिल भारतीय महामंत्री, श्री श्रीराम आरावकर जी, अखिल भारतीय सह संगठन मंत्री, श्री हेमचन्द्र जी प्रभारी अखिल भारती खेलकूद विभाग, श्री चन्द्रराज जैन सचिव विद्या भारती कर्नाटक जिला हासन, मंगलोर शिक्षा एवं चेरिटेबल न्यास के प्रधान ने प्रतिभागियों का उत्साहवर्धन किया। इस समारोह में देशभर ४०० भैया, ३६८ बहनें कुल खिलाड़ी प्रतिभागियो की संख्या ७६८ रही। खेलकूद में ६४ निर्णायक, २० अधिकारी, ११४ संरक्षक आचार्य, ७९ संरक्षक आचार्या एवं १५० लोग व्यवस्था हेतु दिन-रात लगे रहे। इन सबको मिलाकर १२२५ लोगों की उपस्थिति रही।

विद्या भारती की शोध विषय की अखिल भारतीय बैठक, लखनऊ

दिनांक २९-३० नवम्बर २०२५ को भारतीय शिक्षा शोध संस्थान, सरस्वती कुंज निराला नगर, लखनऊ में विद्या भारती की दो दिवसीय शोध विषय की अखिल भारतीय बैठक सम्पन्न हुई। बैठक का मुख्य उद्देश्य विद्या भारती के व्यापक शैक्षिक तंत्र में शोध को एक संगठित, प्रमाणाधारित और भविष्यदर्शी आधार प्रदान करना है।

उद्घाटन सत्र दीपप्रज्वलन एवं सरस्वती वंदना से प्रारम्भ हुआ। इस सत्र में विद्या भारती के अखिल भारतीय संगठन मंत्री गोविन्द चन्द्र महंत, श्री रवीन्द्र कान्हेरे, अखिल भारतीय अध्यक्ष, विद्या भारती, शोध संयोजक श्री नंदिनी लक्ष्मीकान्त जी, क्षेत्रीय संगठन मंत्री श्री हेमचन्द्र जी, क्षेत्रीय मंत्री प्रो. सौरभ मालवीय जी, शोध संस्थान के मंत्री श्री विजय शर्मा की उपस्थित उल्लेखनीय है। श्री सौरभ मालवीय ने बैठक की प्रस्तावना में शोध की दिशा, उसकी आवश्यकता और विद्या भारती की शैक्षिक दृष्टि में शोध की भूमिका पर प्रकाश डाला।

श्री गोविन्द चन्द्र महंत जी ने शोध की वर्तमान स्थिति, उसकी संगठनात्मक भूमिका और आने वाले वर्षों में शोध की दिशा पर गहन विचार व्यक्त किए। उन्होंने कहा कि शोध के लिए 'भारतीय शिक्षा शोध संस्थान' में एक स्वतंत्र और समर्पित विभाग है। अब आवश्यकता इस बात की है कि प्रत्येक प्रांत अपने-अपने संदर्भों में शोध की दिशा तय करे, शोध के विषय को पहचाने और इस प्रक्रिया को सतत प्रवाह में लाए। शोध निरंतरता का विषय है, इसके अभाव में नवाचार रुक जाता है। उन्होंने 'ओड़िसा मॉडल' का उल्लेख किया। वहाँ पर विभिन्न विश्वविद्यालयों के सहयोग से अब तक १६ शोध पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं। अनेक वर्षों से शोध संगोष्ठियों तथा सेमिनारों का क्रम निरन्तर चल रहा है। सही एवं गुणवत्तापूर्ण शिक्षा विश्व की आवश्यकता है परन्तु उसके बारे में विचार करना होगा। आदरणीया नंदिनी लक्ष्मीकांत ने अपने वक्तव्य में शोध की वास्तविक भूमिका, स्वरूप और आवश्यकता पर अत्यन्त उपयोगी विचार प्रस्तुत किए। डॉ. सुबोध, निदेशक, शोध, संस्थान में चल रहे विविध शोध-उद्यमों जैसे शोध प्रकल्प, सम्मेलन एवं संगोष्ठियाँ, प्रकाशन कार्य, समृद्ध शोध ग्रंथालय, मनोवैज्ञानिक प्रयोगशाला एवं कम्प्यूटर लैब का विस्तृत विवरण दिया। और इनके उपयोग के सम्भावनाओं पर प्रकाश डाला।

समूह गतिविधियों के अन्तर्गत ४२ प्रतिभागियों को पाँच समूहों में विभाजित किया गया। प्रत्येक समूह को चार शोध विषय School Management, Action Research Areas in schools, Student Well-being & Teacher Well-being। श्री रवीन्द्र कान्हेरे, अखिल भारतीय अध्यक्ष ने समापन में पाथेय के रूप में कहा कि शोध का प्रकाशन मात्र औपचारिकता नहीं है, बल्कि भारतीय ज्ञान परम्परा को पुनर्स्थापित करने, उसे प्रमाणित करने और उसे राष्ट्रीय एवं वैश्विक मंचों पर सम्मानित स्वरूप में प्रस्तुत करने का प्रभावी माध्यम है। इस बैठक में ११ क्षेत्रों से ४२ प्रतिभागी उपस्थित रहे। वन्देमातरम् गायन के साथ बैठक सम्पन्न हुई।

विद्या भारती झारखंड प्रांत के भूलीनगर में ३६ वां अखिल भारतीय खेलकूद समारोह में ताइक्वांडो का प्रदर्शन करते प्रतिभागी

विद्या भारती संस्कृति शिक्षा संस्थान द्वारा सीतामढ़ी (बिहार) में आयोजित अखिल भारतीय संस्कृति महोत्सव में उद्घाटन सत्र में अधिकारी वृन्द

अखिल भारतीय खेलकूद(एथेलेटिक्स) समारोह २०२५, हासन कर्नाटक में सर्वश्रेष्ठ क्षेत्र की विजेता ट्राफी के साथ पूर्वी उत्तर प्रदेश क्षेत्र

ISSN 2395 - 6267 कुल प्रकाशित पृष्ठ 68 PRGI NO. 37111/1981

चिरंजीवी बसंत

यह जो लिखा हूँ उसे बड़े होकर और बूढ़े होने पर भी पढ़ना, मैं अपने जीवन के अनुभव की बात कहता हूँ -

संसार में मनुष्य जन्म दुर्लभ है और मनुष्य जन्म पाकर जिसने शरीर का दुरुपयोग किया वह पशु है, तुम्हारे पास धन, तन्दुरुस्ती और अच्छे साधन हैं उनको सेवा के लिए उपयोग किया तब तो जीवन सफल है अन्यथा वे शैतान के औजार हैं। तुम इन बातों को ध्यान में रखना।

धन का मौज, शौक में कभी उपयोग न करना। ऐसा नहीं है कि धन सदा रहेगा ही, इसलिए जितने दिन पास में है उसका उपयोग सेवा के लिए करो, अपने ऊपर कम से कम खर्च करो बाकी जनकल्याण और दुखियों का दुःख दूर करने में व्यय करो।

धन शक्ति है, इस शक्ति के नशे में किसी के साथ अन्याय हो जाना सम्भव है। अतः इसका ध्यान रखो कि अपने धन का उपयोग करते हुए किसी पर अन्याय न हो।

अपनी संतान के लिए यह उपदेश छोड़कर जाओ, यदि बच्चे मौज, शौक, ऐशो आराम वाले होंगे तो पाप करेंगे और हमारे व्यापार को चौपट करेंगे।

ऐसे नालायकों को धन कभी न देना, उनके हाथ में जाए उससे पहले ही जनकल्याण के किसी काम में लगा देना या गरीबों की सेवा में बाँट देना। तुम अपने मन के अंधेपन से, संतान के मोह में, स्वार्थ के लिए उपयोग नहीं कर सकते।

हम भाइयों ने अपार मेहनत से व्यापार को बढ़ाया है। इसे समझकर वे लोग धन का सदुपयोग करेंगे। भगवान् को कभी नहीं भूलना। वह अच्छी बुद्धि देता है, इन्द्रियों पर काबू रखना वरना यह तुम्हें डूबो देंगी।

नित्य, नियम से व्यायाम, योग करना। स्वास्थ्य ही सबसे बड़ी सम्पदा है। स्वास्थ्य से कार्य में कुशलता आती है, कार्यकुशलता से कार्य की सिद्धि होती है और कार्यसिद्धि से समृद्धि आती है।

सुख समृद्धि के लिए स्वस्थ रहना ही पहली शर्त है। मैंने देखा है कि स्वास्थ्य सम्पदा से रहित होने पर करोड़ों-अरबों के स्वामी भी कैसे दीन-हीन बनकर रह जाते हैं। स्वास्थ्य के अभाव में सुख-साधनों का कोई मूल्य नहीं। इस सम्पदा की रक्षा का उपाय हर प्रकार से करना। भोजन को दवा समझकर करना। स्वाद के वश में होकर खाते मत रहना। जीने के लिए भोजन है न कि भोजन के जीना।

- घनश्यामदास बिड़ला

(श्री घनश्यामदास बिड़ला का पुत्र बसंत कुमार बिड़ला के नाम १९३४ में लिखा एक प्रेरक और मार्मिक पत्र।)

प्रकाशक श्रीराम आरावकर एवं मुद्रक श्री रंजीत सभानी के द्वारा विद्या भारती अखिल भारतीय शिक्षा संस्थान (स्वामी) के लिए जेनिसिस प्रिंटर, सी 74, ओखला इण्डस्ट्रीयल एरिया, फेस–1, नई दिल्ली–110020 (प्रेस) से मुद्रित एवं प्रज्ञा सदन, जी.एल.टी. सरस्वती बाल मंदिर परिसर, नेहरू नगर, नई दिल्ली–110065 (प्रकाशन स्थल) से प्रकाशित।
सम्पादक– श्री ललित बिहारी गोस्वामी